RNI No.: MPHIN/2018/77137

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी का प्रकाशन

# पाठशाला

## भीतर और बाहर

Azim Premji University

ISSN 2582-483X

अंक 26 | दिसम्बर 2025 | तिमाही

## प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा विशेषांक

# पाठशाला
## भीतर और बाहर
**दिसम्बर 2025 | अंक 26**



### सम्पादकीय टीम
प्रतिभा कटियार (मुख्य सम्पादक)
शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (सह सम्पादक)
गौतम पाण्डेय
सुनील कुमार साह
जगमोहन सिंह कठैत
दशरथ पारीक
सिद्धार्थ कुमार जैन
रजनी द्विवेदी
कमलेश जोशी
राघवेंद्र हेर्ले
pathshala@apu.edu.in



### प्रकाशन कार्यालय
अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज
बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा
बेंगलूरु, कर्नाटक-562125
publication@apu.edu.in



### डिज़ाइन
डिज़ाइन टीम : अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
फ़ोटो : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन आर्काइव्ज़, लेखक
आवरण चित्र : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

### प्रकाशन टीम
मीरा प्रभु, शाहनाज़ बेगम,
लोकराम वी जी, संबित महापात्र

### अनुवाद सम्पादक
मधुकर एस पुट्टी (कन्नड़)
राजेश उत्साही (हिन्दी)
शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (अँग्रेज़ी)

### लेआउट
गणेश ग्राफ़िक्स
भोपाल, मध्य प्रदेश

### प्रिंटिंग
लक्ष्मी मुद्रणालय
बेंगलूरु, कर्नाटक

### प्रूफ़रीडिंग
अतुल अग्रवाल
भोपाल, मध्य प्रदेश


*पाठशाला भीतर और बाहर* अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी द्वारा स्कूली शिक्षा को केन्द्र में रखकर प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका है। पत्रिका का उद्देश्य देश भर के पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों तक अभ्यास-आधारित सामग्री पहुँचाकर उनका सहयोग करना है। यह एक मंच है *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एनसीएफ़-एसई* और *एनसीएफ़-एफ़एस* के आलोक में शिक्षकों के अनुभवों, प्रभावी शिक्षण प्रक्रियाओं की साझेदारी का। *पाठशाला* मूलतः हिन्दी में, फिर अँग्रेज़ी और कन्नड़ में अनुवादित होकर प्रकाशित होती है।


* लेखों में व्यक्त विचार और दृष्टिकोण लेखकों के अपने हैं, उनसे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
* इस पत्रिका के सभी लेख क्रिएटिव कॉमन्स-एट्रिब्यूशन-नॉन-कमर्शियल 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस के तहत लाइसेंस प्राप्त हैं। हमारे लेखों को फिर से प्रकाशित करने के लिए, कृपया हमें लिखें।
* विद्यार्थियों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए पत्रिका में उनके नाम बदल दिए गए हैं।

# सम्पादकीय

प्रारम्भिक बाल्यावस्था जीवन भर सीखने और विकास की बुनियाद है, और यह अवस्था वयस्क जीवन की गुणवत्ता की एक प्रमुख निर्धारक है। यह समय बच्चे के सीखने का सबसे ज़रूरी समय होता है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में इस बात की गहराई को समझा गया, और रेखांकित किया कि बच्चे सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब सीखने के केन्द्र में विविध प्रकार के खेल एवं गतिविधियाँ होती हैं; उनका सम्मान किया जाता है एवं उन्हें महत्त्व दिया जाता है; साथ ही सीखने की प्रक्रिया में उन्हें पूरी तरह शामिल किया जाता है।

इसके लिए ज़रूरी है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था के दौरान बच्चों को सुरक्षित और अपनेपन का एहसास व माहौल मिले। यह तभी सम्भव होता है जब प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा से जुड़े शिक्षक (Pre-School), आँगनवाड़ी से जुड़े सभी लोगों–चाहे वे सुपरवाइज़र हों, आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री हों या सहायिका–को आँगनवाड़ी कार्यक्रम के उद्देश्यों और उसमें अपनी भूमिका की ठीक-ठीक समझ हो। उन्हें स्पष्टता हो कि बच्चों के साथ किस तरह के खेल हों, किस तरह का संवाद हो, किस तरह की गतिविधियाँ हों। आँगनवाड़ी केन्द्र के साथ समुदाय का जुड़ाव भी एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है ताकि सीखने और समझने का जो सिरा बच्चे आँगनवाड़ी में थामें, घर जाने के बाद भी वह सिरा उनसे छूटे नहीं। यही वजह है कि *पाठशाला भीतर और बाहर* का यह दिसम्बर अंक 'प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा' पर केन्द्रित है।

इस अंक में आप पढ़ेंगे कि आँगनवाड़ी केन्द्रों के वातावरण का आनन्ददायक होना क्यों ज़रूरी है, और इसका सीखने पर किस तरह का प्रभाव पड़ता है। यहाँ आने वाले विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की मुश्किलों को किस तरह पहचानें, उनके लिए कैसे अलग से कार्ययोजनाएँ बनाएँ। एक लेख में आप पढ़ेंगे कि संवाद और संवेदना सीखने के लिए कितने ज़रूरी कारक हैं। बाल मेले की अवधारणा और अनुभवों से रू-ब-रू कराता लेख निश्चित ही आपको उपयोगी लगेगा। आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को सहयोग करने का तंत्र भी मज़बूत होना ज़रूरी है, इससे जुड़े अनुभवों पर आधारित लेख भी इस अंक में शामिल हैं। इसके अलावा, हमेशा की तरह स्थाई स्तम्भ में आप पढ़ेंगे 'उम्मीद जगाते शिक्षक' की कहानी, कुछ 'शिक्षकों की डायरी' में दर्ज उनके अनुभव, पूर्व प्राथमिक के लिए उपयोगी किताबों के बारे में, साथ ही कुछ गतिविधियाँ भी।

हमें लगातार मिल रही आपकी प्रतिक्रियाओं से पता चल रहा है कि *पाठशाला* के पिछले 25वें अंक का उपयोग आप सभी कक्षा में बख़ूबी कर पा रहे हैं। यह जानना सुखद है। उम्मीद है प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर केन्द्रित यह अंक भी आपको उपयोगी लगेगा।

हमेशा की तरह पढ़ते रहिए, जुड़े रहिए!

शुभकामनाओं सहित

प्रतिभा कटियार
मुख्य सम्पादक

# अनुक्रम

## सम्पादकीय


1. प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा : एक वैचारिक खोज 3
किन्नरी पंड्या

2. आँगनवाड़ी केन्द्रों का वातावरण आनन्ददायक होना ज़रूरी 8
सुनील कुमार साह

3. प्रारम्भिक बाल्यावस्था के शिक्षकों द्वारा अकसर पूछे जाने वाले प्रश्न 11
जिगिशा शास्त्री

4. शिक्षा की शुरुआत और नाटक 15
पारुल बत्रा दुग्गल

5. प्रारम्भिक बाल्यावस्था की जगहों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे 19
भुवनेश्वरी बी

6. आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री की मदद के लिए सहयोगी तंत्र की भूमिका 23
श्रेष्ठा मिश्रा और रजत शर्मा

7. वो जादुई साठ सेकेंड 27
कल्पना पँवार

8. उपस्थिति चार्ट के माध्यम से सीखना 30
स्वप्नाली चव्हाण

9. प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में गति नियोजन 33
भावना नायक

10. बाल मेला : एक सामुदायिक कार्यक्रम ने नज़रिए को कैसे बदला ? 36
जे विमला

11. बच्चों से मैंने यह सब सीखा 40
तरन्नुम निशा


## स्थाई स्तम्भ


1. शिक्षकों की डायरी से 43
मुन्नी डहरिया, रेखा बी, संध्यावाली गुप्ता

2. उम्मीद जगाते शिक्षक – सुनीता सिंह 47
निवेदिता तिवारी

3. किताबों से दोस्ती 51
गरिमा गुप्ता, कमलेश चन्द्र जोशी

4. आइए, करके देखें 54

5. सम्पादक के नाम 57

# प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा : एक वैचारिक खोज

किन्नरी पंड्या

छोटे बच्चों के लिए शिक्षा का अर्थ है कि दुनिया से जुड़ने में उनकी मदद की जाए, और एक सतत प्रक्रिया के रूप में उन्हें स्वयं इसका अर्थ समझने में सक्षम बनाया जाए। इस लेख में आप पढ़ेंगे कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वह *'सीखना कैसे सीखा जाए'*, इसे सीखने के कौशल के रूप में विकसित करने में बच्चों की मदद करे।

चित्र 1 : प्रारम्भिक बाल्यावस्था के बच्चों का खेल-खेल में सीखने का अलग ही महत्त्व है

मानव विकास पर हुए शोध से पता चलता है कि प्रारम्भिक वर्ष, विशेष रूप से शुरुआती 8 वर्ष की आयु का समय, जीवन का सबसे प्रभावशाली समय होता है। इन वर्षों में बच्चे को जो भी अनुभव मिलते हैं, चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक, उन सभी का उसके आने वाले जीवन के अनुभवों और परिणाम से सीधा सम्बन्ध होता है। यह अनुभव व परिणाम कई रूपों में हो सकते हैं, जैसे–

- सम्पूर्ण स्वास्थ्य और वृद्धि के सूचक के रूप में;
- दिमाग़ की क्षमता के बेहतर (optimal) विकास के रूप में;
- घर के बाहर की दुनिया से सामाजिक व भावनात्मक स्तर पर जुड़ाव बनाने की तैयारी के रूप में; या
- अपने परिवेश को समझने के लिए ज़रूरी ज्ञान और क्षमता / कौशल हासिल करने के रूप में; या
- विद्यालयी शिक्षा पूरी करने और क्रियाशीलता की क्षमता के रूप में।

जीवन में प्रारम्भिक वर्षों के महत्त्व को ध्यान में रखते यह समझना ज़रूरी है कि 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा मिलनी चाहिए; उन्हें किस तरह के सीखने के मौक़े मिलने चाहिए; और उनके लिए 'शिक्षण अधिगम' का सबसे अच्छा तरीक़ा क्या होना चाहिए; आदि। इस विषय पर कई अलग–अलग विचार रहे हैं। कभी–कभी ये विचार अस्पष्ट भी रहे हैं। उदाहरण

> **यह याद रखना ज़रूरी है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) का प्रारम्भिक बिन्दु और अन्तिम लक्ष्य 'विकासशील बच्चा' है, न कि विषयवस्तु।**

के लिए, क्या इस आयु वर्ग के बच्चों को घर पर आज़ादी से खेलने देना चाहिए; या उन्हें जल्द-से-जल्द तीन आर (R) यानी पढ़ना (Reading), लिखना (wRiting) और अंक गणित (aRithmetic) की संक्रियाएँ सिखा देनी चाहिए।

लेकिन दुर्भाग्य से, इनमें से कोई भी विचार इस बात पर ध्यान नहीं देता कि 3 से 6 आयु वर्ग के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा यानी (ECE- Early Childhood Education) कैसी होनी चाहिए। आइए, समझने की कोशिश करें कि इन प्रारम्भिक वर्षों में 'शिक्षा' में कौन-कौन सी बातें शामिल हो सकती है?

## प्रारम्भिक शिक्षा का फ़ोकस

3 से 6 आयु वर्ग की शिक्षा में शामिल की जाने वाली बातों को समझने के लिए यह याद रखना ज़रूरी है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा का प्रारम्भिक बिन्दु और अन्तिम लक्ष्य 'विकासशील बच्चा' है, न कि 'विषयवस्तु'। सही वातावरण और सहयोग से बनी पढ़ने-लिखने और गणित में कुशलता, बाद के विद्यालयी विषयों की बुनियाद होती है।

प्रारम्भिक वर्षों (3-6 वर्ष) में शिक्षा तीन पहलुओं पर केन्द्रित होती है :

1. अच्छी तरह से 'विकसित' हो रहे बच्चे को सीखने और विकास के लिए मदद करना ताकि वे विकास की अपनी क्षमता को प्राप्त कर सकें।
2. बच्चों की यह सीखने में मदद करना कि सीखते कैसे हैं या सीखा कैसे जाता है।
3. बच्चों को उनके मौजूदा परिवेश और उनकी रुचियों के आधार पर विषयवस्तु को प्रस्तुत करना।

आइए, ईसीई के उन तीन उद्देश्यों को विस्तार से समझते हैं जिन्हें पूरा करने का प्रयास प्रारम्भिक बाल्यावस्था पाठ्यचर्या को करना चाहिए।

### आइए, इस तरह समझते हैं :

*एक विकसित होता हुआ 3 साल का बच्चा सरल, छोटे वाक्य बोलना, अपनी ज़रूरतें व्यक्त करना, और वाक्यों व वाक्यांशों को दोहराना सीख रहा होता है। इस उम्र में बच्चा ज़्यादातर अकेले खेलना पसन्द करता है। धीरे-धीरे, अगले तीन सालों में, वह आस-पड़ोस के दूसरे बच्चों के साथ, बड़ों के साथ और अपने प्ले ग्रुप के शिक्षकों के साथ बातचीत करना व खेलना सीखने लगता है। जैसे-जैसे बच्चे की भाषा समृद्ध होती है, वह अपने सवालों को स्पष्ट रूप से रख पाता है। कुछ 'क्यों' होता है, इसका जवाब ढूँढ़ता है। चाँद आकार क्यों बदलता है; जब हम बस में होते हैं तो चाँद हमारे साथ-साथ क्यों चलता है; पत्तों के रंग अलग-अलग क्यों होते हैं; घड़ी काम करना बन्द क्यों नहीं करती; गेंद हमेशा नीचे क्यों गिरती है; आदि। अर्थात् वह प्रश्न का अर्थ और व्याख्या ढूँढ़ रहा होता है।*

*इसके अलावा, बच्चा स्वतंत्र रूप से अपनी देखभाल करने के कौशल सीख रहा होता है। उदाहरण के लिए, अपने कपड़े ख़ुद पहनना, सभी तरह के भोजन को साफ़-सुथरे ढंग से खाना, अपने सामान की देखभाल करना, भावनाओं और ज़रूरतों को व्यक्त करना, भावनाओं को नियंत्रित करना, आदि। वह अपनी ज़रूरतें, पसन्द-नापसन्द ज़ाहिर करता है, अपने बारे में बात करना शुरू करता है कि 'मैं ऐसा हूँ!', कामों की पहल करने लगता है, और अपने परिवेश की चीज़ों में सक्रिय रूप से शामिल होता है।*

*वह बच्चा जो पहले अपने आस-पास की लगभग हर चीज़ का जवाब ढूँढ़ता था, और रोज़ाना की गतिविधियों के लिए ज़्यादातर बड़ों पर निर्भर रहता था, वह 3 से 6 साल की उम्र के बीच धीरे-धीरे ज़्यादा स्वतंत्र हो जाता है। वह रोज़ाना के ज़्यादातर काम ख़ुद कर लेता है, लगभग 5000 शब्दों को समझने लगता है, और किसी घटना या कहानी को विस्तार व भावों के साथ व्यक्त कर सकता है। जो बच्चा अपनी कमीज़ के बटन नहीं लगा पाता था, अब वह ज़्यादा जटिल व समन्वित काम करने के लिए तैयार हो जाता है। जैसे कि बड़ी सुई से सिलाई करना, जूते के फ़ीते बाँधना, आदि। जिस बच्चे को ऊँचाई से कूदने के लिए मदद की ज़रूरत पड़ती थी, 5 साल की उम्र में वही बच्चा बिना किसी मदद के आराम से कूद सकता है, या पेड़ पर भी चढ़ सकता है।*

### उपर्युक्त उदाहरण में हम क्या देखते हैं ?

हम देखते हैं कि तीन साल के इस समय में बच्चा तेज़ी से विकसित होने लगता है। इस दौरान उसका सिर्फ़ शारीरिक विकास ही नहीं होता बल्कि एक गुणात्मक परिवर्तन भी होता है। यानी इस दौरान संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, भाषाई, शारीरिक व गत्यात्मक क्षमताएँ और रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ साथ-साथ विकसित होने लगती हैं। ये सारे क्षेत्र एक दूसरे पर निर्भर भी हैं। उदाहरण के लिए, जो बच्चा भावनाओं को नियंत्रित और नियमित करने में सक्षम है, ग़ुस्सा नहीं करता, या ज़्यादा रोता नहीं है, सामाजिक है, दूसरे बच्चों के साथ अधिक खेलता है, आस-पास के बड़े लोगों का ध्यान आकर्षित करता है, ऐसे बच्चे को बोलने और अभिव्यक्ति के ज़्यादा अवसर मिलेंगे जिनसे उसकी मौखिक भाषा क्षमताओं का विकास होगा। अपने आस-पास के लोगों, चीज़ों, स्थानों, प्रक्रियाओं के साथ बच्चे की दोतरफ़ा अन्त:क्रिया और उसको मिलने वाली मदद उसके इस विकास की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं। ये अन्त:क्रियाएँ उसके बड़े होने पर उसमें सकारात्मक, नकारात्मक या प्रतिगामी परिवर्तन ला सकती हैं। इस समझ के साथ, और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री के रूप में, यह प्रश्न करना उचित है कि इस अवधि में बच्चों के विकास के लिए सबसे सार्थक मौक़े क्या हैं।

## प्रारम्भिक बाल्यावस्था पाठ्यचर्या

इस हिस्से में ईसीई पाठ्यचर्या के लिए ज़रूरी तीन उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से रखने की कोशिश की गई है। ये उद्देश्य बच्चों के सीखने को सार्थक और प्रासंगिक बनाने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले शिक्षणशास्त्र तथा विषयवस्तु को भी तय करने में मदद करते हैं। ये हैं :

## 1. अच्छी तरह से 'विकसित' हो रहे बच्चे को सीखने और विकास के लिए मदद करना

जैसी कि ऊपर चर्चा की गई है, बच्चे, विकास के विभिन्न क्षेत्रों में तेज़ी से विकसित होते हैं। विकास क्षेत्रों के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं। इनका उपयोग यह तय करने के लिए किया जा सकता है कि किन क्षेत्रों में बड़ों की, सहायता की आवश्यकता है, ख़ासकर ईसीई कार्यकर्त्रियों की।

### 1.1 स्थूल (बड़ी) माँसपेशियों का विकास

जो बच्चा किसी सहारे या मदद के साथ कूद सकता है, उसे स्वतंत्र रूप से कूदना सीखने के अवसरों की आवश्यकता होती है। जो बच्चा गेंद फेंकने, कैच करने या उसे पकड़ने का खेल सीख रहा है, उसे ऐसे अनुभव की आवश्यकता होती है जिससे वह लक्ष्य पर 'निशाना' लगा सके। इस अवधि में स्थूल-गतिशील विकास के प्रमुख लक्ष्य, बड़ी माँसपेशियों का विकास, सन्तुलन, समन्वय, शक्ति और सहने का धैर्य हैं।

### 1.2 सूक्ष्म (छोटी) माँसपेशियों का विकास

छोटी माँसपेशियों जैसे कि हाथ-पैर की उँगलियों की शक्ति का विकास, और इनका आँखों के साथ समन्वय, विकास के इस चरण का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। मोती पिरोना, जूतों के फ़ीते बाँधना, कटोरे में एक साथ रखे हुए छोटे-छोटे दानों / बीजों / कंकड़ों को छाँटना, साथ ही छोटे-छोटे तिनके, पत्ते और कंकड़ उठाकर उन्हें दिए गए पैटर्न अनुसार जमाना, आदि गतिविधियाँ इन छोटी माँसपेशियों को विकसित करने में मदद करती हैं। इन कार्यों को करने में आँख और हाथ का समन्वय महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इनमें वस्तुओं को अलग करना / छाँटना / अन्तर करना शामिल होता है। ये गतिविधियाँ बाद में, लम्बे समय तक पेंसिल पकड़ने और लिखने के लिए ज़रूरी शक्ति विकसित करने में मददगार होती हैं। वस्तुओं या चित्रों के बीच अन्तर करने से बच्चों को भाषा-लिपियों से परिचित होने पर अक्षरों की पहचान करने में मदद मिलती है।

### 1.3 संवेदी–अवधारणात्मक विकास

छोटे बच्चों की पाँचों इन्द्रियों–दृष्टि, स्पर्श, गन्ध, ध्वनि और स्वाद–का विकास कई तरह के अनुभव प्राप्त करने से होता है। जैसे–

- रंगों को देखने या मिलाने से;
- चित्र में अन्तर करने या ग़लतियाँ ढूँढ़ने से;
- आकार और आकृति के आधार पर वस्तुएँ छाँटने से;
- वस्तुओं की बनावट की पहचान करने से; जैसे गर्म / ठण्डा, चिकना / खुरदुरा;
- छूने सम्बन्धी अन्य अनुभव करने से;
- तरह-तरह की गन्धों–अच्छी / ख़राब, ख़ुशबू / बदबू की पहचान करने से;
- गन्धों के स्रोत, जैसे फूल, भोजन आदि को पहचानने से;
- विभिन्न प्रकार की खाने वाले की चीज़ों को चखने और उनके स्वाद के नाम बताने से; वग़ैरह।

अवधारणात्मक विकास के लिए सभी संवेदी खोजों में लगातार संज्ञानात्मक (सोचने) अनुभव की आवश्यकता होती है। साथ ही दूरी, समय, भार, आदि अवधारणाओं का आकलन करने में भी इसकी ज़रूरत पड़ती है। उदाहरण के लिए, कोई चीज़ कितनी दूर है, कितनी पास है, कितनी भारी या हल्की है, आदि। संज्ञानात्मक क्षमता तथा भाषा व शब्दावली के विकास का संवेदी अवधारणात्मक अनुभव के साथ गहरा सम्बन्ध है।

### 1.4 संज्ञानात्मक विकास

सोचने और समस्या-समाधान की क्षमताएँ विकास का एक ऐसा पहलू हैं जो अन्य क्षमताओं के साथ, छोटे बच्चों को अपने आस-पास की दुनिया को समझने में मदद करती हैं। ये अन्तर करने, क्रमबद्ध करने, छाँटने, अनुक्रम और पैटर्न का पता लगाकर समस्या हल करने या कारण और प्रभाव पर विचार करने की क्षमताएँ हैं। उदाहरण के लिए, फेंकने पर चीज़ें क्यों गिरती हैं; स्याही की एक बूँद से पानी का रंग क्यों बदल जाता है; बारिश क्यों होती है; ये सवालों के ऐसे उदाहरण हैं जो बच्चों के मन में आ सकते हैं। वयस्कों के सहयोग से इन पर विचार करना छोटे बच्चों में संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसलिए नहीं कि उन्हें केवल 'सही' उत्तर याद रखने हैं, बल्कि इसलिए कि बच्चों को व्यवस्थित रूप से तर्क करने में मदद मिल सके। इनमें से कई अनुभव उन्हें अवधारणाएँ सीखने में मदद करते हैं। विशेष रूप से स्थान, समय और वस्तुओं की प्रारम्भिक गणितीय अवधारणाओं को सीखने में। साथ ही ये गिनने और अंकगणित के लिए आधार तैयार करते हैं। बच्चों की देखभाल करने वाले ऐसे जानकार वयस्क बच्चों में उन्नत सोच-कौशल विकसित करने के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं जो बच्चों के प्रश्नों की सराहना करते हैं, और पूछताछ की प्रक्रिया में उनके साथ जुड़ते हैं।

### 1.5 भाषा और साक्षरता विकास

भाषा का विकास तब होता है जब बच्चे बड़ों से रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के अलग-अलग पहलुओं पर बात करते हैं, और लगातार अपनी शब्दावली का विस्तार करते हैं। जब उन्हें अभिव्यक्त करने, सुनने, समझने और रोज़मर्रा की घटनाओं को अलग-अलग तरह की अभिव्यक्ति के साथ जोड़कर गीत, कहानियाँ और कविताएँ बनाने के अवसर मिलते हैं तब उनकी भाषा का विकास होता है।

साक्षरता यानी पढ़ने-लिखने की समझ व क्षमता विशिष्ट होती है। यह मौखिक भाषा विकास पर आधारित होती है। मौखिक भाषा का विकास (सुनना और बोलना) पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करता है। सभी बच्चे पढ़ना (दृश्य संकेतों का अनुमान लगाना) तब शुरू करते हैं जब वे अपने आस-पास

चित्र 2 : सभी बच्चों को खेल और गतिविधियों में शामिल होने के अवसर मिलना ज़रूरी है

की चीज़ों को पहचानते हैं, और उनमें अन्तर करते हैं। लेकिन ध्वनियों और सम्बन्धित लिपियों का परिचय औपचारिक रूप से करवाना होता है, और इसके लिए व्यवस्थित योजना एवं उपयुक्त अवसरों की आवश्यकता होती है।

### 1.6 सामाजिक–भावनात्मक सीखना

बच्चे में बहुत कम उम्र से स्वयं ही अनुभूति या एहसास विकसित होने लगता है। इसलिए छोटे बच्चों को सामाजिक-भावनात्मक विकास के बहुत सारे पहलूओं को जानने-समझने में सहायता की आवश्यकता होती है। जैसे, मैं कौन हूँ; मुझे क्या पसन्द है और क्या नापसन्द है; मैं दूसरों के साथ कैसे जुड़ता / जुड़ती हूँ; विभिन्न भावनाओं और अनुभूतियों की पहचान करना और इन्हें शब्द / लेबल देना; विभिन्न परिस्थितियों में–साथियों के साथ, वयस्कों के साथ, घर के बाहर, औपचारिक परिवेश में–कैसे व्यवहार करना चाहिए; आदि।

भावनाओं को नियंत्रित करना, दूसरों की देखभाल करना, क्या सही है और क्या ग़लत, तथा अपने कार्यों के परिणाम समझना, ये सब ऐसे अन्य पहलू हैं जिनके बारे में वयस्कों द्वारा बच्चों को मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए। हालाँकि ये क्षेत्र-विशिष्ट विकास एक दूसरे से 'अलग' और 'विशिष्ट' लग सकते हैं, लेकिन दैनिक जीवन और परिस्थितियों में ये साथ-साथ होते रहते हैं, और एक दूसरे पर निर्भर हैं।

*राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020* और *फ़ाउण्डेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) 2022* में बुनियादी वर्षों हेतु प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश और रास्ते बताए गए हैं, जिनमें 3 से 6 वर्ष के शाला-पूर्व / आँगनवाड़ी बच्चे और 7-8 वर्ष के प्रारम्भिक प्राथमिक कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थी शामिल हैं।

## 2. बच्चों की यह सीखने में मदद करना कि सीखते कैसे हैं या सीखा कैसे जाता है ?

छोटे बच्चों के लिए शिक्षा का अर्थ है कि दुनिया से जुड़ने में उनकी मदद की जाए, और एक सतत प्रक्रिया के रूप में उन्हें स्वयं इसका अर्थ समझने में सक्षम बनाया जाए। इसके लिए शिक्षिका ऐसी होना चाहिए कि वह 'सीखना कैसे सीखा जाए', इसे सीखने के कौशल के रूप में विकसित करने में बच्चों की मदद करे। बच्चों को सही उत्तर दे देना या उनसे सही उत्तर की अपेक्षा करना उद्देश्य नहीं है। उद्देश्य यह है कि उत्तर खोजने की क्षमता विकसित करने में बच्चों की मदद की जाए, और खोजने की क्षमता के लिए आवश्यक भाषा और तर्क कौशल के विकास में उनकी सहायता की जाए।

### 2.1 ध्यानपूर्ण अवलोकन

जो हो रहा है उस पर ध्यान केन्द्रित या एकाग्र करना छोटे बच्चों के लिए एक महत्त्वपूर्ण कौशल है। यह बात बच्चों के लिए कठिन है, और इसे विकसित करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। बच्चों को अपने आस-पास के कीड़े-मकोड़ों और सूक्ष्म वस्तुओं का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित करना, इन अवलोकनों के बारे में बात करना, और उनके अवलोकनों को स्वीकार करना एक महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक अभ्यास है।

### 2.2 अनुकरण और पुनरावृत्ति

बच्चे ख़ुद कार्य करके सीखते हैं। आनन्द पाने के लिए और किसी नई चीज़ में महारत हासिल करने के लिए उसे दोहराते हैं। वयस्कों के व्यवहार की नक़ल करना, उदाहरण के लिए, बात करना, चलना, खाना, एक्शन गीत, सन्तुलन बनाना और पैर की उँगलियों पर चलना–ये सब बच्चे ख़ुश होने के लिए दोहराते हैं, और किसी भी नई और दिलचस्प गतिविधि में सहज होने के लिए ऐसा करते हैं। बच्चों की एक दिनचर्या बने, इसकी आदत बनाने के लिए भी दोहराव और अभ्यास की आवश्यकता होती है। देखभाल करना और संवेदनशीलता जैसी बातें भी वे वयस्कों के व्यवहार को देखकर और अनुकरण करके सीखते हैं। वयस्कों को सावधानीपूर्वक व्यवहार या मॉडलिंग करनी चाहिए ताकि बच्चे उनके व्यवहार का अनुकरण कर सकें, और उससे सीख सकें।

### 2.3 प्रयास और ग़लतियाँ

जैसा कि हमने पहले भी कहा, बच्चे करके सीखते हैं। पर उनकी माँसपेशियों की ताक़त और तालमेल अभी भी धीरे-धीरे विकसित हो रहे होते हैं। भले ही बच्चे कोई काम करने में असफल हों, लेकिन दोहराने, ग़लतियाँ करने और कठिन कामों को आज़माने के अवसर देना ज़रूरी है तभी उन्हें कठिन और चुनौतीपूर्ण काम करने और सरल कामों को करने में आत्मविश्वास हासिल करने में मदद मिलेगी। उदाहरण के लिए, एक गिलास से दूसरे गिलास में पानी डालना, चम्मच में नींबू रखकर चलना, प्रयास और सहारे के साथ चढ़ना, ये सभी तरह-तरह के अनुभव और ग़लतियाँ करने के अवसर उन्हें स्वतंत्र रूप से काम करना 'सीखने' में मदद करते हैं।

### 2.4 प्रश्न पूछना, जिज्ञासा करना

बच्चे जिज्ञासु होते हैं। अपने आस-पास की खोजबीन एक सक्रिय और लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। भाषा के विकास के साथ, उनकी जिज्ञासा प्रश्नों का रूप ले लेती है। उनके जीवन में मौजूद ज़िम्मेदार और देखभाल करने वाले वयस्कों को चाहिए कि वे बच्चों को सार्थक संवादों में शामिल करें, एक दूसरे से सवाल पूछें (जब कोई बच्चा सवाल पूछता है तो वयस्क बच्चों को आगे सोचने में मदद करने के लिए उस जानकारी से सम्बन्धित और सवाल पूछते हैं), उनकी पूछताछ के बिन्दुओं को धैर्यपूर्वक आगे

ले जाना और ऐसी शब्दावली का उपयोग करना जिसे बच्चा समझता हो, ये सारी बातें सीखने की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है।

**2.5 जो देखा, सीखा और किया उसे व्यक्त व साझा करना**

हमने जो देखा, सीखा और किया है, उसे व्यक्त करना, और साझा करना एक विशेष मानवीय गुण है। इसे विकसित करने में कई बातें महत्त्वपूर्ण हैं जैसे बच्चों से घर और विद्यालय में उनके अनुभवों के बारे में बात करना, गीतों या कहानियों का उपयोग करना, आड़ी-तिरछी रेखाओं और चित्रों के माध्यम से लिखित या दृश्य अभिव्यक्तियाँ करना। यह बाद में लिपि और लेखन के रूप में विकसित होती हैं। मिट्टी, काग़ज़ और अन्य संसाधनों का उपयोग करके वस्तुएँ बनाना, आदि। छोटे बच्चों के साथ काम करते समय उन्हें उनकी अपनी भाषा में ख़ुद को अभिव्यक्त करने का अवसर देना भी एक महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक अभ्यास है।

## 3. बच्चों को उनके मौजूदा परिवेश और उनकी रुचियों के आधार पर विषयवस्तु को प्रस्तुत करना

बच्चों की शिक्षा उनके आस-पास के माहौल पर आधारित होनी चाहिए। उनकी जिज्ञासाएँ और रुचियाँ उनके आस-पास की चीज़ों में निहित होती हैं। ईसीई पाठ्यचर्या का उद्देश्य बच्चों की इस बात में मदद करना है कि वे इन जिज्ञासाओं और रुचियों को पूरा कर सकें। यह शाला-पूर्व / आँगनवाड़ी / बालवाड़ी में शुरुआती वर्षों के पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को व्यवस्थित करने का एक प्रमुख मार्गदर्शक सिद्धान्त है। यही वह सिद्धान्त है जिसका पालन *एनसीएफ़-एफ़एस 2022* और अन्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्याओं ने अपने दिशानिर्देशों में किया है।

बच्चे के आस-पास की अवधारणाओं और घटनाओं पर आधारित सिद्धान्त उनकी जिज्ञासाओं को पूरा करने, और उनके आस-पास के परिवेश व अनुभवों को अर्थपूर्ण बनाने में मदद करते हैं। यह उनके घर व विद्यालय के अनुभवों को निरन्तरता प्रदान करता है। उनके घर और पारिवारिक परिवेश पर ध्यान केन्द्रित करना—मैं और स्वयं, हमारा भोजन, अपने आस-पास दिखने वाले जानवर और पौधे, वाहन, मौसम, आदि पाठ्यचर्या के उपयोगी विषय हैं। विषयवस्तु की थीम-आधारित रचना इस विचार से उत्पन्न होती है कि बच्चों को उन चीज़ों में शामिल किया जाए जो उनके लिए उपयुक्त और प्रासंगिक हैं, तथा जैसा वे अपने परिवेश में अनुभव करते हैं।

एक ही अवधारणा की खोज करने के लिए बच्चों को बार-बार, अलग-अलग तरह के अवसर देना उपयोगी होता है। जैसे अवधारणा को दोहराने वाले, जो सीखा है क्रमशः उससे आगे के स्तर के, आदि। उदाहरण के लिए, 3 साल के बच्चे के साथ वाहनों पर की जाने वाली चर्चा 5 साल के बच्चे से की जाने वाली चर्चा से अलग होगी। छोटे बच्चों के लिए ध्वनियाँ, आस-पास दिखाई देने वाले वाहन, उनके नाम जानना, आदि महत्त्वपूर्ण होंगे, जबकि 5 साल के बच्चों के लिए कुछ ज़्यादा मुश्किल पहलू, जैसे वाहनों का आकार, परिवहन के तरह-तरह के साधन, आदि ज़्यादा दिलचस्प रहेंगे। कोशिश यह नहीं है कि छोटे बच्चों को वाहनों के काम करने के हर विवरण के बारे में निपुण बनाया जाए, बल्कि उन्हें इस तरह उत्साहित किया जाए ताकि वे अपने आस-पास की विभिन्न चीज़ों और घटनाओं के बारीक़ विवरणों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित हो सकें।

## प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के इन उद्देश्यों को कैसे प्राप्त करें ?

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा का मूल विचार यह है कि शिक्षा को बच्चों के वर्तमान कार्यों और गतिविधियों के सन्दर्भ में रखा जाए। इस आयु वर्ग के बच्चे कई प्रकार के खेलों में भाग लेते हैं। ईसीई के उपर्युक्त सभी उद्देश्यों को खेल के माध्यम से सीखते हुए और शैक्षणिक योजना के अनुसार प्राप्त करना सम्भव है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के दिशानिर्देश* और *एनसीएफ़-एफ़एस 2022,* विशेष रूप से 3-6 वर्ष के बच्चों के फ़ाउण्डेशनल स्टेज शिक्षणशास्त्र के लिए अनुपम / बेमिसाल दृष्टिकोण के रूप में खेल पर आधारित शिक्षा की सिफ़ारिश करते हैं।

अन्त में, प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यकर्ताओं के रूप में, यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि :

1. प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा 'विद्यालय' और विषय-आधारित शिक्षा के समान नहीं है।
2. साक्षरता और संख्या ज्ञान प्रारम्भिक वर्षों के सीखने के लक्ष्यों में से एक लक्ष्य हैं, न कि सीखने का एकमात्र लक्ष्य।
3. कक्षा का ढाँचागत, भयपूर्ण और तनावपूर्ण माहौल बच्चों के समग्र विकास और सीखने के लिए नुक़सानदायक है। शिक्षण अधिगम की ऐसी धारणा से मुक्त होना ज़रूरी है।
4. खेल में महत्त्वपूर्ण क्षमता होती है और ऐसा ख़ुशनुमा वातावरण बच्चों के प्रारम्भिक वर्षों में सीखने में मददगार हो सकता है। हमें चाहिए कि कार्यकर्ताओं के रूप में हम इस क्षमता को पहचानें, और सीखने का समावेशी वातावरण बनाने की दिशा में काम करें।

*आभार : जिगिशा शास्त्री, इरा जोशी और ईसीसीई में काम करने वाले अपने विद्यार्थियों और सहकर्मियों के प्रति आभार जिनसे हुई चर्चाओं के कारण यह लेख लिखा गया है।*

**किन्नरी पंड्या** अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु के स्कूल ऑफ़ एजुकेशन में प्राध्यापक हैं। उनका कार्य उच्च शिक्षा कार्यक्रम विकास, शिक्षण, शोध, क्षेत्रीय हस्तक्षेप कार्यक्रम और प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा नीति पर केन्द्रित है।

सम्पर्क : kinnari@apu.edu.in

पूर्व प्राथमिक शिक्षा और आँगनवाड़ी केन्द्र

# आँगनवाड़ी केन्द्रों का वातावरण आनन्ददायक होना ज़रूरी

सुनील कुमार साह

आँगनवाड़ी केन्द्र बच्चों के सीखने का बेहतर केन्द्र तभी हो सकता है जब वहाँ सीखने का ख़ुशनुमा वातावरण हो। बच्चों को ऐसी गतिविधियाँ कराई जा रही हों जिन्हें करने में उन्हें मज़ा आ रहा हो, और उनका सीखना भी उसमें शामिल हो। ऐसा तभी सम्भव है जब आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को सिखाने में, गतिविधियाँ कराने में आनन्द आए और उन्हें हर गतिविधि का उद्देश्य स्पष्ट भी हो।

आज़ादी के बाद, देश में सरकारी और ग़ैर-सरकारी स्तर पर बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण को लेकर कई प्रयास हुए। लेकिन व्यापक स्तर पर एक संगठित प्रयास 1975 में आँगनवाड़ियों की स्थापना से होता है, अर्थात् आज से 50 वर्ष पूर्व। उस समय स्वास्थ्य और शिक्षा का विस्तार काफ़ी सीमित था। सभी लोगों तक आधारभूत स्वास्थ्य सुविधाओं और विद्यालय की पहुँच नहीं थी। साक्षरता की दर बहुत कम थी। बच्चों और माताओं में कुपोषण के कारण होने वाली मृत्यु दर काफ़ी अधिक थी। ये दोनों ऐसी आधारभूत ज़रूरतें थीं जिनके बिना विकसित भारत की कल्पना नहीं की जा सकती थी।

लेकिन जैसे-जैसे इन सेवाओं का विस्तार हुआ और इनसे सम्बन्धित संस्थाएँ लोगों के नज़दीक पहुँचीं तब इनका सकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिला। इसमें आँगनवाड़ी केन्द्र और इससे जुड़े कार्यकर्त्रियों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल, पोषण की सुनिश्चितता, मातृ और बाल मृत्यु दर में कमी लाना तथा सभी को आधारभूत शिक्षा उपलब्ध करवाना अपने-आप में काफ़ी जटिल और मुश्किल काम है। इस पूरे कार्यक्रम का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है, इसकी लोगों तक पहुँच का होना। आँगनवाड़ी एक ऐसी जगह हो जो लोगों के घर के पास हो, जैसे कि घर का आँगन होता है जहाँ सभी आसानी से पहुँच सकते हैं। आज देश में लगभग 13 से 14 लाख आँगनवाड़ी केन्द्र हैं। गाँव के अन्तिम व्यक्ति तक पहुँच के हिसाब से देखें तो ये सबसे महत्त्वपूर्ण संस्थान हैं।

चित्र 1 : उद्देश्य की स्पष्टता से खेल-खेल में सीखना सम्भव है

*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की महत्ता को पुनः रेखांकित किया गया है। इस कारण से आँगनवाड़ी केन्द्र में स्वास्थ्य और पोषण के साथ-साथ पढ़ाई को एक महत्त्वपूर्ण आयाम के रूप में स्थापित किया गया है। यह बात अनेक शोधों से स्थापित हो चुकी है कि बच्चों का 80 प्रतिशत मानसिक विकास उनके शुरुआती एक हज़ार दिनों में हो जाता है। ऐसे में पूर्व प्राथमिक शिक्षा, आँगनवाड़ी के कार्य का एक महत्त्वपूर्ण घटक बन जाती है।

कई बार जाने-अनजाने हम आँगनवाड़ी को संचालित करने के लिए बहुत सारे ऐसे तरीक़े सुझाते हैं जो वास्तविकता से दूर और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों की समझ से परे होते हैं। उनमें सीखने के सिद्धान्त, ज्ञान और सीखना, बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं, जैसी सैद्धान्तिक बातें ज़्यादा हावी हो जाती हैं, और मज़ेदारी का उत्साह ग़ायब हो जाता है। इस तरह की चीज़ें आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों के लिए सहज वातावरण बनाने के बजाय उन्हें भयभीत और निराश करती हैं, और उनका ख़ुद का सीखने का उत्साह भी कम हो जाता है।

हम सबको मिलकर यह प्रयास करना होगा कि प्रत्येक आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री इस बात के लिए सक्षम हो पाए कि वो अपने केन्द्र में 2-3 घण्टे कुछ ऐसा कर पाए जिसमें बच्चों को मज़ा और सिर्फ़ मज़ा आए। इसी मज़ेदारी में वो कुछ सीख भी जाएँगे। इस उम्र में हम जितना उनके साथ छोटी-छोटी कहानियों, कविताओं के साथ काम और तरह-तरह के खेल करवा पाएँ या इनके ज़्यादा मौक़े दे पाएँ, उतना बच्चों का लगाव केन्द्र से बढ़ेगा और उनकी निरन्तरता भी बनेगी। इसका एक फ़ायदा यह भी होगा कि आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री भी इन गतिविधियों को आसानी से कर पाएँगी। सवाल उठता है कि यह होगा कैसे?

हम लोगों को इस क्षेत्र में कार्य करते हुए दो साल से ज़्यादा हो गए हैं। इन दो सालों के अनुभव में हम यह सुनिश्चित कर पाए कि इस आयु वर्ग के बच्चों और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री दोनों के लिए यह ज़रूरी है कि वे किसी भी बात को कितनी सहजता और सरलता से कहते या बताते हैं। सहजता इसकी पहली शर्त है। दूसरी शर्त है, अपने आस-पास की चीज़ों को शामिल कर गतिविधियों का निर्माण करना।

कई बार गतिविधियाँ अमूर्तता में डिज़ाइन होती हैं। इन्हें न तो आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री समझ पाती हैं न ही अपनी गतिविधियों का हिस्सा बना पाती हैं।

आँगनवाड़ी केन्द्र विद्यालय की कक्षा की तरह संचालित नहीं हो सकता, जहाँ बच्चे पंक्तियों में बैठे हों और उन्हें पढ़ाया जाए। इस केन्द्र की परिकल्पना बिल्कुल अलग है। ऐसी जगह जहाँ बच्चों को आनन्द आए, उन्हें अपने मन का करने की स्वतंत्रता हो। वहाँ का वातावरण बोझिल न हो। आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री सभी बच्चों को समान रूप से कार्य करने के अवसर देती हों, और ज़्यादातर गतिविधियाँ गोल घेरे में बैठाकर संचालित की जाती हों। इसके साथ ही, सभी बच्चों को कुछ निर्देशित और कुछ स्वतंत्र रूप से की जाने वाली गतिविधियों में शामिल होने, वस्तुओं को छूने, महसूस करने, कुछ बनाने के मौक़े देने जैसे तमाम पहलुओं पर काम करने में स्वतंत्रता हो। एक साथ एक गतिविधि भी हो सकती है और एक से ज़्यादा भी। गतिविधि करने से ज़्यादा ज़रूरी है कि आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री सभी बच्चों को गतिविधियों में कितना शामिल कर पाती हैं और उन्हें गतिविधि के दौरान कितनी स्वतंत्रता देती हैं।

एक-दो उदाहरणों से इसे समझने का प्रयास करते हैं—

एक केन्द्र में आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री ने बच्चों के साथ रंगों की समझ को लेकर कार्य करना तय किया। बच्चों को बहुत सारे रंगों के साथ एक-एक काग़ज़ भी दिया गया। सभी को अलग-अलग फल और उससे जुड़े रंग दिए गए। उनसे कहा गया कि पहले देखकर फल बनाएँ, फिर उसमें रंग भरें। बहुत सारे बच्चे इस स्थिति में नहीं थे कि वे फलों के चित्र बना पाएँ, और उनकी संगतता में चित्रों में रंग भरें। कुछ ने कहे अनुसार ही काम करना तो ज़्यादातर ने रंगों के साथ खेलना शुरू किया। आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को लगा कि ये तो नहीं कर रहे हैं। तब उन्होंने ख़ुद कुछ फलों के चित्र बनाए और कुछ बच्चों को अपने साथ अलग-अलग उन चित्रों में रंग भरने के लिए कहा। कुछ बच्चे जो यह भी नहीं कर पा रहे थे, उनको कुछ भी आकृतियाँ बनाने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया। सभी ने कुछ-कुछ आकृतियाँ बनाईं। कार्यकर्त्री ने तब उन्हें सभी रंगों का बारी-बारी से उपयोग करने के लिए प्रेरित किया ताकि वे इन सब रंगों के बारे में कुछ समझ विकसित कर पाएँ। बाद में उन्होंने सभी फलों और उनसे सम्बन्धित रंगों को लेकर बात की। यहाँ मुद्दा यह नहीं था कि सभी बच्चों ने फलों के चित्र बनाए। इसका उद्देश्य उन्हें अलग-अलग रंगों की पहचान कराना, रंगों के साथ खेलना, रंग भरने के लिए उपयोग किए जा रहे ब्रश को पकड़ना, काग़ज़ पर कुछ चित्रों को उकेरना, और ख़ुश होने का मौक़ा देना था ताकि यही ख़ुशी आगे के लिए बच्चों को फिर से ज़्यादा उत्साह के साथ काम करने के मौक़े खोले। इससे एक तरह का भावनात्मक सम्बन्ध विकसित होता है जो बच्चों के मानसिक विकास में मददगार साबित होता है। इसी तरह की बहुत सारी गतिविधियों को आगे के चरणों में विस्तार देते हुए इसकी श्रृंखला बनाकर काम करने की ज़रूरत है।

> **“एक आँगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों को ज़्यादा ख़ुश देखा जहाँ कार्यकर्त्री उन्हें कहानियाँ या कविता सुनाने पर ज़्यादा काम करती हैं। बच्चे गोल घेरे में बैठ जाते हैं, और काफ़ी मज़े से उसमें अपना मनोरंजन खोजते हैं।”**

एक अन्य केन्द्र का अनुभव बिल्कुल अलग है। आँगनवाड़ी केन्द्र में कुछ जानवरों से सम्बन्धित फ़्लैश कार्ड दिए गए। द्वि-आयामी होने के कारण, इसमें जानवरों के चित्र इस तरह से बने थे कि बच्चे उनके सभी अंग नहीं देख सकते थे। आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री ने पहले चित्र को दिखाते हुए उनका जानवरों से परिचय कराया, और पूछा कि इसके कितने पैर हैं, इत्यादि। बच्चों ने

चित्र 2 : आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को खेलों और गतिविधियों के उद्देश्यों से परिचित होना ज़रूरी है

> आँगनवाड़ी एक ऐसी जगह हो जो लोगों के घर के पास हो, जैसे कि घर का आँगन होता है, जहाँ सभी आसानी से पहुँच सकते हैं।

चित्र में जो देखा, वही बताया। उन्होंने फिर दोहराया, "नहीं, इनके कितने पैर हैं?", बच्चों को समझ नहीं आया, उनके चेहरों पर असमंजसता के भाव आते हुए आसानी से देखे जा सकते थे। यहाँ पर चित्रों का चयन इस सावधानी से किया जा सकता था कि बच्चों को जानवरों के पैर, पूँछ, आदि अंगों का आसानी से परिचय कराया जा सके।

तीसरे केन्द्र के अनुभव से कुछ और बातें समझ सकते हैं। यहाँ कार्यकर्त्री ने अमूर्त और मूर्त, दोनों का अच्छा मिश्रण अपनी गतिविधि में किया। बच्चे बहुत सारी चीज़ें अपने परिवेश में देखते हैं, और उन्हें पहचानते भी हैं। मसलन, इमली व चने के बीज, तरह-तरह की दालें, जिन्हें वे खेलने और खाने, दोनों में इस्तेमाल करते हैं। इस तरह की और भी बहुत सारी चीज़ें हो सकती हैं। कार्यकर्त्री ने बीजों को अलग-अलग रंग के गुब्बारों में भर दिया और बच्चों को टटोलकर पहचानने के लिए दिए। पहले तो उन्हें समझ में नहीं आया, लेकिन धीरे-धीरे जब कुछ बच्चों ने शुरुआत की, सभी उसमें शामिल होते चले गए। बच्चे काफ़ी ख़ुश हो रहे थे, जब वे अनुमान लगाकर उन चीज़ों को पहचान पा रहे थे।

इसके अलावा, हमने उस आँगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों को ज़्यादा ख़ुश देखा जहाँ कार्यकर्त्री उन्हें कहानियाँ या कविता सुनाने पर ज़्यादा काम करती हैं। बच्चे गोल घेरे में बैठ जाते हैं, और काफ़ी मज़े से उसमें अपना मनोरंजन खोजते हैं। कई केन्द्रों पर जब कार्यकर्त्री उनसे पूछती हैं कि आज क्या करना है, अकसर बच्चे कहानी सुनाने की ज़िद करते हैं।

कुल मिलाकर यह कहने की कोशिश है कि सहज और सरल तरीक़ों से भी सीखने को आसान बनाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो गतिविधियाँ सिर्फ़ सीखने को प्रेरित करने वाली न होकर मज़ेदारी वाली हों। मज़ा होगा तो सीखना भी हो जाएगा। छत्तीसगढ़ में कार्य करते हुए हमने इस बात को प्राथमिकता में रखने का प्रयास किया कि यदि प्रत्येक आँगनवाड़ी केन्द्र कुछ बिन्दुओं पर केन्द्रित होकर कार्य कर पाए तब वह बेहतर केन्द्र के रूप में स्थापित हो सकता है। इसके लिए ज़रूरी है–

- आँगनवाड़ी केन्द्र समय पर खुले और समय पर बन्द हो;
- वह सीखने का आकर्षक केन्द्र बने;
- प्रत्येक केन्द्र लगभग 1 से 2 घण्टे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधियों पर कार्य करे;
- आँगनवाड़ी केन्द्र बच्चों को सहज और समावेशी वातावरण देने का भरपूर प्रयास करे; आदि।

आँगनवाड़ी केन्द्र में लोगों का रुझान बढ़े, इसके लिए ज़रूरी है केन्द्र की गतिविधियों और उपलब्धि को लगातार समुदाय के साथ साझा करना। बच्चों और महिलाओं को जोड़कर ऐसे मेले का आयोजन करना जिसमें सबकी भागीदारी और हिस्सेदारी हो। साथ ही, सफलता के छोटे-छोटे पहलुओं को पहचानना और उनको प्रसारित करना। यह कोशिशें हमारे काम को हौसला प्रदान करती हैं, और काम करने के लिए उत्साहित करती हैं। समुदाय भी अभी तक इन केन्द्रों को एक समय का भोजन प्रदान करने वाले केन्द्र के रूप में ही पहचानते हैं। आँगनवाड़ी केन्द्रों को अपनी उस बनी-बनाई सीमित पहचान से बाहर निकलकर ऐसे केन्द्र के रूप में अपनी पहचान को स्थापित करना होगा जिसमें न सिर्फ़ पोषण और स्वास्थ्य होता है, बल्कि मज़ेदारी भी होती है।

ऐसे ही छोटे-छोटे प्रयासों से हम आँगनवाड़ी केन्द्रों को सीखने का भी एक बेहतर केन्द्र बना पाएँगे।

**सुनील कुमार साह** तक़रीबन 28 वर्षों से शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत हैं। वे विगत 15 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रहे हैं। वर्तमान में छत्तीसगढ़ की टीम को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

सम्पर्क : sunil@azimpremjifoundation.org

# प्रारम्भिक बाल्यावस्था के शिक्षकों द्वारा अकसर पूछे जाने वाले प्रश्न

जिगिशा शास्त्री

पिछले कुछ सालों में बहुत सारे जिज्ञासु, सीखने की चाहत रखने वाले, तथा छोटे बच्चों को पढ़ाने के काम को बेहतर ढंग से करने के इच्छुक शिक्षकों से मिलना हुआ। उनसे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर चर्चा के दौरान बहुत सारे प्रश्न मिले। ये प्रश्न उनके रोज़मर्रा के कामों से जुड़े हुए थे। यहाँ कुछ ऐसे ही प्रश्न साझा किए जा रहे हैं जिन्हें सबसे ज़्यादा पूछा जाता रहा है। ये प्रश्न सभी ईसीई शिक्षकों के लिए समान हैं, चाहे वे आँगनवाड़ी केन्द्रों में पढ़ाते हों या ज़्यादा संसाधनों वाली पूर्व प्राथमिक शालाओं में।

*प्रश्न : हर कोई इस बात पर ज़ोर देता है कि हम बच्चों को खेलने दें। चाहे ईसीई विशेषज्ञ हों या* राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, *दोनों ही खेल पर ज़ोर देते हैं। लेकिन हमें बच्चों के सीखने के प्रतिफलों को पूरा करना होता है, और साप्ताहिक योजनाओं का भी क्रियान्वयन करना होता है। अगर हम बच्चों को खेलने देंगे तो उन्हें जो 'सिखाना' चाहते हैं, उसे कब पूरा करेंगे?*

उत्तर : खेल बच्चों के लिए बेहद स्वाभाविक गतिविधि है। पालने में लेटा हुआ बच्चा ऊपर लटकते हुए खिलौने से खेलता है। कक्षा में बच्चा दरी / कालीन के धागों से खेलता है, वस्तुओं को छूता है, लुढ़काता है, फेंकता है, सूँघता है। वे अकेले खेलते हैं, अपने साथियों, भाई-बहनों और बड़ों के साथ भी खेलते हैं। खेलते समय बच्चों का समग्र विकास होता है। वे सोचते हैं, अपनी शारीरिक क्रियाओं का उपयोग करते हैं, दूसरों के साथ अन्तःक्रिया करते हैं, और एक दूसरे से बात करते हैं; इस प्रकार संज्ञानात्मक, शारीरिक, गत्यात्मक, सामाजिक और भाषा विकास सम्बन्धी प्रक्रियाएँ होती हैं। खेलते समय, वे निर्णय लेते हैं, नियम तय करते हैं, कल्पना करते हैं, और कुछ जानने को उत्सुक होते हैं। इसलिए सीखने के प्रतिफलों और पाठ योजनाओं को ध्यान में रखते हुए हमें ऐसे अनुभवों और गतिविधियों की योजना बनानी होगी जहाँ वे अपने शरीर को हिला-डुला सकें, सोच सकें, बात कर सकें, और एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया कर सकें। ऐसा करने से, हमने जिस गतिविधि / अनुभव की योजना बनाई है, वह उनके लिए खेल बन जाएगी। यही नहीं, हमें उन्हें कक्षा के अन्दर और बाहर भी कक्षा सामग्री के साथ खुलकर खेलने का समय देना होगा। खेलते समय सीखने के कई उद्देश्य पूरे होंगे। शिक्षक के रूप में, हमें हर समय बच्चों के सीखने को लेकर चिन्तित होने और उन पर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है। वे ख़ुद खेलेंगे, और सीखेंगे। हाँ, हमें उनकी सुरक्षा का ध्यान रखना होगा, उन पर नज़र रखनी होगी ताकि उन्हें चोट न लगे।

*प्रश्न : प्ले-वे विधि क्या है?*

उत्तर : प्ले-वे विधि में बच्चों के लिए ऐसी गतिविधियाँ तैयार की जाती हैं जिनसे वे पूरी तरह से जुड़ सकें; अपनी पाँचों इन्द्रियों का उपयोग करके काम कर सकें; एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया और बातचीत कर सकें। इस विधि में वे शारीरिक और मानसिक, दोनों रूप से गतिविधियों में शामिल होते हैं। उदाहरण के लिए, जानवरों के बारे में समझने का एक तरीक़ा यह हो सकता है कि बच्चों से जानवरों के नाम पूछें, उन्हें याद करवाएँ, और चार्ट पर चित्र दिखाएँ। प्ले-वे विधि में शिक्षक गीतों के माध्यम से भी जानवरों का परिचय करा सकते हैं। गाते समय, बच्चे गीत में आने वाले प्रत्येक जानवर की तरह अभिनय कर सकते हैं, उसकी आवाज़ निकाल सकते हैं। इस विधि में शिक्षक ऐसे तरीक़ों का उपयोग करते हैं जहाँ बच्चों को अपनी जिज्ञासा शान्त करने का अवसर मिलता है। उनके पास यह चुनने का विकल्प होता है कि वे कौन-सी क्रियाएँ करें। उनका चुनाव वे स्वयं करते हैं। बच्चों को विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करने देना और उनसे सीखने देना–उदाहरण के लिए, चित्र कार्डों का मिलान करना, पहेली जोड़ना, एक दूसरे से प्रश्न पूछना और सीखना, कहानियाँ सुनाना, विभिन्न पात्रों की भूमिका निभाना जैसी गतिविधियाँ प्ले-वे का ही हिस्सा हैं।

> **“ प्ले-वे विधि में शिक्षक ऐसे तरीक़ों का उपयोग करते हैं जहाँ बच्चों को अपनी जिज्ञासा शान्त करने का अवसर मिलता है। उनके पास यह चुनने का विकल्प होता है कि वे कौन-सी गतिविधियाँ करें। ”**

*प्रश्न : लर्निंग कॉर्नर क्या हैं? हम अपनी कक्षाओं में इन्हें कैसे स्थापित कर सकते हैं?*

उत्तर : 3 से 8 वर्ष की आयु के छोटे बच्चे खिलौनों, खेल सामग्री और अन्य शिक्षण सामग्री के साथ खेलते हुए सीखते हैं। इन सामग्रियों में पहेलियाँ, ब्लॉक, जोड़-तोड़ वाली वस्तुएँ

(manipulatives), जैसे विभिन्न प्रकार के ब्लॉक, अलग-अलग तरह के आकार आदि शामिल होती हैं। इनमें क्रमबद्धता बॉक्स, गिनती किट, मिलान कार्ड, अनुक्रम कार्ड, विभिन्न बुनावट के कपड़े के टुकड़े, ध्वनि बॉक्स, और यहाँ तक कि साँप-सीढ़ी, आदि जैसे सरल खेल भी सम्मिलित रहते हैं। सप्ताह के लिए निर्धारित सीखने के प्रतिफलों के आधार पर शिक्षक यह चुन सकते हैं कि बच्चों द्वारा खोज-बीन करने के लिए कौन-सी सामग्री रखी जाए। उदाहरण के लिए, यदि किसी सप्ताह, सीखने का प्रतिफल बुनियादी आकृतियों की पहचान करना है तो वर्ग, त्रिभुज और वृत्त जैसी बुनियादी आकृतियों वाले दो-दो कार्ड एक छोटे-से बॉक्स में रखे जा सकते हैं। बच्चे समान आकृति वाले कार्डों को उठाकर एक साथ रखने का प्रयास कर सकते हैं। इस दौरान कार्यकर्त्री बच्चों का ध्यान रखती हैं, आवश्यकतानुसार उनका मार्गदर्शन करती हैं, तथा उन्हें प्रोत्साहन, संकेत और सुझाव देती हैं। शिक्षक उनके साथ खेल भी सकते हैं।

कक्षा में इस सामग्री को व्यवस्थित करने के लिए सामग्री के उद्देश्य और उपयोग के आधार पर, सबसे पहले उनको वर्गीकृत / समूहबद्ध करना होगा—विभिन्न प्रकार के सभी ब्लॉक एक साथ रखे जाएँ। यही काम किताबों, फ़्लैश कार्डों, चित्र कार्डों, आदि के लिए भी करना होगा। सामग्री छाँटने के बाद, उसे कक्षा के अलग-अलग कोनों या स्थानों पर रखें। यदि कमरा छोटा है तब सामग्री को बक्सों में रखा जा सकता है। यदि कक्षा का कमरा बड़ा है तब सभी सामग्रियाँ अलग-अलग कोनों में व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित की जा सकती हैं। खुली अलमारियों का उपयोग करें, सामग्री को खुले बक्सों या टोकरियों में रखें जहाँ बच्चे उन्हें देख सकें, और उठा सकें।

बच्चे सामग्री के साथ खेल पाएँ, इसके लिए विद्यालय के बरामदों का उपयोग भी किया जा सकता है। खेल का समय समाप्त होने पर शिक्षक बच्चों की मदद से उन सामग्रियों को निर्धारित स्थान पर वापस रख सकते हैं।

विभिन्न कोने भी बनाए जा सकते हैं। सबसे सामान्य कोने हैं—ब्लॉक कोना, जोड़-तोड़ कोना, भाषा या पुस्तक कोना, गुड़िया या नाटकीय खेल कोना। साथ में कला कोना, विज्ञान कोना या संगीत कोना भी बनाया जा सकता है।

अलग-अलग कोनों में रखी हुई सामग्रियों को पूरे हफ़्ते बच्चों के इस्तेमाल के लिए वहीं रख देना चाहिए। तब हम आश्वस्त हो सकते हैं कि लगभग सभी बच्चे उस सामग्री को अच्छी तरह से समझ पाएँगे। अगर कुछ बच्चे उनका बार-बार इस्तेमाल करना चाहें तो वे ऐसा कर पाएँगे। हर हफ़्ते आप कोई नई सामग्री जोड़ सकते हैं, और जब आपको लगे कि कोई सामग्री लम्बे समय से इस्तेमाल हो रही है, आप उसे हटा सकते हैं। ऐसा बदलाव करने से सामग्रियों के इस्तेमाल में विविधता आती है, और रुचि बनी रहती है।

एक बार फिर, मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहूँगी कि सीखने के कोने का उद्देश्य कक्षा में सामग्री को व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित करना है ताकि बच्चे इन सामग्रियों से अकेले, जोड़ों

चित्र 1: व्यवस्थित और आकर्षक सीखने के कोने से बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी जुड़ते हैं

चित्र 2 : बच्चों को अपनी पसन्द की किताबों को पढ़ना और ब्लॉक से खेलने देना ज़रूरी है

में या समूहों में जुड़ सकें। इस दौरान शिक्षक उनका मार्गदर्शन करते रहें।

*प्रश्न : मैं बच्चों को सामग्री से खेलने, उसे उपयोग में लेने के लिए कैसे प्रोत्साहित करूँ? अगर बच्चे एक ही सामग्री का इस्तेमाल करते रहें तो क्या होगा? अगर वे एक कोने से दूसरे में चले जाएँ, और सामग्री के इस्तेमाल पर ध्यान न दें तो क्या होगा?*

उत्तर : जब हम सामग्री को प्रदर्शित करते हैं, और उसे इस तरह रखते हैं कि बच्चे उसे आसानी से उठा सकें, तब बच्चे को लगेगा कि यह चीज़ उसे आसानी से मिल रही है, और यह बात उन्हें उसका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। याद रखें, बच्चे जिज्ञासु होते हैं, उन्हें खिलौनों और सामग्रियों से खेलना पसन्द होता है। वे अपनी इन्द्रियों का उपयोग करना पसन्द करते हैं। कार्यकर्त्री के रूप में हम नई सामग्री चुन सकते हैं, और बड़े समूह में या सर्कल टाइम के दौरान बच्चों को उससे परिचित करा सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर एक ऐसी मिलान किट है जिसमें आपस में मेल खाने वाली चीज़ें रखी हैं तो उन्हें वे चीज़ें दिखाएँ, और फिर उनसे अनुमान लगाने को कहें कि कौन-सी चीज़ किसके साथ मेल खाएगी। टोकरी में रखा एक छोटा-सा ताला उठाएँ, और पूछें कि उसे खोलने के लिए उन्हें क्या चाहिए। जब कोई बच्चा 'चाबी' कहे तो उसे चाबी ढूँढ़ने, और दोनों वस्तुओं को एक साथ रखने को कहें। इसी तरह, जूते और मोज़े, छोटा कप और प्लेट, आदि जैसी टोकरी में रखी कुछ और चीज़ों का मिलान करने के लिए भी कह सकते हैं।

बच्चों की अपनी पसन्द भी होती है। कुछ बच्चों को किताबें पढ़ना, पन्ने पलटना और तस्वीरें देखना अच्छा लग सकता है। कुछ ब्लॉक से आकृतियाँ बनाना पसन्द करते हैं। वे अपनी पसन्दीदा चीज़ों से बार-बार खेलना पसन्द करते हैं। यह अच्छी बात है। किसी चीज़ को बार-बार करने से वे उसमें 'विशेषज्ञ' बन जाएँगे। साथ ही, अगर आपको लगता है कि वे एक महीने से ज़्यादा समय से एक ही चीज़ से खेल रहे हैं तब उन्हें दूसरी चीज़ों के इस्तेमाल का सुझाव दें। जिस बच्चे को तस्वीरें देखना पसन्द है, उसे ब्लॉक का इस्तेमाल करके किताब में दिखाई गई कोई इमारत या गाड़ी बनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। आप उन कोनों के पास बच्चों के नाम के कार्ड या छोटे बच्चों की तस्वीरें भी रख सकते हैं, जहाँ आप उन्हें उस दिन ले जाना चाहते हैं। सुनिश्चित करें कि आप उन्हें पूरे हफ़्ते के दौरान हर कोने को देखने का मौक़ा दें। ऐसा करने के दूसरे रचनात्मक तरीक़ों के बारे में भी सोचें। उदाहरण के लिए, बच्चों से कहिए कि वे कोनों के नाम वाली चिटें उठाएँ। उनकी चिट पर जिस कोने का नाम लिखा हो, उस कोने में जाएँ।

**सीखने के कोने का उद्देश्य कक्षा में सामग्री को व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित करना है ताकि बच्चे इन सामग्रियों से अकेले, जोड़ों में या समूहों में जुड़ सकें। इस दौरान शिक्षक उनका मार्गदर्शन करते रहें।**

बहुत छोटे और कुछ बड़े बच्चे भी निर्धारित 20 या 30 मिनट तक एक कोने में बैठना पसन्द नहीं करते। इसलिए उन्हें कक्षा

में घूमने-फिरने का मौक़ा दें। 3 साल की उम्र के ज़्यादातर बच्चे एक ही सामग्री के साथ पूरे 20 या 30 मिनट नहीं खेल सकते। चूँकि छोटे बच्चों की ध्यान की अवधि कम होती है, हो सकता है कि वे 10 मिनट तक उसके साथ खेलें, और फिर दूसरी सामग्री उठा लें। जैसे-जैसे वे 3 से 6 साल की उम्र में पहुँचते हैं, उन्हें एक ही सामग्री के साथ ज़्यादा समय बिताना चाहिए।

*प्रश्न : मुझे कई भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। अपने समय का प्रबन्धन कैसे करूँ?*

उत्तर : प्रारम्भिक बाल्यावस्था कक्षा की शिक्षिका और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को कई अतिरिक्त ज़िम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं। इन सभी कार्यों को सन्तुलित करने की जद्दोजहद में ईसीई कार्यक्रम की गतिविधि उपेक्षित हो जाती है। हम, बिना किसी उद्देश्य के, बच्चों को उनकी इच्छानुसार कार्य करने के लिए छोड़ देते हैं।

इस स्थिति में सावधानीपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता होती है।

1. अपने कार्यों को प्राथमिकता दें। तय करें कि कौन-से कार्य दैनिक, साप्ताहिक या मासिक रूप से करने हैं।
2. अपने लिए एक समय सारिणी बनाएँ। इससे बेहतर योजना बनाने में मदद मिलेगी।
3. दैनिक समय सारिणी में सबसे पहले ईसीई कार्यक्रम का समय निर्धारित करें। उदाहरण के लिए, सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक।
4. अब अन्य कार्यों की योजना बनाना शुरू करें। विद्यालय के दिन की शुरुआत में और अन्त में अभिभावकों के साथ ऐसी बातचीत करनी हो सकती है, जो पहले से तय न हुई हो। विद्यालय के बाद अभिभावकों के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए 15 मिनट का समय निकालें। हर शनिवार को 2 घण्टे का समय रखें जब अभिभावक बिना किसी पूर्व सूचना के आकर आपसे बात कर सकें।
5. घर और समुदाय के दौरे दोपहर में, जब बच्चे सो रहे हों, या विद्यालय के समय के बाद, या शनिवार को किए जा सकते हैं। (मैं यह मानकर चल रही हूँ कि शाला-पूर्व आयु के बच्चों के विद्यालय में शनिवार को अवकाश रहता है।)
6. आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री के लिए—सुबह 9 से दोपहर 12 बजे के बीच 15 मिनट का ब्रेक लें। बच्चों की देखभाल के लिए सहायिका की मदद लें। अपने तात्कालिक कार्य करें। मसलन, उन 15 मिनटों में कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी भेजना। बच्चों के जाने के बाद या उनके सोने के दौरान नियमित रिकॉर्ड रखने, आदि जैसे बाक़ी कार्य किए जा सकते हैं।

खेल एक ऐसा स्वाभाविक तरीक़ा है, जिसके माध्यम से बच्चे अपने आस-पास की भौतिक और सामाजिक दुनिया के साथ अन्तःक्रिया करते हैं। हम उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण वयस्क होने के नाते खेल को प्रोत्साहित करें। हम देखते हैं कि बच्चे घण्टों खेल में डूबे रहते हैं। खेल सामग्री या शिक्षण सामग्री भी बच्चों को स्वतंत्र रूप से खोज-बीन करने, प्रयोग करने और सीखने में मदद करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए यदि हम छोटे बच्चों की कक्षाओं में खेल के साथ-साथ सावधानीपूर्वक चुनी गई सामग्री को भी शामिल कर सकें तो बहुत लाभ होगा।

*अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।*

**जिगिशा शास्त्री** अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा संकाय की अतिथि सदस्य हैं। ईसीसीई विशेषज्ञ के रूप में उन्हें चार दशकों से अधिक का अनुभव है। साथ ही वे निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के ईसीसीई कार्यक्रमों की संकल्पना और सहयोग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं।

सम्पर्क : jigisha.shastri@apu.edu.in

# शिक्षा की शुरुआत और नाटक

पारुल बत्रा दुग्गल

आँगनवाड़ी में आने वाले बच्चों के संकोच और झिझक को कम करने का एक तरीक़ा नाटक भी हो सकता है। ऐसा तरीक़ा जिसमें बच्चों को ख़ूब मज़ा आए, कुछ-न-कुछ नया करने की आज़ादी मिले, खिलखिलाने का, शरारतों का माहौल हो। इन सबके बीच उनका सीखना भी हो रहा हो। यह लेख ऐसी ही एक आँगनवाड़ी के बारे में है जहाँ कार्यकर्त्री ने नाटक को बच्चों के साथ संवाद करने, उनके आनन्द और सीखने का माध्यम बनाया।

भोपाल के कोलार इलाक़े में, कलियासोत नदी के किनारे दामखेड़ा नाम की एक बस्ती है। यहीं प्राथमिक शाला दामखेड़ा है, और इसी शाला के प्रांगण में स्थित है आँगनवाड़ी केन्द्र दामखेड़ा। यहाँ मीना कनौजिया साल 2006 से काम कर रही हैं। उन्होंने स्नातक तक पढ़ाई की है और अपनी नौकरी की शुरुआत से वे इसी आँगनवाड़ी में काम कर रही हैं।

मीनाजी हमेशा से ही महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा चलाए जा रहे सभी कार्यक्रमों और अभियानों में सक्रिय सहभागिता करती रही हैं। उन्होंने बच्चों की शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता को लेकर अभिभावकों को हमेशा जागरूक किया है। आँगनवाड़ी में आने वाली माताओं से वे हमेशा इस बारे में बात करती हैं कि वे बच्चों को घर पर क्या-क्या सिखा सकती हैं। जो कहानियाँ और कविताएँ वे आँगनवाड़ी में सिखाती हैं उन्हें वे माताओं को बच्चों के साथ घर पर दोहराने के लिए कहती हैं।

उन्होंने ऐसे टीएलएम बनाने की दिशा में भी काफ़ी काम किया है जो लम्बे समय तक काम आ सकते हैं। आँगनवाड़ी में जिन बोरियों में अनाज आता है उनसे किताबें रखने के लिए पॉकेट बोर्ड और कठपुतलियाँ बनाई हैं। वे नियमित रूप से बाल मेलों और बाल चौपाल का आयोजन करती रहती हैं, अपने विभाग की सेक्टर मीटिंग में सन्दर्भदाता की भूमिका भी निभाती हैं और शाला-पूर्व शिक्षा के अपने अनुभवों को साथी कार्यकर्त्रियों के साथ साझा करती हैं। मीनाजी ने आँगनवाड़ी में आने वाले 3 से 6 वर्ष के 30 बच्चों के साथ शाला-पूर्व शिक्षा के पाठ्यक्रम पर काम करते हुए दस से ज़्यादा नाटक तैयार किए हैं। आज उनकी आँगनवाड़ी का हर बच्चा नाटक में अभिनय करने में सक्षम है।

चित्र 1: संवाद और आनन्द को सीखने का माध्यम बनाना महत्त्वपूर्ण होता है

चित्र 2 : बीज बोने की गतिविधि और कहानियों पर आधारित नाटक करते बच्चे

## आँगनवाड़ी में कार्यकर्त्री द्वारा किया गया काम

शुरुआत में, बच्चे बिना नहाए ही आँगनवाड़ी आ जाते थे, इसलिए पहले उनकी साफ़-सफ़ाई पर ध्यान दिया। उनसे कहा गया कि वे नहाकर, साफ़-सुथरे बनकर आएँ। बस्ती के लोग मीनाजी से कहते थे कि आँगनवाड़ी में होता ही क्या है, और इतने छोटे बच्चों को क्या सिखाओगी? तब उन्होंने अभिभावकों से बात करनी शुरू की और इस बात के लिए राजी किया कि वे अपने बच्चों को रोज़ आँगनवाड़ी भेजें। साथ ही, उन्होंने अभिभावकों को भी आँगनवाड़ी आने को कहा। जब अभिभावक आँगनवाड़ी आते, वे देखते कि यहाँ अच्छी गतिविधियाँ हो रही हैं।

उन्होंने एक बार बाल चौपाल का आयोजन किया। इसमें जब बच्चों ने अभिभावकों के सामने नाटक का मंचन किया तब उनकी राय बदली। सभी अभिभावक अपने बच्चों को मंच पर अलग-अलग भूमिका निभाते देख आश्चर्यचकित हुए।

शुरुआती प्रशिक्षण के बाद कार्यकर्त्री ने शाला-पूर्व शिक्षा पर काम किया। बच्चे जल्द ही कविता-कहानियाँ सीख गए, और उन्हें मज़े से गाने और दोहराने लगे। वे कविता के पोस्टर में वर्ण पहचान करने लगे, और कबड्डी तथा अन्य खेलों के नियम जानने लगे। उन्हें लगा कि अब आगे ऐसा क्या काम किया जाए जो मेरे और बच्चों, दोनों के लिए चुनौतीपूर्ण हो। यही वह क्षण था जब उन्होंने नाटक तैयार करने की ठानी। और इस तरह उनका रुझान उन कहानियों की तरफ़ बढ़ा जिन पर नाटक तैयार किए जा सकते थे।

## नाटक की तैयारी

बच्चों के साथ नाटक करने की शुरुआत के बारे में पूछने पर मीनाजी कहती हैं, "पहले मैं बच्चों के साथ कविता-कहानियाँ सुनने-सुनाने पर ही काम करती थी। जब लगा कि बच्चे इन्हें अच्छे-से समझ रहे हैं तब मैंने नाटक पर काम करने का निश्चय किया। हालाँकि, मेरे मन में भी संशय था कि चार साल के बच्चे

> **पहले तो मैं बच्चों के साथ कविता-कहानियाँ सुनने-सुनाने पर ही काम करती थी। जब लगा कि बच्चे इन्हें अच्छे-से समझ रहे हैं तब मैंने नाटक पर काम करने का निश्चय किया।**

क्या नाटक कर भी पाएँगे! मैंने ख़ुद से कहा कि पहले यह काम किया जाए, फिर निर्णय लिया जाए। बच्चों को नाटक सिखाने से पहले कुछ तैयारी की। शाला-पूर्व शिक्षा की शिक्षण मार्गदर्शिका से ऐसी कहानियाँ चुनीं जिन पर नाटक किए जा सकते थे। ऐसी कुछ कहानियों के नाम हैं :

- चिड़ा-चिड़िया ('मेरा परिवार' थीम)
- अवनी और मटर का दाना ('सब्ज़ियाँ' थीम)
- आलू मालू कालू ('सब्ज़ियाँ' थीम)
- नीला फल ('फल' थीम)
- आसमान गिरा ('मौसम और समय' थीम)

नाटक की शुरुआती तैयारी के लिए पहले बच्चों को यह कहानियाँ बार-बार सुनाईं। सभी बच्चों से सुनीं भी ताकि उन्हें कहानी याद हो जाए। कहानी और उसके पात्रों पर बात की। मसलन, 'चिड़ा-चिड़िया' कहानी में चिड़िया कैसे आवाज़ करती है; चिड़िया को कहाँ देखा है; चिड़िया सुबह जल्दी क्यों आती है; आदि। बच्चों ने बहुत सारी बातें बताईं। तब मैंने बच्चों से सुबह जल्दी उठकर चिड़िया देखने को भी कहा। इससे वे सुबह जल्दी आँगनवाड़ी आने लगे। चूँकि कहानी में खिचड़ी का भी ज़िक्र था, अत: उनसे खिचड़ी कैसे बनती है; चिड़िया, खिचड़ी बनाने के लिए कौन-कौन-से दाने लाई; आपने बकरी चराने वाले को कहीं देखा है क्या; जैसे सवालों पर बातचीत की। इस

बातचीत से बच्चे कहानी और उसके क्रम को बेहतर समझ सके कि किस पात्र की क्या भूमिका है, और किस घटना के बाद कौन-सी घटना घटती है।

> **नाटक के द्वारा बच्चा आज जो समूह में कर रहा है, कल अकेले भी कर सकता है। कक्षाओं में नाटक करने के बाद बच्चे ख़ुद यह सोच पाते हैं कि उन्होंने क्या बेहतर किया और क्या बेहतर हो सकता है।**

मैंने उन्हें स्वयं अपना पात्र चुनने का मौक़ा दिया ताकि वे निर्णय ले सकें। जब मेरे द्वारा पात्र चयनित किए जाते थे तो वे आपस में लड़ते थे, लेकिन स्वयं किस पात्र की भूमिका करनी है, अच्छे-से चुनते थे। बच्चों के समूह बना दिए थे और सभी समूहों को एक ही नाटक की तैयारी करवाई ताकि सबको मौक़ा मिल सके, और कुछ बच्चों के न आने पर नाटक प्रभावित न हो। उन्होंने नाटक में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कक्षा में इस तरह एक ही कहानी पर चार-पाँच समूहों द्वारा नाटक तैयार और प्रस्तुत किया जाता था।

## नाटक की बारीक़ियाँ

**स्टेज और तैयारी**

कार्यकर्त्री ने कक्षा के एक कोने में पुरानी साड़ी से बना हुआ पर्दा भी लगवाया है। वे कहती हैं, "बच्चे नाटक शुरू करने से पहले पर्दा गिरा लेते हैं, और पर्दे के पीछे से बारी-बारी आते हैं। 'चिड़ा-चिड़िया' कहानी के नाटक के लिए उन्हें चिड़िया के पंख और चोंच बनाकर दे देती हूँ। इन्हें लगाकर वे चिड़िया की तरह फुदक-फुदककर संवाद बोलते हैं। इसी तरह, अन्य नाटकों में भी पात्रों के अनुसार बच्चों की मदद से मुखौटे बनाकर देती हूँ।"

## नरेशन के साथ नाटक करना, और स्वयं संवाद बोलकर नाटक करना

बातचीत के दौरान यह प्रश्न आना ही था कि इतने छोटे बच्चे नाटक के संवाद कैसे तैयार कर पाते हैं। कार्यकर्त्री ने बताया, "बच्चों को दोनों तरीक़ों से नाटक करना भाता है। अलग-अलग कहानियों में उनकी पसन्द भी अलग है। उदाहरण के लिए, 'आसमान गिरा' कहानी में वे शुरुआती भूमिका के बाद नरेशन के साथ नाटक करना नहीं चाहते। वे कहते हैं, 'मैडम, बस अब आप रुक जाओ! शेर से हम बोलेंगे–"राजाजी आसमान गिरा, आसमान गिरा"।' बच्चे अपनी आवाज़ में पात्र के अनुसार उतार-चढ़ाव भी कर लेते हैं। मसलन, शेर की आवाज़ में दहाड़ते हुए बोलना, ख़रगोश की आवाज़ में धीरे-से बोलना, आदि। इसी तरह 'नीला फल' कहानी में भी उन्हें स्वयं संवाद बोलकर अभिनय करना अच्छा लगता है, क्योंकि यह बहुत छोटी है। लेकिन 'चिड़ा-चिड़िया' में वे नरेशन के साथ नाटक करना पसन्द करते हैं, क्योंकि यह कहानी बड़ी है, और इसमें पात्र भी ज़्यादा हैं। इस प्रक्रिया में वे अभिनय और संवाद में अपने ढंग से कुछ जोड़ते-घटाते यानी इम्प्रोवाइज़ भी करते हैं। इसमें उन्हें बहुत मज़ा आता है।"

कार्यकर्त्री बताती हैं, "अवलोकन यह भी रहा है कि नाटक करने से बच्चों की झिझक भी कम हुई है और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा है। अब बाहरी व्यक्तियों के आने पर भी वे बेधड़क नाटक कर पाते हैं। उनके माता-पिता भी उन्हें नाटक करते देख बहुत ख़ुश होते हैं। हमारे यहाँ नामांकन भी बढ़ गया है, और अब बहुत-से बच्चे आँगनवाड़ी आने लगे हैं।"

## शाला-पूर्व शिक्षा और नाटक

कार्यकर्त्री ने यह भी साझा किया कि नाटक पर काम करने में शिक्षकों को अकसर यह भय होता है कि कक्षा में शोर होगा, बच्चे यहाँ से वहाँ भागेंगे, इतने छोटे बच्चे निर्देशों को समझ नहीं सकेंगे, आदि। लेकिन जो शिक्षक इसे कर लेते हैं, वे समझ पाते हैं कि नाटक पर काम करना एक बहुआयामी अनुभव है। आमतौर पर यह माना जाता है कि नाटक पर काम करने से भाषाई विकास होगा, लेकिन इससे न केवल भाषाई, बल्कि संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास भी होता है। नाटक करने के दौरान सभी क्षमताओं (जैसे–चेहरे के हाव-भाव, आवाज़ का उतार-चढ़ाव, शारीरिक गतिशीलता और संवेदनाओं को महसूस कर पाना, बड़े समूह के सामने अपनी बात रखना, कल्पनाशक्ति, सही टाइमिंग और कारण तथा प्रभाव को समझना, आदि) का बेहतर इस्तेमाल होता दिखाई देता है। इसलिए नाटक को शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करने से दूरगामी परिणाम मिलते हैं। नाटक के द्वारा बच्चा आज जो समूह में कर रहा है, कल अकेले भी कर सकता है। कक्षाओं में नाटक करने के बाद वे ख़ुद यह सोच पाते हैं कि उन्होंने क्या बेहतर किया और क्या बेहतर हो सकता है।

मीनाजी कहती हैं, "यदि आप भी बच्चों का अवलोकन करेंगे तो पाएँगे कि वे कल्पनाशील होते हैं, और दैनिक जीवन में झूठ बोलना, बहाने करना और अभिनय करना जानते हैं। वे अलग-अलग परिस्थितियों में अलग तरह से व्यवहार करते हैं, क्योंकि यह हमारे दिमाग़ की विकास प्रक्रिया का एक स्वाभाविक हिस्सा है। विद्यालय जाने से पूर्व ही बच्चे अकेले रोल-प्ले करते हुए या साथियों के साथ विभिन्न भूमिकाएँ निभाते हुए दिख रहे होते हैं। इनमें वे कभी माता-पिता की नक़ल कर रहे होते हैं, कभी परिवार के किसी अन्य सदस्य की। मैंने उनकी इसी क्षमता को और निखारने की एक कोशिश की है।"

## नीतिगत दस्तावेज़ों में कला शिक्षा

कार्यकर्त्री द्वारा किए जा रहे काम और उनके सन्दर्भ को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के प्रकाश में देखें तो यह नीति शाला-पूर्व शिक्षा में चित्रकला, पेंटिंग, अन्य दृश्य कलाओं, दस्तकारी, नाटक, कठपुतली, संगीत, नृत्य और शारीरिक गतिविधियों को शामिल करने की वकालत करती है। *एनसीएफ़-एफ़एस 2022*

के अनुसार कला और शिल्प बच्चों को अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक और माध्यम प्रदान करते हैं।

शाला-पूर्व शिक्षा में कला से जुड़े सीखने के प्रतिफल मोटे तौर पर कुछ इस तरह से दिखते हैं :

- बच्चे तरह-तरह की कला सामग्री को पकड़ना और उनका उपयोग करना सीख सकें;
- शरीर के माध्यम से लय और ताल की खोज कर सकें;
- विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए संगीत और नाटक का उपयोग कर सकें;
- कला के माध्यम से विभिन्न अभिव्यक्तियों, विचारों और भावनाओं की पहचान कर सकें; आदि।

शाला-पूर्व शिक्षा में कला शिक्षा का प्रमुख उद्‌देश्य बच्चे की पाँचों इन्द्रियों का विकास करना है। इसलिए इस शिक्षा का पाठ्यक्रम इस तरह से रचा-बुना गया हो कि उसमें उन्हें कलाओं से जुड़े तरह-तरह के अनुभव देने के पर्याप्त अवसर हों जिनसे उनका सर्वांगीण विकास हो सके। ऐसा विकास बच्चों को नाटक, गीत-संगीत, नृत्य, चित्रकारी जैसे कला के विभिन्न माध्यमों से जुड़ाव महसूस करने के अवसर दिए जाने पर ही सम्भव है। शाला-पूर्व शिक्षा इन सभी से जुड़ाव की शुरुआत करने के लिए उपयुक्त है।

## समेकन

जैसा कि कहा जाता है, कला में केवल अन्तिम उत्पाद यानी मंचन ही महत्त्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि पूरी प्रक्रिया अधिक मायने रखती है। इस प्रक्रिया के दौरान बच्चों ने क्या सीखा, क्या हासिल किया, यही महत्त्व की बात है। बच्चों को इस दौरान पूरी स्वतंत्रता दी गई कि वे ख़ुद तय करें कि उन्हें क्या करना है, और कैसे करना है। बच्चों ने कहानियों को सुना, समझा। उन्होंने तय किया कि नाटक में कब उन्हें नरेशन की ज़रूरत है, और कब वे ख़ुद संवाद बोल सकते हैं। लेकिन यह सब सम्भव हो पाया कार्यकर्त्री के बच्चों में विश्वास और प्रेरणा के कारण। उनके इसी विश्वास का परिणाम है कि इस आँगनवाड़ी में 4-5 साल के बच्चे भी वह कर पा रहे हैं जिसे करना आमतौर पर बड़े बच्चों और उनके शिक्षकों को भी कठिन लगता है।

**पारुल बत्रा दुग्गल** 2013 से मध्य प्रदेश के भोपाल में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। यहाँ उन्होंने शुरुआती पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं को गहरे रूप से समझा है और इस समय शाला-पूर्व शिक्षा से जुड़ी हैं। आपकी बच्चों के लिए विभिन्न पुस्तकें समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं।

सम्पर्क : parul.duggal@azimpremjifoundation.org

# प्रारम्भिक बाल्यावस्था की जगहों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे

भुवनेश्वरी बी

आँगनवाड़ी केन्द्र में आने वाले बच्चों की सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के अलावा उनकी शारीरिक क्षमताओं को समझना भी कार्यकर्त्री के लिए ज़रूरी है। कुछ बच्चे ऐसे हो सकते हैं जिन्हें शारीरिक अक्षमता के चलते सीखने में मुश्किलें आती हैं। यह लेख ऐसे बच्चों को, उनकी मुश्किलों को समझने और उनके अनुसार सिखाने की रणनीति के बारे में है।

चित्र 1 : विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की ज़रूरत को समझकर उसके मुताबिक़ गतिविधियाँ डिज़ाइन करना ज़रूरी है

अमोघ चार साल का है। वह अभी दो हफ़्ते पहले से ही आँगनवाड़ी आने लगा है। शुरुआत में उसे किसी के साथ खेलना पसन्द नहीं था, अतः कार्यकर्त्री चिन्तित थीं। लेकिन एक दिन, कार्यकर्त्री को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि खेल के दौरान, अमोघ एक छोटे समूह के साथ खेलने लगा। उसके बाद से उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह एक ख़ुशमिज़ाज, चंचल और उत्साही बच्चा था।

कार्यकर्त्री पिछले चार महीनों से अनीशा के साथ भी काम कर रही हैं। अनीशा हमेशा अपने साथियों के साथ खेलने से बचती है। जब कोई उसके पास खेलने के लिए आता है तो वह परेशान हो जाती है। वह काल्पनिक / बनावटी खेलों (pretend play) में बिल्कुल भी हिस्सा नहीं लेती। जैसे—बच्ची / बच्चे द्वारा डॉक्टर के उपकरणों की खिलौना किट के सामान से बनावटी मरीज़ को देखने का खेल खेलना, आदि। जब कोई उससे बात करता है तो वह उससे आँखें नहीं मिलाती। छोटी-छोटी आवाज़ें उसे चौंका देती हैं और वह रोने लगती है। कार्यकर्त्री इस सोच में हैं कि क्या वह अमोघ की तरह ही साथियों के साथ घुल-मिल पाएगी, या अब उन्हें किसी विशेषज्ञ की मदद लेनी चाहिए।

ये बच्चों की कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं जो शिक्षकों के मन में अनिश्चितता पैदा करती हैं। बच्चे के प्रारम्भिक वर्षों के दौरान शिक्षक या उनकी सीखने में मदद करने वाले जो व्यक्ति होते हैं, वही उनके विकासात्मक सफ़र के बारे में सबसे पहली प्रतिक्रिया देने वाले भी होते हैं। वे ही वो व्यक्ति हो सकते हैं जो कुछ बच्चों में विद्यमान उन सूक्ष्म संकेतों को सबसे पहले पहचान सकते हैं जो अकसर नज़र ही नहीं आते। इन संकेतों में वाणी के विकास में थोड़ी देरी, कुछ सूक्ष्म गत्यात्मक गतिविधियों को करने में कठिनाई, कुछ विशिष्ट प्रकार के उद्दीपन जैसे शोर या तेज़ रोशनी के प्रति अलग-सी या तीव्र प्रतिक्रियाएँ देना या

> सभी बच्चे एक सतत क्रम में विकसित होते हैं, लेकिन एक ही गति से नहीं। विकास के मुख्य पड़ावों को जानने से कार्यकर्त्रियों को उन पैटर्न को देखने में मदद मिलेगी जो किसी चुनौती का संकेत दे सकते हैं।

साथियों के साथ बातचीत या खेलने में कठिनाई आदि शामिल हो सकते हैं।

कभी-कभी अभिभावक भी इन संकेतों को समझ नहीं पाते हैं। और अगर वे समझ भी जाते हैं तो उन्हें उम्मीद होती है कि विद्यालय में इन बातों पर ध्यान दिया जाएगा। हालाँकि अभिभावकों की उम्मीदें स्वाभाविक हैं, लेकिन अगर इन संकेतों पर ध्यान नहीं दिया जाता या उनकी सूचना नहीं दी जाती तो ये चीज़ें बच्चों के दीर्घकालिक विकास के परिणामों को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं।

इन विकासात्मक अवस्थाओं में लगातार देरी विकासात्मक अक्षमताओं में बदल सकती है। प्रारम्भिक वर्षों में बच्चों में देखी जाने वाली सामान्य अक्षमताओं में सम्प्रेषण / बोलने और भाषा सम्बन्धी अक्षमताएँ, बौद्धिक अक्षमता, श्रवण अक्षमता, दृश्य अक्षमता, शारीरिक अक्षमता, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार, आदि शामिल हैं। कुछ अक्षमताएँ दिखाई देती हैं, जबकि अन्य को समझना आसान नहीं होता है।

## देरी और सीखने में आने वाली मुश्किलों की पहचान करने में शिक्षक बेहतर स्थिति में क्यों होते हैं ?

शिक्षक प्रतिदिन कई घण्टे बच्चों के अवलोकन और उनके साथ काम करने में बिताते हैं। वे कक्षा में, खेल के दौरान, और भोजन के समय उनका अवलोकन कर पाते हैं। इससे उन्हें बच्चों के उन पैटर्न को देखने की एक अनूठी नज़र मिलती है, जबकि अन्य लोगों से ये पैटर्न नज़रन्दाज़ हो सकते हैं।

## शिक्षकों या आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को किन चीज़ों से लैस करना चाहिए ?

**1. विकासात्मक पड़ावों को जानना :**
शिक्षकों या आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को यह जानकारी हो कि किसी विशेष आयु वर्ग के बच्चे से आमतौर पर क्या अपेक्षित है। उदाहरण के लिए, 3 साल के बच्चे को वाक्यों का उपयोग करके बोलने में सक्षम होना चाहिए। लेकिन अगर 4 साल की उम्र में भी कोई बच्चा छोटे-छोटे वाक्यांशों में बोलता है, या उसकी शब्दावली बहुत सीमित है तब बच्चे को मूल्यांकन के लिए भेजने की आवश्यकता है।

**2. वस्तुनिष्ठ रूप से अवलोकन करना :**
शिक्षकों को बच्चों के बारे में जल्दबाज़ी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए, और उनका अवलोकन करते रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे के काम पर टिप्पणी करते समय, यह लिखने के बजाय, कि "वह गणित में बहुत लापरवाह है", शिक्षक इस प्रकार से लिख सकते हैं, "अतिरिक्त समय दिए जाने पर भी उसने गणित के तीन प्रश्न हल नहीं किए, और दो अन्य प्रश्नों में + और - चिह्नों को आपस में बदल दिया।"

**3. जब सम्भव / आवश्यक हो तो स्क्रीनिंग टूल का उपयोग करना :**
शिक्षक जाँच नहीं कर सकते, लेकिन सरल स्क्रीनिंग टूल या चेक लिस्ट का उपयोग करके यह समझ सकते हैं कि बच्चा अपनी उम्र के अनुसार अपेक्षाओं को पूरा कर रहा है या नहीं, और फिर उसे मूल्यांकन के लिए भेज सकते हैं।

**4. उदाहरणों के साथ अपने अवलोकनों को दर्ज करना :**
शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों के व्यवहार की आवृत्ति और सन्दर्भ को नोट करके उनके व्यवहार में पैटर्न ढूँढ़ने की कोशिश करें। वे बच्चों के बारे में बताने के लिए उनके चित्रों, वर्कशीट और लेखन के नमूनों का उपयोग कर सकते हैं। अभिभावकों या

चित्र 2 : बच्चों के कामों में छोटे-छोटे बदलाव से वे अपने काम पर ज़्यादा ध्यान देते हैं

> जब भी किसी बच्चे में देरी या अक्षमता का सन्देह हो तो उसके परिवार से बात करनी चाहिए, और बच्चे को मूल्यांकन के लिए किसी विकासात्मक बाल रोग विशेषज्ञ, बाल / नैदानिक मनोवैज्ञानिक, ऑडियोलॉजिस्ट, वाणी भाषा थेरेपिस्ट, प्रोफ़ेशनल थेरेपिस्ट या पुनर्वास मनोवैज्ञानिक के पास भेजना चाहिए।

अन्य प्रोफ़ेशनल के साथ बच्चे की समस्या के बारे में बात करते समय ये दस्तावेज़ प्रमाण के रूप में काम कर सकते हैं।

## क्या याद रखना चाहिए ?

सभी बच्चे एक सतत क्रम में विकसित होते हैं, लेकिन एक ही गति से नहीं। विकास के मुख्य पड़ावों को जानने से शिक्षकों को उन पैटर्नों को देखने में मदद मिलेगी जो किसी चुनौती का संकेत दे सकते हैं। हालाँकि, हमें यह याद रखना होगा कि ये मुख्य पड़ाव अन्तिम समय सीमा नहीं हैं। हो सकता है 18 महीने का कोई बच्चा 10-15 शब्द बोलता हो, जबकि दूसरा 18 महीने का बच्चा शब्दों को मिलाकर वाक्य बोलना शुरू कर दे। अब हम कह सकते हैं कि दोनों अपेक्षित विकास सीमा में हैं। अन्तर का मतलब हमेशा देरी नहीं होता। जो बच्चा समूह में शान्त रहता है, वह शिक्षक के साथ अकेले में या घर पर अपनी मातृभाषा में बहुत बातूनी हो सकता है।

## बच्चे का मूल्यांकन कब करवाना चाहिए ?

जब हम देखते हैं कि :

- 2 साल की उम्र तक बच्चे की शब्दावली में 50 सार्थक शब्द नहीं हैं।
- 3 साल की उम्र तक बच्चा वाक्यों में बोलने में सक्षम नहीं है।
- 2 साल की उम्र में बच्चा अपने-आप या स्वतंत्र रूप से चलने में असमर्थ है।
- बच्चा किसी से भी आँखें मिलाने से कतराता है, काल्पनिक / बनावटी खेलों में शामिल नहीं होता है।
- रोज़मर्रा की आवाज़ों पर ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया करता है, और कुछ ख़ास बनावटों को छूने से मना करता है।
- ग़ुस्से से भड़क उठता है या बहुत अलग-थलग रहता है।

बच्चे का अवलोकन करते समय, शिक्षकों को बहुत सावधानी बरतने की ज़रूरत है। बिना कोई दख़ल दिए यह देखना चाहिए कि बच्चा स्वाभाविक रूप से क्या करता है। बिना किसी पूर्वाग्रह के अवलोकनों को दर्ज करना बहुत ज़रूरी है। हम उसके व्यवहार में पैटर्न देखते हैं, और यह जानने की कोशिश करते हैं कि क्या कक्षा, खेल के मैदान जैसे सभी परिवेशों में एक-सा पैटर्न ही नज़र आ रहा है। हमें यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि क्या उसका व्यवहार उसके रोज़मर्रा के कामकाज को प्रभावित कर रहा है; और क्या उसके कौशल की कमी उसके सीखने में रुकावट बन रही है?

## ऐसे अभिभावकों से कैसे बात करें जो सच्चाई स्वीकारने से इन्कार कर रहे हैं ?

पहली बात तो यह कि हमें अभिभावकों के साथ अपनी राय नहीं, बल्कि अपने ख़ास अवलोकन साझा करने चाहिए। उनसे बात करते समय हमें समानुभूति रखनी चाहिए। बच्चे पर कोई लेबल

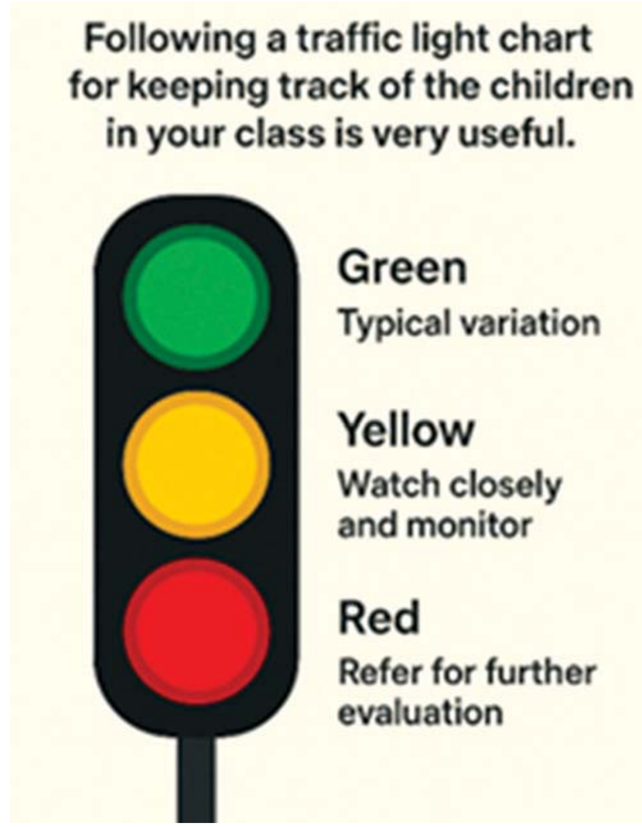


चित्र 3 : ट्रैफिक सिग्नल हरी, पीली, लाल बत्ती का चित्र

लगाने के बजाय इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि उसकी मदद कैसे की जाए। उदाहरण के लिए, हम यह नहीं कहें, "मुझे लगता है कि आपके बच्चे को ऑटिज़्म हो सकता है। मैं पक्के तौर पर तो नहीं कह सकता / सकती, लेकिन क्या आप उसका मूल्यांकन करवा सकते हैं?" इसके बजाय, हम यूँ कहें, "मैंने देखा है कि आपका बच्चा हमेशा अकेले खेलना चाहता है, और जब मैं उससे बात करता / करती हूँ तो वह मेरी तरफ़ देखने से कतराता है। मैंने यह भी देखा है कि वह बाहर के शोर से बहुत परेशान हो जाता है। अच्छा हो यदि किसी बाल रोग विशेषज्ञ से मिलकर उनकी राय ले ली जाए ताकि हमें पता चल सके कि उसकी मदद कैसे करें।" इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि आगे आने वाली समस्याओं से बचने के लिए बच्चे की मदद जल्द-से-जल्द की जाए।

## बच्चों को किसके पास भेजना चाहिए ?

जब भी बच्चों मे किसी देरी या अक्षमता का सन्देह हो तो उनके परिवार से बात करनी चाहिए, और बच्चे को मूल्यांकन के लिए किसी विकासात्मक बाल रोग विशेषज्ञ, बाल / नैदानिक मनोवैज्ञानिक, ऑडियोलॉजिस्ट, वाणी भाषा थेरेपिस्ट, प्रोफ़ेशनल थेरेपिस्ट या पुनर्वास मनोवैज्ञानिक के पास भेजना चाहिए।

## प्रारम्भिक शिक्षा के स्थानों को और अधिक समावेशी कैसे बना सकते हैं ?

जैसे ही शिक्षकों / आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को पता चले कि बच्चे को अतिरिक्त मदद की ज़रूरत है, उसके साथ काम करना

शुरू कर देना चाहिए। जब तक हमें किसी विशेषज्ञ द्वारा सुझाव मिले, हम रोज़मर्रा के कामों में छोटे-छोटे बदलाव कर सकते हैं। यह बदलाव बच्चे के लिए बहुत लाभकारी होंगे। जैसे अगर कोई बच्चा ध्यान केन्द्रित नहीं कर पा रहा है तो हम कक्षा में एक शान्त कोना बनाने पर विचार कर सकते हैं। बच्चा उस निर्धारित स्थान पर चुपचाप बैठकर अपना काम पूरा कर सकता है। इस तरह के कोने उसे शान्त होने और अपने काम पर ज़्यादा ध्यान देने में मदद करेंगे। अगर किसी बच्चे को एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में जाने में दिक़्क़त होती है, और वह अपनी दिनचर्या पर बहुत ज़्यादा निर्भर रहता है तो चित्र 4 में दी गई दृश्य अनुसूची का इस्तेमाल करना अच्छा रहेगा। दृश्य अनुसूची से बच्चे को दिनचर्या, और आगे क्या करना है, यह समझने में मदद मिलेगी।

चित्र 4 : दृश्य अनुसूची से बच्चों को दिनचर्या समझने में मदद मिलती है

बच्चों को छोटे-छोटे, स्पष्ट चरण बताकर प्रतिक्रिया देने के लिए अतिरिक्त समय देने से उन्हें महसूस होगा कि वे कक्षा की गतिविधियों से जुड़े हुए हैं, और उन्हें कक्षा में स्वीकारा जा रहा है। जिन बच्चों को दोस्त बनाने में दिक़्क़त होती है, उनकी मदद करने के लिए शिक्षकों को चाहिए कि वे कक्षा के अन्य बच्चों को उन बच्चों के साथ घुलने-मिलने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चे क्या कर सकते हैं, इस बात पर ध्यान देने की कोशिश करें, और बच्चे के स्तर से ही शुरुआत करें। उदाहरण के लिए, अगर पाँच साल का बच्चा छोटी चीज़ें नहीं पकड़ पाता, लेकिन उसे पेंटिंग करना पसन्द है तो शिक्षक उसे एक बड़ा पेंटब्रश और एक बड़ा काग़ज़ या चार्ट देकर धीरे-धीरे छोटी चीज़ें दे सकते हैं। इससे बच्चे को अपने आत्मसम्मान से समझौता किए बिना सीखने में मदद मिलेगी।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों का अवलोकन, अनुक्रियात्मक शिक्षण और परिवारों के साथ संवेदनशील जुड़ाव, ये सारी बातें सभी बच्चों के विकास के सफ़र में बहुत मददगार हो सकती हैं, ख़ासकर विकासात्मक रूप से कमज़ोर बच्चों के विकास में। अभिभावकों के इन्कार करने पर भी यदि तुरन्त कार्यवाही की जाए तो कई बच्चों को आगे बढ़ने में मदद मिलेगी, अन्यथा वे पिछड़ सकते हैं। हमें यह समझना चाहिए कि शिक्षक ही परिवार के बाहर वाले ऐसे लोग होते हैं जो बच्चे का बारीक़ी से अवलोकन करते हैं। वे कुछ ऐसे पैटर्न देखते हैं जो चिन्ता का विषय हो सकते हैं। जब शिक्षक सहानुभूतिपूर्वक कार्य करते हैं, बच्चों के लिए अवसरों के द्वार खुल जाते हैं।

*अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।*

**भुवनेश्वरी बी** अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु के शिक्षा संकाय में कार्यरत हैं। वे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा और अधिगम अक्षमता वाले बच्चों के शिक्षण से सम्बन्धित विषयों का अध्यापन करती हैं। उन्हें भाषा, साक्षरता और ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार, आदि के शोध में रुचि है। अध्यापन के अलावा, वे यूनिवर्सिटी में अक्षमता समावेशन जैसे कार्यक्रमों का नेतृत्व भी करती हैं।

सम्पर्क : bhuvaneswari.b@apu.edu.in

# आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री की मदद के लिए सहयोगी तंत्र की भूमिका

श्रेष्ठा मिश्रा और रजत शर्मा

आँगनवाड़ी केन्द्र के लिए सुपरवाइज़र की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ के कुछ आँगनवाड़ी केन्द्रों में हो रहे कामों के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यह लेख दर्शाता है कि सुपरवाइज़र विभिन्न गतिविधियों को करने में कार्यकर्त्रियों की मदद कर रहे हैं। इससे आँगनवाड़ी केन्द्रों में बदलाव दिखने लगा है। उनके द्वारा किए जा रहे मार्गदर्शन और सहयोग की वजह से कार्यकर्त्रियों ने एक दूसरे से अपने काम व विचार को साझा करना भी शुरू किया है जिससे इन केन्द्रों पर मिलकर सीखने की संस्कृति पनप रही है।

चित्र 1 : आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को मिलने वाला प्रोत्साहन व मार्गदर्शन उनका काम मज़ेदार व आसान बनाता है

एक सुपरवाइज़र आँगनवाड़ी केन्द्र के दौरे पर थीं। उन्होंने देखा कि आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को बच्चों को सँभालने में कठिनाई हो रही थी। उनके पास बहुत कम खिलौने थे, और उनमें से ज़्यादातर टूटे हुए थे। बच्चे ऊब रहे थे, लेकिन सभी बच्चों को एक साथ गतिविधियों में शामिल करना मुश्किल था। सुपरवाइज़र ने कार्यकर्त्री को एक रनिंग ब्लैकबोर्ड का उपयोग करने का सुझाव दिया। उदाहरणस्वरूप, उन्होंने एक गतिविधि करके दिखाई। उन्होंने चॉक ली, उसके छोटे-छोटे टुकड़े किए, और प्रत्येक बच्चे को एक टुकड़ा दिया। फिर उन्होंने रनिंग ब्लैकबोर्ड पर प्रत्येक बच्चे के लिए जगह चिह्नित की, हर बच्चे को उसकी जगह दिखाई, और उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि उन्होंने जो कुछ भी देखा या सुना हो, उसका चित्र बनाएँ या उसके बारे में लिखें। कुछ बच्चे खड़े हो गए, कुछ अपनी निर्धारित जगह के सामने ज़मीन पर बैठ गए, और चित्र बनाने, लिखने या रेखाएँ खींचने लगे।

> **"आँगनवाड़ी सुपरवाइज़र बदलाव के प्रतिनिधि होते हैं। वे जिस अच्छे अभ्यास को किसी एक आँगनवाड़ी में शुरू करते हैं, उसे कई आँगनवाड़ी केन्द्र आसानी से अपना लेते हैं।"**

इस गतिविधि के माध्यम से सभी बच्चे काम में मशग़ूल थे, ख़ुशी-ख़ुशी अपनी बात कह रहे थे और कार्यकर्त्री व सुपरवाइज़र को बता रहे थे कि उन्होंने क्या बनाया है। कार्यकर्त्री ने इस अनुभव

को अपने सेक्टर के व्हाट्सऐप ग्रुप पर अन्य कार्यकर्त्रियों के साथ साझा किया। कुछ अन्य कार्यकर्त्रियों ने भी यही रणनीति अपनानी शुरू कर दी।

आँगनवाड़ी सुपरवाइज़र बदलाव के प्रतिनिधि होते हैं। वे जिस अच्छे अभ्यास को किसी एक आँगनवाड़ी में शुरू करते हैं, उसे कई आँगनवाड़ी केन्द्र आसानी से अपना लेते हैं।

आमतौर पर एक सुपरवाइज़र को 8-12 गाँवों में फैले 20-25 आँगनवाड़ी केन्द्रों के संचालन को देखना होता है। उसका काम आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को नियमित सहायता प्रदान करना है ताकि वे बच्चों के साथ कुशलतापूर्वक काम कर सकें। उसके काम में शामिल हैं, केन्द्र में होने वाले काम को ध्यान से देखना; आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों का प्रशिक्षण; पोषण और प्रारम्भिक बाल्यावस्था गतिविधियों का अवलोकन व देखरेख; और समुदायों के साथ अच्छा सामंजस्य बनाना।

सेक्टर सुपरवाइज़रों को अपने सेक्टर की आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को सहयोग देने के लिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा बहुआयामी अप्रोच के माध्यम से सहायता प्रदान की जाती है। यह अप्रोच काफ़ी कारगर रही है। हमारा मानना है कि अप्रोच के तहत हम जिन तरीक़ों का अनुसरण करते हैं, उनसे आँगनवाड़ी के काम करने के तरीक़ों में काफ़ी बदलाव आया है। इन तरीक़ों ने सुपरवाइज़र और कार्यकर्त्रियों के बीच समन्वय में उल्लेखनीय सुधार किया है, क्योंकि इसके कारण सुपरवाइज़र की भूमिका निगरानी करने की न होकर एक सहयोगी की हो गई है।

## आँगनवाड़ी केन्द्रों का नियमित दौरा

आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को अपने बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में शामिल करना होता है, और ऐसा करने में उन्हें कई बार चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जब सुपरवाइज़र नियमित रूप से किसी आँगनवाड़ी केन्द्र का दौरा करते हैं तो वे इन गतिविधियों में कार्यकर्त्री की मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को किसी समूह गतिविधि में सभी बच्चों को सँभालने या व्यवस्थित करने में सहायता की आवश्यकता होती है, सुपरवाइज़र उन्हें छोटी अवधि वाली कुछ गतिविधियों के बारे में बताते हैं ताकि वे अपनी कक्षा का बेहतर संचालन कर सकें।

कार्यकर्त्रियों को साप्ताहिक पाठ योजनाएँ बनाने, और उनका क्रियान्वयन करने में भी सहायता प्रदान की जाती है। उदाहरणस्वरूप, एक आँगनवाड़ी केन्द्र में 21 बच्चे थे। कार्यकर्त्री ने सुपरवाइज़र की मदद से 10 दिनों की अवधि के लिए एक पाठ योजना तैयार कर उसे क्रियान्वित किया। हर दिन वे बच्चों की आयु-वार गतिविधियों को वीडियो और चित्रों के रूप में रिकॉर्ड करतीं, और सेक्टर व्हाट्सऐप ग्रुप पर साझा करती थीं। वे एक या दो विशेषताओं पर भी प्रकाश डालतीं। मसलन, बच्चे पूरी प्रक्रिया के दौरान ख़ुश थे; बच्चों ने गतिविधि करने के बाद अपनी भावनाएँ साझा कीं; बच्चे इस प्रक्रिया के दौरान एक दूसरे की मदद कर रहे थे; आदि। कार्यकर्त्री यह भी बताती थीं कि वे किस प्रकार बच्चों को बोलने और अपनी बात साझा करने का अवसर दे रही थीं, किस प्रकार प्रत्येक बच्चे की बात सुन रही थीं, और उन्हें कैसे प्रतिक्रिया दे रही थीं। इस बात ने समूह की अन्य कार्यकर्त्रियों को भी प्रतिदिन एक या दो गतिविधियाँ चुनने और उन्हें अपने केन्द्रों में दोहराने के लिए प्रेरित किया।

*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-फ़ाउण्डेशनल स्टेज (एनसीएफ़-एफ़एस)* में उल्लिखित सीखने के प्रतिफल और बच्चों के आयु समूहों के अनुरूप, उनको थीम-आधारित अधिगम में शामिल किया जा रहा है। इस दिशा में हाल ही में, कुछ सुपरवाइज़र और कार्यकर्त्रियों ने बच्चों के विकास के पहलुओं, जैसे कि लिखना और रंग भरना, पर अधिक गहराई से काम करना शुरू कर दिया है। सभी सुपरवाइज़र और कार्यकर्त्रियों ने मिलकर वर्कशीट तैयार की हैं। उदाहरण के लिए, शीट में आकृतियों को जोड़ने और रंग भरने के लिए बिन्दीदार रेखाएँ बनाई हैं। बच्चों को रनिंग ब्लैकबोर्ड पर चित्र बनाने और लिखने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है।

इन नियमित दौरों के माध्यम से, सुपरवाइज़र निम्नलिखित तरीक़ों से सहायता कर सकते हैं :

**1. अभ्यासों में सुधार**

सुपरवाइज़र द्वारा गतिविधियों का प्रदर्शन कार्यकर्त्रियों को उनके थीम-आधारित शिक्षण को मज़बूत बनाने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, जानवरों पर आधारित थीम पर, बच्चों को मशग़ूल करने के लिए प्रभावी तरीक़े के रूप में कविताओं और कहानियों का उपयोग किया जा सकता है। सुपरवाइज़र द्वारा उँगली या छोटी, पतली लकड़ी से बनी कठपुतलियों का उपयोग करके और आवाज़ में उतार-चढ़ाव के साथ कहानी सुनाने का प्रदर्शन किया जाता है। इससे कार्यकर्त्री को यह समझने में मदद मिलती है कि कठपुतलियों और भावों के इस्तेमाल से कहानी सुनाना कैसे ज़्यादा प्रभावी हो जाता है।

> किसी आँगनवाड़ी केन्द्र में एक कार्यकर्त्री कहानी सुनाने की गतिविधि को लेकर थोड़ी उलझन में थीं। उन्होंने बताया कि जब भी वे बच्चों को कहानी सुनाती हैं, बच्चों का ध्यान इतनी जल्दी बँट जाता है कि वे कहानी भी पूरी नहीं कर पातीं। सुपरवाइज़र ने कार्यकर्त्री के कहानी सुनाने के सत्र का अवलोकन किया। उसके बाद उन्होंने उसी कहानी को चित्र कार्ड और आवाज़ में उतार-चढ़ाव का उपयोग करके सुनाया। उन्होंने कुछ जानवरों की आवाज़ों और क्रियाओं की नक़ल की। बच्चों ने न केवल कहानी का आनन्द लिया, बल्कि उसे उत्सुकता से सुना भी। कहानी सुनाने के बाद सुपरवाइज़र ने उनसे कहानी से सम्बन्धित कुछ सरल प्रश्न पूछे जिनका उत्तर बच्चों ने उत्साहपूर्वक दिया।

**2. तत्काल सहायता**

अवलोकन के दौरान सुपरवाइज़र तत्काल कुछ सहायता प्रदान कर सकते हैं। मसलन, यदि कार्यकर्त्री को सर्कल टाइम में शारीरिक गतिविधि या कविता के दौरान जगह की कमी के कारण सभी बच्चों को एक साथ बैठाना मुश्किल हो रहा हो तो सुपरवाइज़र बच्चों को उनकी आयु के आधार पर दो घेरों में

बैठाने / खड़े होने जैसे तरीक़े सुझा सकते हैं। जैसे, 3–4 वर्ष आयु–वर्ग के लिए भीतरी घेरा, और 4–6 वर्ष आयु–वर्ग के लिए बाहरी घेरा।

## मासिक सेक्टर कार्यशालाएँ और बैठकें

सेक्टर बैठकें और कार्यशालाएँ कार्यकर्त्रियों को अच्छे अभ्यासों को साझा करने, शंकाओं का समाधान करने, और अकसर थीम–आधारित सामान्य गतिविधियों की योजना बनाने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं।

मासिक सेक्टर कार्यशालाओं में, सेक्टर के सुपरवाइज़र या बेहतर अभ्यास करने वाले आँगनवाड़ी केन्द्र की कुछ कार्यकर्त्रियों द्वारा थीम–आधारित गतिविधियों का प्रदर्शन किया जाता है। कार्यकर्त्रियाँ इन कार्यशालाओं में गतिविधियों को पहले अभ्यास के तौर पर करती हैं, फिर इन्हें अपने केन्द्रों में दोहराती हैं। इसके बाद, वे अपने केन्द्रों पर आयोजित गतिविधियों को फ़ोटो, वीडियो तथा अपने विचारों के साथ साझा करती हैं कि उन्होंने क्या समझा है, और वे उसे किस प्रकार क्रियान्वित कर रही हैं। अब तो कुछ कार्यकर्त्रियों ने अपने बच्चों की प्रगति को भी साझा करना शुरू कर दिया है। जैसे कि तीन महीने पहले, जो बच्चा रंग भरने का प्रयास कर रहा था, वह अब गोले के भीतर रंग भरने में सक्षम हो गया है, आदि।

चित्र 2 : सुपरवाइज़र मिल–जुलकर एक दूसरे से सीखने के अवसर बना सकते हैं

सेक्टर मीटिंग में सुपरवाइज़र काम की प्रगति को देखते हैं, और समीक्षा करते हैं कि सभी केन्द्रों में गतिविधियाँ कैसे संचालित की जा रही हैं, किन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है और उन्हें कैसे कम किया जा रहा है, आदि। वे व्हाट्सऐप ग्रुप और सेक्टर मीटिंगों में भी नियमित रूप से रचनात्मक प्रतिक्रिया और इन गतिविधियों की तैयारी के महत्त्व पर ज़ोर देते हैं।

## ईसीसीई दिवस समारोह

कार्यकर्त्रियों के लिए यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों के सीखने और विकास यात्रा में भाग लेने के लिए अभिभावकों को प्रेरित करना और समुदाय की सक्रिय भागीदारी बेहद ज़रूरी है। हर महीने ईसीसीई दिवस पर, बच्चों के अधिगम को साझा करने के लिए एक सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है ताकि अभिभावकों की भागीदारी बढ़ाई जा सके, और कार्यकर्त्रियों के काम को पहचान मिल सके। एक केन्द्र की कार्यकर्त्री और सहायिका ने बच्चों और उनके अभिभावकों से कहा कि वे अपने घर में गत्ते के डिब्बे, खाने के रैपर, आदि जैसी इस्तेमाल की हुई और बेकार पड़ी चीज़ें लाएँ। उनका उपयोग करके उन्होंने थीम–आधारित चार्ट, मौसम चार्ट, जन्मदिन बोर्ड, कैलेंडर, कविता चार्ट, आदि तैयार करके प्रिंट–रिच वातावरण बनाना शुरू किया। उन्होंने समुदाय के सदस्यों को ईसीसीई दिवस पर केन्द्र आने के लिए आमंत्रित किया, और वहाँ आए अभिभावकों ने उनके प्रयासों की सराहना की। कार्यकर्त्री ने उन्हें समझाया कि ये सामग्रियाँ बच्चों को सीखने में कैसे मदद करेंगी और उन्हें उनके बच्चों का काम दिखाया।

> **“सभी बच्चों को एक साथ बैठाना मुश्किल हो रहा हो तो सुपरवाइज़र बच्चों को उनकी आयु के आधार पर दो घेरों में बैठाने / खड़े होने जैसे तरीक़े सुझा सकते हैं। जैसे, 3–4 वर्ष आयु–वर्ग के लिए भीतरी घेरा, और 4–6 वर्ष आयु–वर्ग के लिए बाहरी घेरा।”**

## मानक अभ्यासों की चेकलिस्ट

आँगनवाड़ियों के कार्यात्मक पहलू को बेहतर बनाने के लिए हमने सात मानकों वाली एक चेकलिस्ट तैयार की है। ये सरल, लेकिन अनिवार्य, आवश्यकताएँ हैं जिनका पालन प्रत्येक केन्द्र को करना चाहिए, और सभी कार्यकर्त्रियों को इन पर काम करना चाहिए। इनमें केन्द्र और उसका वातावरण, बच्चे और उनका विकास, तथा कार्यकर्त्रियों के अभ्यास शामिल हैं।

इन सात मानक अभ्यासों की समीक्षा सेक्टर सुपरवाइज़रों और कार्यकर्त्रियों द्वारा स्वयं की जाती है। इन सात मानकों की प्रगति का नियमित रूप से अवलोकन किया जाता है, और मासिक बैठकों में इस पर चर्चा की जाती है। यह चेकलिस्ट आँगनवाड़ियों के सुचारु संचालन और सभी हितधारकों को

स्पष्ट रूप से मानकों की प्रगति की स्थिति बताने में मदद करती है। इस चेकलिस्ट में शामिल मानक हैं–

1. क्या आँगनवाड़ी निर्धारित समय, सुबह 9:30 से दोपहर 3:30 बजे तक, के अनुसार चलती है?
2. क्या आँगनवाड़ी का वातावरण स्वच्छ और सुरक्षित है?
3. क्या नामांकित बच्चों में से 80 प्रतिशत नियमित रूप से आँगनवाड़ी आते हैं?
4. क्या आँगनवाड़ी में उपयुक्त खेल और मुद्रित सामग्री, जैसे ब्लैकबोर्ड और लर्निंग कॉर्नर, का उपयोग किया जा रहा है?
5. क्या नियमित रूप से आने वाले ये 80 प्रतिशत बच्चे आँगनवाड़ी में आयोजित गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं?
6. क्या कार्यकर्त्री बच्चों के प्रति संवेदनशील हैं; क्या वे बच्चों को अपनी चीज़ें साझा करने, सहयोग करने और आत्माभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करती हैं; साथ ही उन्हें व्यस्त और प्रेरित भी रखती हैं?
7. क्या प्रतिदिन मुक्त खेल के अलावा, बच्चों के लिए एक घण्टे की संरचित गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं?

इन मानकों से कई आँगनवाड़ी केन्द्रों को बेहतर ढंग से काम करने में मदद मिली है, और कई कार्यकर्त्रियों ने बेहतर अभ्यास अपनाए हैं जिससे कई केन्द्रों में बच्चों का विकास सुनिश्चित हुआ है। सुपरवाइज़र आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को सहयोग देने, उनकी चुनौतियों को पहचानने और उन पर चर्चा करने, तथा कार्यशालाओं में उनके बेहतर खेल-आधारित अभ्यासों को दूसरों से साझा करने का प्रयास निरन्तर करते रहते हैं।

*अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।*

**श्रेष्ठा मिश्रा** अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन रायगढ़, छत्तीसगढ़ में कार्यरत हैं। वे राज्य में ईसीई काम में शुरुआत से जुड़ी रही हैं। वर्तमान में वे फ़ाउण्डेशन की क्रेश पहल से जुड़ी हैं।

सम्पर्क : shrestha.mishra@azimpremjifoundation.org

**रजत शर्मा** अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन रायगढ़, छत्तीसगढ़ में कार्यरत हैं। वे गणित, ईसीई के सन्दर्भ व्यक्ति के तौर पर काम कर रहे हैं।

सम्पर्क : rajat.sharma@azimpremjifoundation.org

# वो जादुई साठ सेकेंड

कल्पना पँवार

प्रारम्भिक बाल्यावस्था के साथ जो देखभाल शब्द जुड़ा है उसका काफ़ी विस्तार हैं। इस देखभाल का बच्चों के सीखने से सीधा और मज़बूत सम्बन्ध है। बच्चों के मन को समझना, उन्हें अपनी बात बिना किसी डर या संकोच के कह पाने के अवसर देना ज़रूरी है। ऐसा करते हुए बच्चों के साथ जो आत्मीय रिश्ता बनता है, वह उनके सीखने की तैयारी का ज़रूरी हिस्सा बनता है। यह लेख ऐसे ही अनुभवों और उदाहरणों पर आधारित है।

सुबह कक्षा में मुझे आते देखते ही बच्चों की "गुड मॉर्निंग मैम", "गुड मॉर्निंग मैम" की मीठी आवाज़ सुनने को मिलती है। मैं उत्साहपूर्वक "गुड मॉर्निंग" कहकर बच्चों की मुस्कान और जोश का उत्तर अपनी मुस्कुराहट से देती हूँ। अभिवादन के साथ इन थोड़े-से क्षणों में सुनी गई उनकी सभी बातें न केवल बच्चे की मनोदशा, भावनात्मक और संज्ञानात्मक स्थिति को दर्शाती हैं, अपितु उस बच्चे के दिन की सकारात्मक शुरुआत के साथ उसके समग्र विकास की नींव भी रखती हैं।

अकसर मैं दिन की शुरुआत बच्चों से बातें करने से करती हूँ। बच्चों में अपनी बातें बताने की ललक होती है। वो बताते हैं, "आज मैं बिस्कुट लाया हूँ सबके लिए"; "मेरी मम्मी कल मेरे लिए नया बैग लाई"; "मैम देखो, मैंने क्या बनाया?"; आदि। कुछ बच्चे केवल अपने नाम के साथ गुड मॉर्निंग सुनकर सन्तुष्ट हो जाते हैं; कुछ उनकी चीज़ों की तारीफ़ सुनकर; और कुछ वाह, अच्छा है, ठीक है, ब्रेक टाइम पर बाँटकर खा लेंगे, सुनकर ख़ुश हो जाते हैं।

कुछ बच्चे इस बातचीत के दौरान चुपचाप दूर खड़े सब कुछ होते हुए देख रहे होते हैं। उनके चेहरे के हाव-भाव देखकर मैं उनके साथ संवाद शुरू करती हूँ। मसलन, "हैलो आरव बेटा! आप थोड़े-से उदास लग रहे हैं? कुछ हुआ है क्या?" "मैम, आज मैंने नाश्ता नहीं किया।" "ओह! पर आज तुमने नाश्ता क्यों नहीं किया?" "मैम, मम्मी को देर हो रही थी तो मम्मी ने सिर्फ़ चाय दी और बोलीं कि स्कूल में खा लेना।" "ठीक है। बस अभी दूध, अण्डा आने वाला है, मैं आपको जल्दी से दे दूँगी। और आपके मम्मी-पापा से फ़ोन करके पूछ लूँगी कि आज वे नाश्ता क्यों नहीं बना पाए?" इसके बाद शिकायतों की बारी आती है– जहाँ अलीना आकर बताती है कि मनुज ने बॉल से श्याम को मारा। तब मैंने बच्चों से बात करके इस घटना के बारे में संज्ञान

चित्र 1: अपनेपन का एहसास बच्चों के सीखने के उत्साह को बढ़ा देता है

लिया और मनुज से पूछा, "क्या तुमने बॉल से श्याम को मारा?" जवाब मिला, "नहीं मैम, ग़लती से लग गई थी! मैंने उसे सॉरी बोल दिया।" फिर मैंने श्याम से पूछा, "तुम्हें कोई चोट तो नहीं लगी न! अब ठीक हो?" फिर मैंने दोनों की बात सुनकर उन्हें समझाया कि यह सब मनुज से ग़लती से हुआ है, और उसने इसके लिए माफ़ी भी माँगी है। यह सुनकर जब दोनों ही सन्तुष्ट हो जाते हैं तब माहौल सहज हो जाता है।

अन्त में बारी उन बच्चों की आती है, जो संकोच, हिचकिचाहट या आत्मविश्वास की कमी के कारण अपनी सीट पर शान्त बैठे रहते हैं। कुछ बस एक बार "गुड मॉर्निंग" कहकर चुप हो जाते हैं, जबकि कुछ बिना कोई शब्द बोले केवल मेरी ओर देखते रहते हैं। ऐसे में किसी भी शिक्षिका के लिए यह बहुत आवश्यक होता है कि वह हर बच्चे के स्वभाव को समझते हुए अलग-अलग तरीक़े से उनसे जुड़ाव बनाएँ–कभी मुस्कुराकर "गुड मॉर्निंग" कहना, कभी उनके पसन्दीदा खेल या खिलौने के बारे में पूछना, कभी प्यार से उनका निकनेम लेकर पुकारना, या कभी दिन की किसी बात पर चर्चा करना। इन छोटे-छोटे संवादों और भावों के ज़रिए वे अपनेपन और सुरक्षा का अनुभव करते हैं। इस प्रकार लगभग 10-15 मिनट में यह पूरी प्रक्रिया न केवल कक्षा का वातावरण सहज बनाती है, बल्कि दिन की सकारात्मक शुरुआत का आधार भी रखती है। यह संवाद प्रत्येक बच्चे से भले ही मात्र 1 या 2 मिनट का होता है, पर यहाँ उनकी उत्सुकताओं, विचारों और भावनाओं को न केवल सुना जाता है, बल्कि इससे उनके विकास के बहुत-से पहलुओं को सकारात्मक प्रोत्साहन भी मिलता है।

शाला-पूर्व कक्षाओं में शिक्षिका को केवल पढ़ने-लिखने के कौशल सिखाना ही नहीं, बल्कि बच्चे के दृष्टिकोण और अनुभवों को समझकर समय देना भी शामिल है। इसलिए एक शिक्षक की ज़िम्मेदारी बहुत ही अहम हो जाती है, क्योंकि कक्षा में सभी बच्चों की बातों को सुनकर उस समय की स्थिति के अनुसार उन पर प्रतिक्रिया देना शिक्षक के लिए एक कठिन चुनौती होती है। ऐसी स्थिति में शिक्षक को उससे पहले हुई घटना और बच्चे की अवस्था का अनुमान नहीं होता है।

हर सुबह बच्चे अलग-अलग भावनाओं और अनुभवों के साथ विद्यालय आते हैं। कोई बिना नाश्ता किए, कोई घर पर डाँट खाकर, तो कोई किसी पारिवारिक परेशानी या घटना से दु:खी होकर आता है, वहीं कुछ किसी ख़ुशी या उत्सव के माहौल में होते हैं। इसका असर उनके चेहरे, व्यवहार और ऊर्जा में साफ़ दिखता है। यह केवल सुबह के उन क्षणिक पलों में प्रेम और सौहार्द के साथ हर बच्चे की भावनाओं को समझकर सँभालना होता है। यह वे अनमोल क्षण होते हैं, जब बच्चे केवल यह चाहते हैं कि कोई उन्हें ध्यान से सुने, उनकी भावनाओं को समझे। और शिक्षिका किसी उदास बच्चे को मुस्कान दें, किसी चिन्तित बच्चे को भरोसा दिलाएँ, किसी ख़ुश बच्चे की ख़ुशी में शामिल हों, और इस तरह कक्षा में सहज, संवेदनशील, रचनात्मक और सीखने योग्य वातावरण बनाएँ।

बच्चों के साथ इस तरह जुड़ते हुए मुझे शिक्षक संवाद की महत्ता की निम्न बातें समझ में आती हैं–

## सुनने की कला

जब सोहन बॉल से किसी को मार देता है, या सुप्रिया अपनी चीज़ नहीं बाँटती, यह उनके भाव प्रकट करने का तरीक़ा होता है। शिक्षिका के लिए ज़रूरी है कि वह हर आवाज़ को ध्यान से सुने और समझें। यदि वे बच्चे का यह भरोसा न जीत पाईं तो वह न केवल अपनी भावनाएँ साझा करने से हिचकिचाएँगे, बल्कि अपनी पढ़ाई में होने वाली ग़लतियाँ, सन्देह या कठिनाइयाँ कभी नहीं बताएँगे। यही सुनना और समझना शिक्षक और बच्चे के बीच भरोसे और सम्बन्ध की पहली सीढ़ी है।

> **"शाला-पूर्व कक्षाओं में शिक्षिका को केवल पढ़ने-लिखने के कौशल सिखाना ही नहीं, बल्कि बच्चे के दृष्टिकोण और अनुभवों को समझकर समय देना भी शामिल है।"**

## समझने की ज़िम्मेदारी

अकसर घटनाएँ उतनी ही सच नहीं होतीं जितनी पहली नज़र में लगती हैं। जैसा कि हमने मनुज, श्याम और अलीना के संवाद में देखा, खेलते समय चोट अनजाने में लगी थी। एक शिक्षिका के रूप में, यदि मैं बिना पूरी स्थिति समझे यह मान लेती कि यह जान-बूझकर हुआ है तो यह न केवल ग़लत निर्णय होता, बल्कि मनुज के आत्मविश्वास को भी ठेस पहुँचाता। इस अनुभव ने सिखाया कि बच्चों के साथ हर परिस्थिति को धैर्य और संवेदनशीलता से समझना ज़रूरी है। एक शिक्षक के रूप में, हमें घटनाओं को केवल सतही रूप में नहीं देखना है, बल्कि बड़ी तस्वीर को ध्यान में रखते हुए दोनों सिरों के बीच मौजूद सभी पहलुओं पर ग़ौर करने की ज़रूरत है। यह दृष्टिकोण बच्चों के समक्ष कई परतों को खोलता है और वास्तविक तथ्य तक पहुँचने में मदद करता है। इस प्रक्रिया से बच्चे समाज के दृष्टिकोण या सतही धारणाओं को स्वीकार करने के बजाय अपने तर्क और तथ्यपरक सोच के आधार पर किसी स्थिति का विश्लेषण करना सीखते हैं।

## पूर्वाग्रह से परे होना

हर बच्चा अपनी अलग प्रकृति लिए होता है–कोई शिकायत करता है, कोई चुपचाप सब सह लेता है, तो कोई ज़िद्दी प्रतीत होता है। अकसर हम जल्द ही यह मान लेते हैं कि 'यह बच्चा तो हमेशा से शरारती है।' लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता। एक बार मनदीप से पानी गिर गया था। कुछ बच्चे तुरन्त कहने लगे, "अब तुमने ग़लती की, तुम्हें इसकी सज़ा मिलेगी!" उनकी आवाज़ में कठोरता और डर था–कोई यह नहीं सोच रहा था कि इसे सुलझाया जा सकता है, या यह केवल एक ग़लती है।

चित्र 2 : गोल घेरे में बैठाकर सभी बच्चों से संवाद करना हर बच्चे से जुड़ाव बनाता है

मैंने तुरन्त उन्हें एक नया विचार दिया, "यह सिर्फ़ एक ग़लती है, इसे सुधारने का अवसर भी है। ग़लती करने का मतलब यह नहीं कि तुम्हें दण्डित किया जाए। आप सभी से भी कभी-कभी कुछ ग़लतियाँ हो जाती हैं।" मुस्कुराते हुए मनदीप से पूछा, "बोलो, अब क्या कर सकते हैं?" उसने तुरन्त कहा, "मैं पानी पोंछ सकता हूँ।" बाक़ी बच्चों को यह आइडिया अच्छा लगा। मैंने इसमें एक आइडिया और जोड़ा कि क्या पानी पोंछने में हममें से किसी को मनदीप की मदद करनी चाहिए। मेरे मन में यह भाव था कि उसके पानी पोंछने को बच्चे कहीं सज़ा न मान लें। कुछ बच्चों ने कहा, "हाँ, मदद कर सकते हैं।" लेकिन कुछ ने कहा, "जिसकी ग़लती है उसे ही पोंछना चाहिए।" मैंने कहा, "चलो, मैं मनदीप की मदद करती हूँ।" तभी दो बच्चे और आ गए, फिर कुछ और आ गए। अब उस गिरे हुए पानी को पोंछना एक गतिविधि बन गई जिसमें एक सकारात्मक सीख भी शामिल थी।

## रूढ़ियों को तोड़ना

एक दिन हमने कक्षा की सफ़ाई करने का सोचा। और जब मैंने एक बच्चे से कूड़ादान लाने को कहा, उसने तुरन्त "छी-छी" कहकर मना कर दिया। मैं मुस्कुराई, और ख़ुद कूड़ादान उठा लाई। बच्चों की आवाज़ गूँजी, "छी-छी, गन्दा!" उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि बच्चों के भीतर यह पूर्वाग्रह शायद समाज से ही आया है कि सफ़ाई केवल किसी ख़ास समूह का, या कम महत्त्व का काम है। मैंने समझाया, "सफ़ाई करना किसी काम से कम नहीं है; यह हमारी ज़िम्मेदारी है। जैसे हम अपने घरों की सफ़ाई करते हैं, ठीक उसी तरह अपने विद्यालय, आस-पास की सफ़ाई भी हमारी ही ज़िम्मेदारी है। बच्चों ने बात को सुना, समझा तथा सहमति में सर हिलाते हुए और ख़ुश होकर सफ़ाई करने लगे। इस अनुभव ने दिखाया कि शिक्षिका का संवाद, उदाहरण और मार्गदर्शन, बच्चों में पूर्वाग्रह तथा भेदभाव तोड़ने और नए आयामों को जोड़ने का काम करता है।

## शब्दों की ताक़त

शिक्षक की छोटी-छोटी सकारात्मक टिप्पणियाँ, जैसे, "तुमने बहुत सुन्दर चित्र बनाया है"; "तुम यह कर सकते हो"; या "क्या मैं तुम्हारी मदद करूँ?"; उनके आत्मविश्वास को पंख दे सकती हैं। वहीं एक नकारात्मक टिप्पणी, जैसे, "तुम इतना भी नहीं कर पा रहे हो!"; "तुम्हें यह करना नहीं आता"; या "तुमसे नहीं हो पाएगा"; उनके मनोबल को तोड़ सकती है। इसका अनुभव मुझे भारती के बार-बार "आता है मुझे" कहने की घटना से हुआ। एक बार वह अपने जूते के फ़ीते बाँधने की कोशिश कर रही थी। कुछ क्षणों के बाद मैंने पूछा, "भारती, हो गया?" तो उसने बार-बार कहा, "मैं कर रही हूँ।" दो-तीन बार ऐसा होने पर मुझे महसूस हुआ कि कुछ तो बात है। मैं उसके पास गई और ध्यान से देखा। पता चला कि फ़ीते में गाँठ लगी हुई थी। तब मैंने धीरे-से सकारात्मक शब्दों का प्रयोग करते हुए कहा, "भारती, क्या मैं तुम्हारी मदद करूँ?" उसने हामी भरी, "हाँ, मुझे आता है।" मैंने गाँठ खोली और उसे जूते के फ़ीते बाँधने का अवसर दिया। शायद उसे डर था कि कहीं मैं उसे अयोग्य न समझ लूँ। इस अनुभव ने मुझे सिखाया कि बच्चों के सामने हमेशा ऐसे शब्दों का चयन करना बेहतर होता है जो उन्हें प्रोत्साहित करें, और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाएँ।

---

**कल्पना पँवार** विगत 7 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं। वह प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दे रही हैं, और स्कूल में आधारभूत स्तर की शैक्षणिक गतिविधियों में नियोजन तथा क्रियान्वयन का समन्वय भी कर रही हैं।

सम्पर्क : kalpana.panwar@azimpremjifoundation.org

# उपस्थिति चार्ट के माध्यम से सीखना

## स्वप्नाली चव्हाण

खेलों के दौरान बच्चों का उत्साह देखते ही बनता है। उनसे उनकी पसन्द की चीज़ों, उनके आस-पास के लोगों और घटनाओं के बारे में बात करने से उनकी आँखों में उत्सुकता और उत्साह की चमक आ जाती है। बच्चों का यही उत्साह उनके सीखने में शिक्षकों के लिए काफ़ी मददगार होता है, विशेषकर आँगनवाड़ी बच्चों के सन्दर्भ में। ऐसी ही कुछ गतिविधियों और खेलों के ज़रिए बच्चों का सीखना कैसे सम्भव हुआ, इसी बारे में है यह आलेख।

चित्र 1 : स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर बच्चों के चेहरे पर ख़ुशी भी लाते हैं, और नया सीखने को प्रेरित भी करते हैं

A से क्या होता है?... और B से? अनय की माँ पूछती हैं। अनय डेढ़ साल का हो गया है। उसने हाल ही में बोलना शुरू किया है। "सानू, तुम्हें 'अ' इस तरह से लिखना चाहिए...", स्वानन्दी की माँ उसका हाथ पकड़ती हैं, और उसे 'अ' अक्षर की आकृति बनाना सिखाती हैं। एक अन्य उदाहरण में, किसी बच्चे की माँ उस पर इसलिए ग़ुस्सा करती हैं क्योंकि वह अक्षरों को उल्टा (मिरर इमेज / दर्पण-प्रतिबिम्ब में) लिखता है। यह बच्चा अभी-अभी नर्सरी में दाख़िल हुआ है।

हम अपने आस-पास ऐसी घटनाएँ अकसर देखते हैं। जैसे ही बच्चा विद्यालय जाना शुरू करता है, उसके माता-पिता उसे पढ़ना-लिखना सिखाने की जल्दी में होते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में यह बात गौण हो जाती है कि बच्चा जो कुछ सीख रहा है, उसका अर्थ समझ भी पा रहा है या नहीं। चूँकि माता-पिता उसे एक ढाँचे में ढालने की कोशिश करते हैं, इसलिए वह धीरे-धीरे ख़ुद को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करना भूलने लगता है।

अगर कोई बच्चा बेतरतीब रेखाएँ खींच रहा है, अर्थहीन आकृतियाँ बना रहा है (जो माता-पिता के लिए अर्थहीन होती हैं, लेकिन बच्चे के लिए उनका एक अर्थ, और शायद नाम भी होता है), या टेढ़े-मेढ़े और अजीबोग़रीब चित्र बना रहा है तो माता-पिता को समझना चाहिए कि ये उसके ख़ुद को अभिव्यक्त करने के तरीक़े हैं। बच्चे का भावनात्मक विकास तब होता है जब उसे अपने तरीक़े से अभिव्यक्त करने का अवसर और आज़ादी देते हैं। बाल मनोविज्ञान के कई अध्ययनों से यह बात पता चलती है। आज के सन्दर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EQ) को बुद्धिलब्धि (IQ) से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण भी माना जा रहा है।

महाराष्ट्र के कोल्हापुर स्थित आनन्दी बालभवन फ़ाउण्डेशन में हम 3-12 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करते हैं। खेल को आधार मानकर, हम बच्चों के सकल और सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल, प्रकृति अवलोकन तथा भाषा विकास को बढ़ावा देने के लिए लगातार नई गतिविधियों

को शामिल करते रहते हैं। इन सभी गतिविधियों का प्रयोग करते समय हमारा ध्यान इस बात पर रहता है कि बच्चों को बोलने और अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

पिछले साल जब हम इस बात पर विचार कर रहे थे कि भाषा विकास के लिए और क्या किया जा सकता है, हमें क्वेस्ट (QUEST) की पलावी परियोजना से सम्बन्धित *माझी आँगनवाड़ी* नामक पुस्तक मिली। यह संगठन शिक्षा के रचनात्मक दृष्टिकोण पर काम करता है। हमने बच्चों की उपस्थिति में सुधार लाने, और उनके उभरते लेखन कौशल के विकास पर इसके प्रभाव का अध्ययन करने के लिए इस अभिनव गतिविधि को आज़माने का फ़ैसला किया।

## उपस्थिति चार्ट तैयार करना

शुरुआत में, हमने एक बड़े पोस्टर पेपर पर, सात दिनों के लिए सात कॉलम वाला एक साप्ताहिक उपस्थिति चार्ट बनाया। इसमें सीरियल नम्बर और बच्चों के नाम के लिए भी एक-एक कॉलम और था। दिन और तारीख़ें लाल रंग के स्केच पेन से लिखी गईं। हमने देखा कि बच्चे लाल रंग से लिखे शब्दों / पाठ्य को ज़्यादा आसानी से याद रखते हैं। भले ही उन्हें अर्थ समझ में न आए, फिर भी उनका दिमाग़ अक्षरों के आकार को जल्दी से याद कर लेता है। हर बच्चे का नाम अलग-अलग रंग से लिखा। प्रत्येक बच्चे के नाम के आगे और सप्ताह के प्रत्येक दिन के नीचे एक आयताकार खाली स्थान दिया गया था। यह तय किया गया कि प्रत्येक बच्चा प्रतिदिन, सम्बन्धित दिन के नीचे दिए गए बॉक्स में अपना नाम लिखेगा।

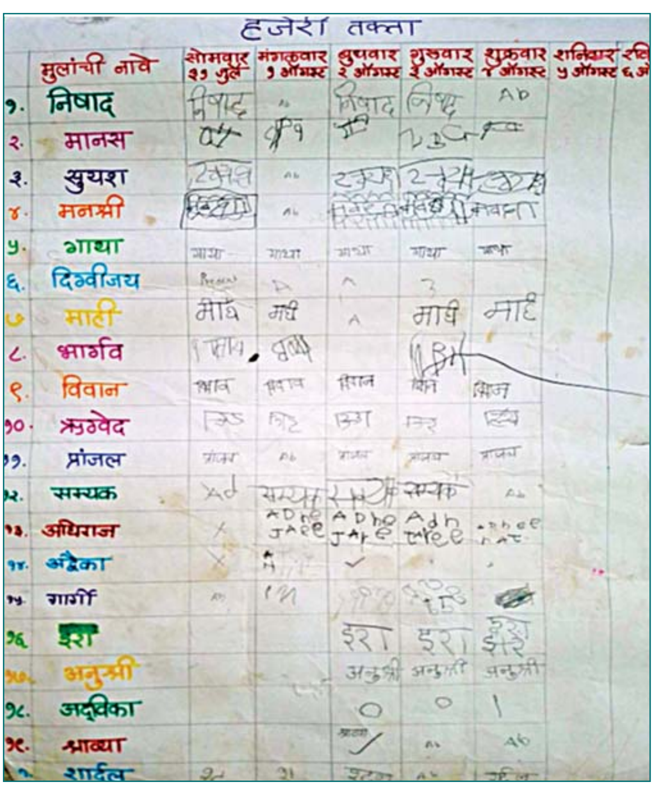


चित्र 2 : उपस्थिति चार्ट, जिस पर बच्चे अपनी उपस्थिति ख़ुद दर्ज करते हैं

## गतिविधि का क्रियान्वयन

अगला चरण था बच्चों से चार्ट भरवाने का। प्रत्येक बच्चे को बुलाया गया और उसके नाम के प्रत्येक अक्षर पर उँगली रखकर दो-तीन बार उसका नाम पढ़ा गया। इसी तरह, दिन और तारीख़ भी पढ़कर सुनाई गई। इसके बाद, बच्चे को दिन वाले कॉलम में दिए गए स्थान में अपना नाम लिखने को कहा गया।

पाँच साल से ज़्यादा उम्र के बच्चे पहले से ही अपना नाम लिखना जानते थे, इसलिए उन्होंने जल्दी से अपना नाम लिख दिया। चार से पाँच साल के कुछ बच्चों ने चार्ट पर लिखे नामों को देखकर उनकी नक़ल करने की कोशिश की। कुछ ने केवल गोले, रेखाएँ, चित्र या डिज़ाइन बनाए। चूँकि यह गतिविधि साल भर चलने वाली थी, इसलिए हमने इन बच्चों की प्रगति पर विशेष रूप से ध्यान दिया। हर हफ़्ते, हम बच्चों के नाम एक ही रंग और एक ही क्रमांक में लिखना शुरू करते थे। नतीजा यह हुआ कि बच्चों को अपने नाम का रंग और स्थान याद रहने लगा। हालाँकि वे अभी तक अक्षरों को नहीं पहचानते थे, फिर भी वे रंग और क्रमांक के आधार पर अपने नाम पहचानने की कोशिश करने लगे। हर बार नाम लिखने से पहले हम बिना चूके दिन और तारीख़ पढ़कर सुनाते थे, और अपनी उँगलियों से बच्चों की ओर इशारा करते थे। फिर उनसे कहते थे कि वे हमारे बोलने के बाद दिन और तारीख़ दोहराएँ। हम उनसे पूछते, "क्या तुम अपना नाम ढूँढ़ सकते हो?", और वे रंगों के संकेतों से अपने नाम बता देते। वे अपने नाम के लिए दी गई जगह में अपने-अपने तरीक़े से नाम लिखते रहे।

> **खेलों के दौरान बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। उनके उत्साह ने हमें नए तरीक़ों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया।**

वेदश्री ने शुरुआत में अपने नाम के लिए आइसक्रीम और चॉकलेट के चित्र बनाए। पीयूष ने अपने नाम की आकृति बनाने की कोशिश की और एक डिज़ाइन बनाई। वेदान्त ने रेखाएँ और गोले जैसी कुछ आकृतियाँ बनाईं। विश्वेश ने अपने नाम के कुछ अक्षर लिखने की कोशिश की, और उनके साथ कुछ लकीरें भी खींचीं। ओवी ने अपना नाम लगभग सही रूप से लिखने की कोशिश की, बस कुछ अक्षर छूट गए। हमने नाम मराठी में लिखे, लेकिन आदिनाथ लगातार अपना नाम अँग्रेज़ी में लिखता रहा। अर्णव ने अपना नाम झट से पहचान लिया, और उसे देखकर लिखने की कोशिश करता रहा। जब सभी बच्चे बैठकर अपना नाम लिखने की कोशिश करते, अर्णव लेटकर चार्ट पर धीरे-धीरे अपना नाम लिखता। अगर कोई ग़लती होती तो उसे मिटा देता, और फिर से सही ढंग से लिखने की कोशिश करता। पीयूष भी लगातार इसी तरह की कोशिश कर रहा था। विहान ध्यान से देख-देखकर अपना नाम लिख रहा था। वैसे कुछ बच्चे खेलने की जल्दी में थे, इसलिए फुर्ती से अपना नाम लिखकर भाग जाते थे। हमने इस गतिविधि को 1 जुलाई से शुरू कर सितम्बर के अन्त तक जारी रखा।

## बच्चों की प्रगति कैसे हुई

तीन महीने बाद, हमने चार्ट पर बच्चों के नामों के रंग और क्रम बदल दिए। हमेशा की तरह, उनसे अपने नाम ढूँढ़ने को कहा। कुछ बच्चे भ्रमित हो गए। चूँकि वेदान्त और वेदश्री के नामों में 'व' अक्षर (v / w की ध्वनि) समान था, इसलिए दोनों एक दूसरे के नाम को अपना नाम समझने लगे। अर्णव, पीयूष और विहान ने अपने नाम पहचान लिए। ओवी, आदिनाथ और विश्वेश थोड़े भ्रमित हुए। कीर्ति, जो पहले अपना नाम बिल्कुल नहीं पहचान पाती थी, अब सही ढंग से पहचानने लगी। वेदश्री ने जल्द ही चित्र बनाना छोड़ दिया, और अपने नाम के अक्षरों को ध्यान से देखने और लिखने की कोशिश करने लगी। ये सभी बच्चे 4 से 6 साल की उम्र के थे। हम आदिनाथ को बार-बार याद दिलाते रहे कि वह अपना नाम देखकर लिखने की कोशिश करे, लेकिन उसने ज़िद की कि वह अपना नाम अँग्रेज़ी में लिख सकता है। पीयूष, अर्णव, विश्वेश और ओवी ने काफ़ी प्रगति की थी। अब वे इस तरह से नाम लिखने लगे थे जिन्हें पहचाना जा सके। कुछ को अभी भी सूची में अपना नाम ढूँढ़ने में कठिनाई हो रही थी और हम उनकी मदद करते रहे।

कुछ बच्चे अभी भी केवल रेखाएँ और गोले बनाकर ही ख़ुश थे। वे उपस्थिति चार्ट को लेकर इतने उत्सुक थे कि घर जाने से पहले याद दिलाते, "मौसी, मुझे उपस्थिति चार्ट पर अपना नाम लिखना है।" वे यह काम ख़ुशी-ख़ुशी करते थे। बाद में इस बात पर छोटी-मोटी बहस होने लगी कि कौन पहले अपना नाम लिखेगा। हम भी बच्चों के साथ इन पलों का आनन्द ले रहे थे।

अब ध्यान से हर हफ़्ते चार्ट तैयार करना हमारी ज़िम्मेदारी बन गई। ऐसा करते हुए छोटी-छोटी बातें भी सीखीं। मसलन, हम शीट के पीछे वाले हिस्से का भी इस्तेमाल कर सकते हैं, आदि।

## हमने कठिनाई के स्तर को कैसे बढ़ाया ?

दिवाली की छुट्टियों के दौरान एक महीने तक यह गतिविधि नहीं की। दिसम्बर में हमने बच्चों के सामने एक नई चुनौती रखी। इस बार सभी नाम एक ही रंग में लिखे। इसके बावजूद कई बच्चे अपने नाम पहचान पा रहे थे। कुछ को फिर से थोड़ी मदद की ज़रूरत पड़ी। आदिनाथ अब अपना नाम मराठी में लिखने लगा था। चार साल का अर्णव अचानक अपने नाम के अँग्रेज़ी अक्षर लिखने लगा, और एक महीने में ही वह फिर से अपनी राह पर आ गया और मराठी में अपना नाम लिखने लगा। चूँकि अर्णव के नाम में 'र' अक्षर शामिल है, इसलिए वह हमसे कहने लगा, "मेरे नाम में 'र' है।" यह हमारे लिए ख़ुशी की बात थी, क्योंकि इसका मतलब था कि बच्चे शब्दों में ध्वनियों को पहचानने लगे थे। अगले महीने एक और प्रयोग किया। हमने बच्चों के नाम वाली काग़ज़ की पट्टियाँ बनाईं, और उन्हें इधर-उधर बिखेर दिया। इसके बाद बच्चों से अपना नाम ढूँढ़ने को कहा। कई बच्चे अपना नाम ढूँढ़ने में कामयाब रहे। कठिनाई बढ़ाने के लिए हमने उनके नामों के अक्षरों को अलग-अलग करके अलग-अलग पर्चियों पर लिख दिया। फिर बच्चों से कहा कि वे पर्चियों को जोड़कर अपने नाम बनाएँ। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि आधे से ज़्यादा बच्चों ने ये दोनों गतिविधियाँ पूरी कर लीं। इन गतिविधियों के दौरान बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। उनके उत्साह ने हमें नए तरीक़ों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया, और तब हमने शब्दों में ध्वनियों को पहचानने का एक खेल खेलना शुरू किया। इस खेल में, बच्चे ज़ोर से एक शब्द बोलते, एक बार ताली बजाते, और शब्द में आई प्रत्येक ध्वनि के लिए एक बार कूदते थे। उन्हें यह खेल बहुत पसन्द आया। कुछ ने बेहतरीन प्रयास किए, वहीं कुछ थोड़े भ्रम में पड़ गए। उदाहरण के लिए, तीन ध्वनियों वाले शब्दों में, बच्चे कभी-कभी केवल दो बार ही ताली बजाते थे क्योंकि शब्द का उच्चारण बहुत जल्दी होता था। ऐसी स्थिति में हमने उनकी मदद की, और वे फिर से नए उत्साह के साथ खेलने लगे। अप्रैल में वेदश्री, वेदान्त, पीयूष, ओवी, अर्णव, आदिनाथ जैसे बच्चे, जो पैटर्न, चित्र और रेखाएँ बनाते थे, अब अपने नाम सही ढंग से लिखने लगे थे। यहाँ तक कि विश्वेश जैसे कठिन नाम वाले बच्चे, जिनमें जटिल अक्षरों का प्रयोग होता था, भी अपने नाम अच्छी तरह लिखने लगे थे। अब नाम लिखते समय वे प्रत्येक अक्षर की ध्वनि ज़ोर से बोलने लगे थे। अब वे ऐसी बातें करने लगे थे, "यह मेरा हस्ताक्षर है"; "मौसी, मैं चार्ट पर अपने हस्ताक्षर करना चाहता हूँ"; आदि। अपने नाम पर 'हस्ताक्षर' करने की उनकी ख़ुशी में हम भी शामिल होते थे।

बच्चों को पहले अपने तरीक़े से लिखने का मौक़ा देना चाहिए। चाहे वे रेखाएँ हों, गोले हों या चित्र, क्योंकि इनसे उन्हें धीरे-धीरे लिखना और पढ़ना सीखने में मदद मिलती है। इसके साथ ही शब्द पर उँगली रखकर अक्षरों की ध्वनियाँ निकालने का तरीक़ा सिखाने से उन्हें अक्षर और ध्वनि सम्बन्ध बनाने में मदद मिलती है। इससे उन्हें पढ़ने और लिखने, दोनों का प्रयास करने का प्रोत्साहन मिलता है। उपस्थिति चार्ट गतिविधि को बच्चों ने बहुत उत्साह के साथ किया। हमने दूसरों द्वारा किए गए प्रारम्भिक साक्षरता प्रयोगों के बारे में पढ़ा था और उनकी तस्वीरें भी देखी थीं, लेकिन अब ख़ुद अनुभव किया कि इस प्रक्रिया के माध्यम से बच्चों की लेखन क्षमता कैसे विकसित होती है।

इस साल हम अगले चरण में प्रवेश करेंगे जिसमें नई गतिविधियाँ शामिल होंगी। इनके माध्यम से ऐसे बच्चे अपनी क्षमताओं का विकास करेंगे और ख़ुद को अभिव्यक्त करने के नए तरीक़े खोजेंगे, जिन्होंने अभी-अभी पढ़ना-लिखना शुरू किया है। ये गतिविधियाँ इस बात को सुनिश्चित करने की एक सतत प्रक्रिया है कि बच्चे ज़्यादा पढ़ें, ज़्यादा लिखें (सिर्फ़ अकादमिक दृष्टि से ही नहीं), और ख़ुद को खुलकर अभिव्यक्त करें।

*मराठी से अँग्रेज़ी में अनुजा संसारे द्वारा अनुवादित।*
*अँग्रेज़ी से हिन्दी में नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।*

**स्वप्नाली चव्हाण** आनन्दी बालभवन फ़ाउण्डेशन, कोल्हापुर, महाराष्ट्र में एसोसिएट हैं। उनकी रुचि योग अध्ययन और बाल साहित्य में है।

सम्पर्क : swapnalichavan28@gmail.com

# प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में गति नियोजन

भावना नायक

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) में कक्षा का वातावरण सकारात्मक और समृद्ध बनाने के सबसे महत्त्वपूर्ण कारकों में से एक है गति। सुव्यवस्थित गति से युक्त वातावरण, बच्चों को अपनी गति से खोजबीन करने, सीखने और विकसित होने में मदद करता है। इससे उनका अनुभव आनन्ददायक और प्रभावी बनता है।

चित्र 1 : बच्चों के ध्यान की अवधि का उनके सीखने से सीधा सम्बन्ध होता है

शिक्षण के दौरान छोटे बच्चों की रुचि बनाए रखना काफ़ी चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि किसी भी चीज़ में उनके ध्यान की अवधि (attention period) कम होती है। जो चीज़ शुरू में उनके ध्यान को आकर्षित करती है, वह जल्दी ही समाप्त हो जाती है। कभी-कभी तो पाठ पढ़ाने के दौरान ही उनकी यह रुचि कम हो जाती है। और कभी-कभी गतिविधियाँ इतनी तेज़ी से आगे बढ़ती हैं कि वे उन्हें पूरी तरह से समझ ही नहीं पाते हैं। यह स्थिति बच्चों और शिक्षक, दोनों के लिए निराशा पैदा करने वाली होती है। इससे सफल और सार्थक सीखना-सिखाना मुश्किल बन जाता है।

जब शिक्षक के पढ़ाने के तरीक़े बच्चों के ध्यान की अवधि के अनुकूल होते हैं तब कक्षा में सीखने का एक गतिशील और संवाद वाला वातावरण बनता है। इससे बच्चों के लिए सीखना रोचक हो जाता है। शिक्षण की प्रभावी रणनीतियों के लिए यह ज़रूरी है कि सीखने की हर गतिविधि को करने के लिए बच्चों को पर्याप्त समय दिया जाए, और वे एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में सुगमता से जा सकें।

## प्रारम्भिक बाल्यावस्था कक्षाओं में गति : सही सन्तुलन की तलाश

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में गति नियोजन पर ध्यान देने का मतलब है बच्चों को प्रेरित करना, उनके आराम और खोज करने की ज़रूरतों के बीच सन्तुलन बनाना, साथ ही उनका ध्यान और जुड़ाव बनाए रखने के लिए पाठों एवं गतिविधियों के माध्यम से उनकी विकास की प्रगति को बढ़ाना। यानी एक ऐसा वातावरण बनाना जिससे उन्हें लगे कि वे अपनी गति से सीख रहे हैं, ताकि वे पूरी कक्षा के दौरान प्रेरित बने रहें तथा जुड़ाव महसूस करते रहें।

मैं अपनी कक्षा के एक उदाहरण के ज़रिए इस प्रक्रिया को साझा कर रही हूँ।

उस दिन कक्षा में 'हवा' विषय पर पाठ पढ़ाना था। दिन की शुरुआत एक उत्साहपूर्ण सर्कल टाइम के साथ हुई, जब मैंने एक कविता पर चर्चा शुरू की :

*The wind brushes past my skin so cool,*
*a gentle touch, a swirling pool.*
*It dances free, I feel its might,*
*A fleeting breeze from day to night.*

*ठण्डी हवा मेरे बदन को छूकर गुज़र जाती है,*
*एक कोमल-सा स्पर्श, जैसे तलैया लहराती है,*
*नाचती है उन्मुक्त, और आवेग से भरपूर*
*दिन-रात बहती है ये हवा भरपूर।*

इसके बाद एक बच्चा, ऋषभ, अपने पिता के साथ साइकिल पर विद्यालय आते समय अपने चेहरे पर हवा के एहसास के बारे में बात करने लगा। फिर मैंने बच्चों को एक चित्र पुस्तक *जैक की पतंग* से एक कहानी पढ़कर सुनाई। इस कहानी में, जैक पतंग उड़ाने की कोशिश करता है, और जब वह उड़ा नहीं पाता तब जैक के पिता उसे हवा की विपरीत दिशा में पतंग उड़ाना सिखाते हैं। कहानी सुनाने के दौरान हुई बातचीत से कक्षा में खोजबीन करने और उत्सुकता का माहौल बना।

इसके बाद, जब बच्चों से कहा, "चलो, अब बाहर चलते हैं!", तब बच्चे, जो अब तक चुपचाप कहानी सुन रहे थे, ऊर्जा और उत्साह से भर गए। रोहन बाँहें फैलाए आगे दौड़ा और चिल्लाया, "हवा बहुत अच्छी लग रही है!" अनन्या ने इशारा करते हुए कहा, "देखो, आम के पेड़ के पत्ते हिल रहे हैं!" इस तरह का अनुभव न केवल बच्चों की समझ को गहरा करता है, बल्कि उन्हें स्फूर्ति के साथ गतिविधि से जोड़े भी रखता है।

हम हवा का आनन्द लेते हुए, उसके बारे में बातें करते हुए बाहर घूमते रहे।

फिर हम कक्षा में वापस आए, और एक चित्र बनाने की रचनात्मक गतिविधि में जुट गए। मैंने कहा, "बच्चो, हवा को महसूस करते ही तुम्हारे दिमाग़ में जो कुछ भी आता है, क्या तुम वैसा कुछ बना सकते हो?" इसके बाद तो रचनात्मकता का एक और दौर शुरू हो गया। यशिका ने गुब्बारे के चित्र में काग़ज़ के रंगीन टुकड़ों को फाड़कर चिपकाया, और एक जीता-जागता गुब्बारा बना दिया। रोहन ने अपनी कल्पना से पत्तियों को ऐसे चित्रित किया मानो वे हवा में लेटी हुई हैं। रंगीन काग़ज़ को अपनी

चित्र 2 : बच्चों ने भरी कल्पना और रचनात्मकता की उड़ान

कल्पना के अनुसार काटने और चिपकाने में मैंने और सहायिका ने बच्चों की मदद की।

जब बच्चे सक्रिय खोजबीन से रचनात्मक अभिव्यक्ति की ओर जाते हैं तब उनके सीखने की गति बिल्कुल सही रहती है—जो रोमांचक होने के साथ-साथ सुकून देने वाली भी होती है। यदि शिक्षक बच्चों को एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में सहज व सुचारु रूप से ले जाएँ तो उनके सीखने का अनुभव दिलचस्प और सन्तुलित हो सकता है।

## एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में जाना

छोटे बच्चों को अकसर एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में जाने में कठिनाई होती है, क्योंकि वे निर्देशों से पूरी तरह परिचित नहीं होते। इससे तनाव या भ्रम की भावनाएँ पैदा हो सकती हैं। इन प्रक्रियाओं को सहज बनाने के लिए हम लगातार शान्तिदायक संकेतों (calming cues) का उपयोग करते हैं। मसलन, यह बताने के लिए, कि सफ़ाई करने या खिलौनों को अपनी जगह रखने का समय हो गया है, उन्हें कोई परिचित कविता सुनाना। जब बच्चों को नई गतिविधि करने के लिए प्रेरित करना हो तब हम कुछ ऐसे वाक्यों का उपयोग करते हैं। मसलन, "चलो, कुछ नया करने के लिए तैयार हो जाओ!"; "आओ, कुछ रोमांचक काम करें!"; आदि। उदाहरण के लिए, जब बच्चे कहानी सुनाने से चित्रकारी की ओर जाते हैं तो हम कविताएँ गाकर सुनाते हैं। हम जिन संकेतों का उपयोग करते हैं, उनमें से एक यह है :

*Hey! Little kids hey! Little kids*
*Story is done, colours are fun*
*Take out your crayons,*
*Let's start one by one.*

*नन्हे-मुन्ने बच्चो, ओ, प्यारे-प्यारे बच्चो*
*हुई कहानी पूरी, अब रंगों की बारी,*
*क्रेयॉन निकालो झट से,*
*शुरू करो चित्रकारी।*

इसी तरह, जब इनडोर से आउटडोर खेल खेलने के लिए निकलना होता है तब बच्चों को इकट्ठा करने, और उनके साथ योजना बनाकर मज़ेदार गतिविधियों पर चर्चा करने के लिए कुछ इस प्रकार के संकेत देती हूँ। मसलन,

"कुछ मज़ा हो जाए, मस्ती हो जाए। तैयार हो?"

इससे उन्हें आगे आने वाली गतिविधियों के लिए मानसिक रूप से तैयार होने में मदद मिलती है। यह अभ्यास न केवल उनके मन को शान्त करता है, बल्कि सामाजिक कौशलों को मज़बूत करने के अवसर भी देता है। जैसे—प्रश्न पूछना, आगामी गतिविधियों के बारे में विचार साझा करना, आदि।

## गति नियोजन के सकारात्मक परिणाम

बच्चे पूरी कक्षा में उत्साहित और सक्रिय रहते हैं। इससे उन्हें अपना कार्य समय पर पूरा करने में मदद मिलती है। वे छोटी-छोटी गतिविधियों का मज़ा लेते हैं, और अपनी भागीदारी दिखाते

हैं। जैसे भाविका ने ही पूछा, "क्या मैं अलग-अलग रंगों के कुछ और गुब्बारे बना सकती हूँ?" बच्चों के उत्साह ने कक्षा को जीवन्त और रुचिकर बनाए रखा।

बच्चे बदलती गतिविधियों से परिचित हो जाते हैं। इससे तरह-तरह की गतिविधियों से गुज़रना आसान हो जाता है। मेरी कक्षा में अब वे बस एक सरल-सी कविता के संकेत से, कहानी सुनाने से लेकर चित्रकारी तक की गतिविधियों में जुट जाते हैं। उन्हें ज़्यादा परेशानी नहीं होती है।

इस सबसे मुझे पाठ योजना बनाने, और अपने दैनिक उद्देश्यों को पूरा करने में मदद मिलती है।

गति नियोजन से किसी विषय पर 15 मिनट की चर्चा करने, और उसके बाद एक गतिविधि पूरी करने में मदद मिलती है।

मैं बिना किसी परेशानी के सीखने-सिखाने के सभी क्षेत्रों को समेट सकती हूँ। मसलन, 5 मिनट के लिए वायु अवलोकन और उसके बाद 5 मिनट की पेंटिंग ने बच्चों को विषय से जोड़े रखा, और उनके गत्यात्मक कौशल को बढ़ाया।

## मेरी कक्षा में कारगर रणनीतियाँ

हर बच्चे के लिए कारगर सन्तुलन बनाने हेतु शिक्षक निम्नलिखित तकनीकों पर विचार कर सकते हैं :

**1. अवलोकन और समायोजन**

शिक्षकों को यह देखने के लिए समय निकालना होगा कि बच्चे विभिन्न गतिविधियों पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। क्या वे सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं, या उनका ध्यान इधर-उधर भटक रहा है? आगे आने वाले पाठों के लिए गति को समायोजित करने में इन अवलोकनों का उपयोग करें, क्योंकि लचीलापन महत्त्वपूर्ण है। समायोजन करने के लिए तैयार रहें।

**2. बदलाव के क्रम को विवेक से काम में लाएँ**

छोटे बच्चों के लिए एक गतिविधि से दूसरी में जाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। अगली गतिविधि हेतु उन्हें तैयार करने के लिए शान्त तरीक़ों का इस्तेमाल करते हुए सहज बदलाव की योजना बनाना बेहतर होता है। कोई गीत या थोड़ी देर आराम बच्चों को अपना ध्यान फिर से केन्द्रित करने में मदद कर सकता है।

**3. तरह-तरह की गतिविधियाँ करना**

तरह-तरह की गतिविधियों को आपस में मिलाएँ। मसलन, व्यावहारिक परियोजनाएँ, कहानी सुनाना, समूह चर्चा, शान्त चिन्तन, आदि। ये विविधताएँ अनुभवों का ऐसा मिश्रण बनाती हैं जो सीखने की विभिन्न शैलियों और ज़रूरतों को पूरा करता है।

चित्र 3 : चित्रकारी के लिए प्रोत्साहित करना बच्चों की अभिव्यक्ति को पंख देना है

**4. काम और आराम के बीच सन्तुलन बनाएँ**

बच्चों को सक्रिय सहभागिता की अवधि के साथ-साथ शान्त चिन्तन या आराम के क्षण भी दें। उदाहरण के लिए, किसी उत्साहपूर्ण समूह गतिविधि के बाद, कुछ मिनटों के लिए, जिस तरह बताया जाए उस तरह साँस लेने, एक छोटी कहानी सुनाने, या स्वतंत्र रूप से खेलने का समय दें। यह सन्तुलन ऊर्जा के स्तर और ध्यान को बनाए रखने में मदद करता है।

**5. समय का प्रबन्धन विवेक से करें**

यह सुनिश्चित करना ज़रूरी है कि गतिविधियाँ न तो बहुत लम्बी हों न बहुत छोटी। इससे बच्चों की रुचि बनाए रखने और सीखने के अवसरों को बढ़ाने में मदद मिलेगी। दृश्य टाइमर का उपयोग करने से बच्चों को समय की स्पष्ट समझ बनाने में भी मदद मिल सकती है।

इन रणनीतियों को लागू करके, शिक्षक अपनी कक्षा की गतिविधियों के गति नियोजन को बेहतर कर सकते हैं ताकि सभी बच्चों को सीखने का अधिक प्रभावी और आनन्ददायक अनुभव मिल सके।

## निष्कर्ष

मैंने अपनी कक्षा में कई बदलाव देखे हैं। जैसे, कोई शर्मीला बच्चा गति-आधारित कला सत्र के दौरान खिल उठता है, या एक चंचल बच्चा समय-आधारित गणित के खेल के दौरान ध्यान केन्द्रित करने लगता है।

*अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।*

**भावना नायक** अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन धमतरी, छत्तीसगढ़ की ईसीसीई टीम में कार्यरत हैं। उन्हें बच्चों के लिए सीखने को मज़ेदार बनाकर उनके साथ काम करना पसन्द है।

सम्पर्क : bhavna.nayak@azimpremjifoundation.org

बाल मेला

# एक सामुदायिक कार्यक्रम ने नज़रिए को कैसे बदला?

जे विमला

बाल मेला जैसे सामुदायिक कार्यक्रम समुदाय और अभिभावकों को आँगनवाड़ी, विद्यालय के कामों को समझने में मददगार हो सकते हैं। प्रस्तुत लेख दर्शाता है कि चार आँगनवाड़ी केन्द्रों द्वारा मिलकर आयोजित किए गए बाल मेले से समुदाय और अभिभावकों को बच्चों के विकास में आँगनवाड़ी की भूमिका को समझने में मदद मिली। इससे कार्यकर्त्रियों व अभिभावकों के बीच एक विश्वास भी पनपा।

एक सुपरवाइज़र के रूप में आँगनवाड़ियों का दौरा करना मेरे कार्य का सबसे सन्तोषजनक पहलू है। बच्चों के साथ समय बिताना, उनकी बातें सुनना, और उनके सीखने के क्रियाकलापों का अवलोकन करना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

एक सुबह जब एक आँगनवाड़ी में गई, मैंने देखा वहाँ की कार्यकर्त्री चिन्तित लग रही थीं। केन्द्र में बहुत कम बच्चे उपस्थित थे, और यही उनकी चिन्ता का कारण लग रहा था। कुछ चुपचाप चित्र बना रहे थे, और एक बच्चा गुनगुना रहा था। सब कुछ व्यवस्थित लग रहा था, लेकिन कई बच्चों की अनुपस्थिति एक बड़ी समस्या को उजागर कर रही थी। बीमारी, पारिवारिक माहौल, और अभिभावकों का रोज़गार के लिए बाहर जाना, ये सभी अनुपस्थिति के कारण थे। आमतौर पर यही स्थिति दिखाई देती है। कार्यकर्त्री पढ़ाने के लिए तैयार हैं, लेकिन कई बच्चे सीखने के लिए मौजूद नहीं होते। अनियमित उपस्थिति उनके सीखने और विकास में बाधा डालती है।

चित्र 1: खेल गतिविधियों से बच्चों का जुड़ाव उनके सीखने को मज़ेदार बनाता है

> बाल मेला की असली शक्ति इसकी पूरे समुदाय को एकजुट करने की क्षमता है।

कई अभिभावक आँगनवाड़ी में बच्चों की दैनिक उपस्थिति को ज़्यादा महत्त्व नहीं देते, क्योंकि वे मानते हैं कि औपचारिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय से शुरू होती है। कुछ अपने बच्चों को केवल थोड़े समय के लिए ही आँगनवाड़ी भेजते हैं ताकि वे बैठने, निर्देशों का पालन करने तथा बुनियादी स्वच्छता सम्बन्धी आदतें जैसी रोज़मर्रा की दिनचर्या सीख लें। इसके बाद वे उन्हें निजी विद्यालयों में भेज देते हैं। जब हम अभिभावकों के साथ उपस्थिति के बारे में चर्चा करते तो अकसर उनका जवाब होता कि ये अभी छोटे हैं, या फिर यह कि बड़े विद्यार्थी भी तो कक्षा में नहीं जाते हैं। प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) के बारे में यह ग़लतफ़हमी अभिभावकों की भागीदारी और बच्चों की निरन्तर उपस्थिति में बाधाएँ पैदा करती है।

## सरल और प्रभावी समाधान है बाल मेला

इन चुनौतियों से निपटने के लिए, हमने एक सीधा-सादा लेकिन प्रभावशाली समाधान लागू किया—बाल मेला। यह आयोजन समुदाय में जागरूकता पैदा करने के लिए एक उत्कृष्ट मंच के रूप में कार्य करता है। बहुत लम्बे समय से, आँगनवाड़ी केन्द्रों को केवल ऐसे स्थान के रूप में देखा जाता रहा है जहाँ बहुत छोटे बच्चों को उनके अभिभावकों के काम पर जाने के दौरान सुरक्षित देखभाल के लिए छोड़ा जा सके। बाल मेला, अभिभावकों और समुदाय को हमारी गतिविधियों को प्रत्यक्ष रूप से देखने के लिए आमंत्रित करके इस नज़रिए को बदलता है।

बाल मेले में अपने बच्चों द्वारा किए जा रहे विभिन्न कामों को देखकर, अभिभावक वास्तव में अधिगम के उस वातावरण की सराहना कर सकते हैं जिसे वे पहले शायद पहचान नहीं पाए। बाल मेले का अनौपचारिक वातावरण खुले संवाद को प्रोत्साहित करता है। इससे हम प्रत्येक गतिविधि का उद्देश्य और बच्चे के विकास में उसके योगदान को समझा सकते हैं। अभिभावकों के साथ यह व्यक्तिगत संवाद औपचारिक बैठकों की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी है।

## आयोजन से ज़्यादा एक रणनीतिक पहल

हमने तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले के तोगरापल्ली गाँव में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन टीम के सहयोग से चार आँगनवाड़ियों के साथ मिलकर एक बाल मेले का आयोजन किया। यह आयोजन अभिभावकों में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा की समझ बढ़ाने और बाल विकास में आँगनवाड़ियों की भूमिका को उजागर करने के उद्देश्य से किया गया था, जिसके केन्द्र में आनन्द था। शुरुआत में, बच्चों को बाल मेले के बारे में कोई अनुभव न होने और कृषि के चरम मौसम में अभिभावकों की उपस्थिति को लेकर कार्यकर्त्रियाँ चिन्तित और थोड़ा झिझकी हुई थीं। लेकिन जब इस आयोजन के सकारात्मक प्रभाव पर चर्चा की गई तो वे प्रेरित हुईं। उन्होंने इसकी तैयारी के लिए पूरी लगन से काम किया।

## सभी को एक साथ लाना

बाल मेले की असली शक्ति इसकी पूरे समुदाय को एकजुट करने की क्षमता है। एकजुटता की यह भावना आयोजन की योजना और तैयारी के चरणों में ही दिखाई देने लगी थी। हमारे मार्गदर्शन में चार कार्यकर्त्रियों और सहायिकाओं ने हर एक चीज़ को सावधानीपूर्वक नियोजित किया। अभिभावकों, समुदाय के सदस्यों और स्थानीय वरिष्ठजन से बातचीत करने के लिए हम घर-घर गए और बाल मेला की घोषणाएँ भी कीं।

शुरुआत में, कई अभिभावकों ने कार्यों में व्यस्त होने के कारण कम रुचि दिखाई। लेकिन कार्यकर्त्रियों ने बच्चों को समझाया कि उनके अभिभावकों की उपस्थिति बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए कई रणनीतियाँ अपनाई गईं। मसलन, गाँव के व्हाट्सएप ग्रुपों के ज़रिए सन्देश भेजना, व्यक्तिगत रूप से निमंत्रण बाँटना, और सबसे ज़रूरी बात, बच्चों को अपने अभिभावकों को आमंत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करना, आदि।

कार्यकर्त्रियों ने सहयोग और संसाधन के लिए समुदाय के सदस्यों और जनप्रतिनिधियों से भी बातचीत की; इसमें आयोजन स्थल की व्यवस्था, वक्ताओं को निमंत्रण और समुदाय से सामग्री प्राप्त करना शामिल था। यह समुदाय में स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देने का एक सचेत प्रयास था जिसमें इस सन्देश पर ज़ोर दिया गया कि यह हमारी आँगनवाड़ी है, और ये हमारे बच्चे हैं। यह तरीक़ा सफ़ल रहा, क्योंकि समुदाय के सदस्यों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी और इस आयोजन का सक्रिय रूप से समर्थन किया।

## आनन्द और अभिव्यक्ति का दिन है बाल मेला

बाल मेले के दिन अभिभावक और समुदाय के सदस्य गतिविधियों में शामिल हुए। बच्चों ने काफ़ी उत्साह दिखाया। यहाँ तक कि शर्मीले बच्चे भी अपने दोस्तों के साथ इसमें शामिल हुए। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था, बच्चों द्वारा कहानी का नाटक के रूप में प्रस्तुतीकरण। उनकी संवाद अदायगी और कहानी को अपने दम पर आगे बढ़ाने की क्षमता ने अभिभावकों को प्रभावित किया। कार्यकर्त्रियों ने बच्चों को कहानी सुनाने, अवधारणात्मक गतिविधियाँ करने, वस्तुओं की गिनती करने जैसी कई गतिविधियों के लिए तैयार किया ताकि अभिभावक समझ सकें कि बच्चे केवल गाने और खेल के अलावा भी बहुत कुछ सीख रहे हैं। प्रत्येक गतिविधि के बाद कार्यकर्त्रियों ने बताया कि इन गतिविधियों से बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास में कैसे मदद मिली।

अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ खेल खेलते देखना बहुत उत्साहवर्धक अनुभव रहा। ऐसा नज़ारा रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में कम ही देखने को मिलता है। इस साझे जुड़ाव ने मिलकर सीखने के वातावरण की अवधारणा को और मज़बूत किया। मेले के एक विशेष हिस्से में सन्तुलित आहार और स्वच्छता के महत्त्व को दर्शाया गया, साथ ही सरल प्रदर्शनों के ज़रिए बताया गया कि आँगनवाड़ी में बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य का ध्यान कैसे रखा जाता है।

हमने कुछ माताओं को देखा जो पहले झिझक रही थीं और दूर खड़ी थीं, लेकिन अपने बच्चों का आत्मविश्वास देखकर उन्हें हमारे काम का महत्त्व समझ में आया। अन्ततः एक माँ ने कहा, "मुझे नहीं पता था कि मेरे बच्चे में इतना आत्मविश्वास है। यह उसके लिए बहुत अच्छी बात है।" एक अन्य ने टिप्पणी की, "हमें कभी एहसास नहीं हुआ कि हमारी आँगनवाड़ी सिर्फ़ बच्चों को यहाँ छोड़कर जाने की जगह से कहीं बढ़कर है। आज हमने देखा कि वे कितना कुछ सीख रहे हैं, और आनन्द ले रहे हैं।"

चित्र 2 : बाल मेले में बच्चे झिझक, संकोच तोड़कर गतिविधियों में शामिल होते हैं

> एक पिता ने बताया कि उन्हें लगता था कि आँगनवाड़ी सिर्फ़ एक सुरक्षित जगह है जहाँ वे अपने बच्चे को छोड़कर काम पर जा सकते हैं। लेकिन बाल मेले के ज़रिए वे जान गए कि आँगनवाड़ी उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करती है।

इन प्रतिक्रियाओं से साफ़ तौर पर पता चला कि यह कार्यक्रम धारणाओं को बदलने और विश्वास बनाने में सफल रहा। ग्राम प्रधान, जनप्रतिनिधि, मण्डल शिक्षा अधिकारी और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक भी इसमें शामिल हुए। मण्डल शिक्षा अधिकारी ने कार्यकर्त्रियों द्वारा उपयोग की जाने वाली कम दाम वाली और निःशुल्क शिक्षण सामग्री देखी। उन्होंने कहा कि आँगनवाड़ी के बच्चे प्राथमिक विद्यालय में अन्य बच्चों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। साथ ही, उन्होंने क्षेत्र के सभी पात्र बच्चों से नियमित रूप से आँगनवाड़ी आने का आग्रह भी किया।

## स्थाई प्रभाव

बाल मेले का सकारात्मक प्रभाव दीर्घकालीन रहा। इस आयोजन में भाग लेने वाली चारों आँगनवाड़ियाँ कई मायनों में मज़बूत हुईं। हमने अपने आगामी दौरों के दौरान स्पष्ट परिणाम देखे। अभिभावकों और कार्यकर्त्रियों के बीच विश्वास का बन्धन मज़बूत हुआ, और बाल मेले के बाद के हफ़्तों में बच्चों की उपस्थिति में भी वृद्धि हुई।

बाल मेले से न केवल बच्चों, अभिभावकों और समुदाय को, बल्कि कार्यकर्त्रियों को भी लाभ हुआ। हमने कार्यकर्त्रियों के बीच बेहतर टीम वर्क देखा, क्योंकि वे विचारों का आदान-प्रदान करने लगी थीं और एक दूसरे के साथ सहयोग करती थीं। इससे आँगनवाड़ियों के बीच मतभेद कम हुए, और गतिविधियों, रिकॉर्ड रखने, और बैठकों के लिए एक साझा दृष्टिकोण बना।

जब कार्यकर्त्रियों से बाल मेले के प्रभावों के बारे में बात की तो उन्होंने कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डाला :

- चारों आँगनवाड़ियों के नामांकन में वृद्धि हुई। बच्चे नियमित रूप से आने लगे और ज़्यादा समय तक रुकने लगे हैं।
- अभिभावक, ईसीसीई दिवस पर मासिक अभिभावक बैठक में भाग लेते हैं, और अपने अनुभव साझा करते हैं।
- कुछ अभिभावक अब अपने बच्चों से रोज़ाना पूछते हैं कि उन्होंने आँगनवाड़ी में क्या किया, और उनकी बातें सुनते हैं।
- अभिभावक सामग्री तैयार करने और विशेष कार्यक्रम आयोजित करने में मदद करते हैं।
- बच्चे केन्द्र में आने के लिए पहले से ज़्यादा उत्साहित लगे। अभिभावक अब बच्चों को रूमाल और पानी की बोतल जैसी ज़रूरी चीज़ें देकर भेजते हैं, और यह सुनिश्चित करते हैं कि वे समय पर पहुँचें।
- समुदाय के सदस्यों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है, और केन्द्र की ज़रूरतों को पूरा करने में मदद करनी शुरू कर दी है।

## अभिभावकों की प्रतिक्रिया

बाल मेले में शामिल अभिभावकों ने बताया कि वे अपने बच्चों के शुरुआती विकास के लिए आँगनवाड़ी भेजने के महत्त्व को समझने लगे हैं। बाल मेले में भाग लेने वाली एक माँ ने बताया कि कई लोगों ने उन्हें अपने बच्चे को निजी विद्यालय में भेजने का सुझाव दिया था, लेकिन मेले के दौरान कार्यकर्त्रियों द्वारा आयोजित सभी आकर्षक गतिविधियों को देखने के बाद उन्हें बहुत ख़ुशी हुई कि उन्होंने सही चुनाव किया।

दूसरी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि जो पिता आमतौर पर ऐसे कार्यक्रमों में शामिल नहीं होते थे क्योंकि वे मानते थे कि यह महिलाओं का क्षेत्र है, वे न केवल मेले में आए, बल्कि गतिविधियों में रुचि भी ली। एक पिता ने बताया कि उन्हें लगता था कि आँगनवाड़ी सिर्फ़ एक सुरक्षित जगह है जहाँ वे अपने बच्चे को छोड़कर काम पर जा सकते हैं। लेकिन बाल मेले के ज़रिए वे जान गए कि आँगनवाड़ी उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करती है, वह भी उनके अपने समुदाय में ही। वे आमतौर पर अपने शान्त और शर्मीले बच्चों को गतिविधियों में सक्रिय और आत्मविश्वास के साथ भाग लेते देखकर भी आश्चर्यचकित थे।

## निष्कर्ष

बाल मेला सभी के लिए एक ऐसा अनुभव था, जिसने उनकी आँखें खोल दीं। सबको पता चला कि आँगनवाड़ी प्रणाली बच्चों के अच्छे विकास में मदद करने का एक बढ़िया तरीक़ा है। इस आयोजन ने यह भी साबित किया कि जीवन की अच्छी शुरुआत के लिए महँगी फ़ीस देने की आवश्यकता नहीं होती; बल्कि इसके लिए ऐसे शिक्षकों की ज़रूरत होती है जो अपने काम के प्रति कटिबद्ध हों। साथ ही, ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है जो खेल पर केन्द्रित हो, तथा एक ऐसा आनन्दमय माहौल निर्मित करे जो बच्चों के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करे। इस आयोजन ने आँगनवाड़ी को एक साधारण देखभाल केन्द्र से बदलकर एक ऐसा महत्त्वपूर्ण शैक्षिक स्थान बना दिया है जो हमारे बच्चों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर रहा है।

तालिका 1. बाल मेले से पहले अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की ईसीई संगारेड्डी टीम की सहायता से कार्यकर्त्रियों और सहायिकाओं द्वारा तैयार किया गया एक विस्तृत कार्यक्रम

| समय | गतिविधि | उत्तरदायित्व |
|---|---|---|
| 9:00–9:30 | बच्चों को कार्यक्रम स्थल पर लाना | आँगनवाड़ी सहायिका |
| 9:30–9:45 | अभिभावकों को आमंत्रित करना और बच्चों को कार्यक्रम के लिए तैयार करना | आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री और सन्दर्भ व्यक्ति |
| 9:45–10:00 | बच्चों के साथ स्वतंत्र चित्रकारी | आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री |
| 10:00–10:10 | प्रारम्भिक टिप्पणी : बाल मेले का परिचय, आयोजन का उद्देश्य और कार्यक्रम का विवरण साझा करना | आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री / सुपरवाइज़र |
| 10:10–10:40 | गीत : भाषा विकास से सम्बन्धित (बच्चे अपने पाठ्यक्रम में से किसी एक गीत को प्रस्तुत करेंगे) | आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री |
| 10:40–11:00 | बातचीत : भाषा विकास से सम्बन्धित<br>(शिक्षक चित्र पुस्तकों का उपयोग करके बातचीत का नेतृत्व करेंगे) | आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री |
| 11:00–11:15 | प्रारम्भिक वर्षों में मस्तिष्क के विकास के महत्त्व को समझाना | आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री / सुपरवाइज़र |
| 11:15–12:00 | संज्ञानात्मक विकास से सम्बन्धित गतिविधियाँ : अभिभावक और बच्चे<br>आकृतियों का मिलान<br>संवेदी गतिविधि (आँखों पर पट्टी बाँधना और वस्तुओं को छूकर पहचानना) | आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री / सन्दर्भ व्यक्ति |
| 12:00–12:30 | अभिभावकों के लिए शारीरिक-गत्यात्मक विकास से सम्बन्धित गतिविधियाँ :<br>मोतियों में धागा पिरोना<br>लेसिंग बोर्ड<br>रंग भरना / चित्रकारी | आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री / सन्दर्भ व्यक्ति |
| 12:15 | अभिभावकों की गतिविधि के दौरान बच्चे दोपहर के भोजन के लिए जाएँगे | आँगनवाड़ी सहायिका |
| 12:30–12:50 | स्पष्टीकरण :<br>बच्चों को आँगनवाड़ी केन्द्र भेजने में अभिभावकों की भूमिका<br>केन्द्र की गतिविधियों में समुदाय की भागीदारी | आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री / सुपरवाइज़र |
| 12:50–1:05 | केन्द्र / अपने बच्चों के विकास पर अभिभावकों के विचार<br>सरकारी विद्यालय के शिक्षकों द्वारा अनुभव साझा करना | अभिभावक और प्राथमिक विद्यालय शिक्षक |
| 1:05–1:15 | समापन टिप्पणी | आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री |

*आभार : इस लेख को लिखने में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की सुजाता रावी के सहयोग और मार्गदर्शन के लिए उनका आभार।*

**जे विमला** तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले की सदाशिवपेट परियोजना की एक्सटेंशन ऑफ़िसर (सुपरवाइज़र) और प्रमुख मास्टर ट्रेनर हैं। उन्होंने अपने ब्लॉक में सभी क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का नेतृत्व किया है। वे आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों और सहायिकाओं को उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए प्रेरित करती हैं।

सम्पर्क : vimala.tanay@gmail.com

# बच्चों से मैंने यह सब सीखा

तरन्नुम निशा

यह अनुभव छोटे बच्चों के साथ काम करने का है। इन बच्चों की उम्र 3 से 6 वर्ष है। बच्चों के साथ काम करने के लिए लेखिका ने गिजुभाई, *तोत्तोचान* को ज़ेहन में रखा, और उनकी उम्र को देखते हुए अलग-अलग पुस्तकों और यूट्यूब से कुछ खेलों का चयन किया।

पहले से निर्धारित दिन आँगनवाड़ी केन्द्र पहुँची तो देखा कि केन्द्र अस्त-व्यस्त था, और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री अपना कार्य कर रही थीं। बच्चे चटाई पर बैठे खिलौनों से खेल रहे थे। सहायिका वहीं एक कोने में बैठी बच्चों की निगरानी कर रही थीं कि कहीं कोई बच्चा बिना बताए घर न चला जाए। मुझे देखते ही कार्यकर्त्री ने मेरे लिए एक कुर्सी दी, पर मैंने बच्चों के साथ चटाई पर बैठना सही समझा, और उनके बीच बैठ गई।

कार्यकर्त्री ने अपनी कक्षा प्रक्रिया शुरू की। पहले सभी बच्चों को पंक्तियों में बैठाया, फिर एक-एक करके उनसे उनका नाम पूछा। कुछ जवाब दे रहे थे, कुछ चुपचाप बैठे थे। मैंने बच्चों से बात करनी चाही, पर किसी ने मेरी बात का जवाब ही नहीं दिया। जो बच्चे बोल रहे थे, पूछने पर वे भी चुप रहे। तब मैं चुपचाप उनके द्वारा किए गए काम को देखने लगी।

कार्यकर्त्री का बात करने का तरीक़ा प्रेमपूर्ण था। उनकी बातों से लगा कि वे बच्चों को अच्छी तरह जानती हैं। वे बातचीत में उनके घर-परिवार की बातें भी जोड़ रही थीं। बच्चे उनकी बातों के जवाब दे रहे थे। यह देखकर एक बात समझ आई कि बच्चों से बातचीत कैसे शुरू की जा सकती है। कार्यकर्त्री ने बच्चों के साथ अक्षर और गिनती बुलवाने की प्रक्रिया की। पहले वह बोलतीं, उनके पीछे-पीछे बच्चे बोल रहे थे। थोड़ी देर बाद बच्चों के खाने का समय हो गया और उन सभी को खाना खिलाया गया। खाने से पहले हाथ धुलवाए, पंक्तियों में बैठाया और प्रार्थना करवाई गई। इस सबके बाद कुछ बच्चे खिलौनों से खेलने लगे, और कुछ घर जाने के लिए कहने लगे।

चित्र 1: स्नेह से बात करना बच्चों को सीखने के लिए तैयार करता है

> **“जब मैंने बच्चों के साथ काम किया, समझ आया कि बच्चों के सीखने की गति तेज़ होती है जब वे रुचि लेकर किसी बात को सुनते या गतिविधि करते हैं, उसके सन्दर्भ को समझते हैं और अपनी बात सन्दर्भ से जोड़कर कहते हैं।”**

कार्यकर्त्री अभी भी व्यस्त थीं। मैं उनसे कक्षा प्रक्रिया के बारे में बातचीत करना चाहती थी। मेरे पूछने पर वे कुछ समय देने के लिए तैयार हो गईं। उन्होंने बताया कि बच्चों को घर से बुलाना पड़ता है, और ज़्यादातर बच्चों ने अभी-अभी ही आना शुरू किया है। साथ ही, प्रत्येक दिन वह अलग-अलग विषय की जानकारी देती हैं। उनकी बातें सुनकर समझ आया कि बच्चों की आयु व डोमेन के अनुसार गतिविधियों का अभाव है, और कार्यकर्त्री की शाला-पूर्व या अनौपचारिक शिक्षा की समझ बहुत ज़्यादा नहीं बनी है। इस बातचीत के दौरान ही मैंने कार्यकर्त्री के साथ अगले दिन की कार्ययोजना साझा की। आँगनवाड़ी से निकलते हुए मन में बहुत सारे विचारों की लहरें उठ रही थीं। जैसा सोचा था वैसा कुछ हुआ नहीं। बच्चों ने न मुझसे बातें कीं न मेरी कोई भी बात सुनी। किताबें पढ़ते समय यह काम करना काफ़ी आसान लग रहा था, लेकिन आँगनवाड़ी जाने के बाद असल समस्या समझ आ रही थी।

दूसरे दिन केन्द्र पहुँची, और सबसे पहले कक्षा के स्वरूप में कुछ बदलाव किया। सभी बच्चों के लिए पर्याप्त फ़र्श बिछवाया, और कार्यकर्त्री की टेबल-कुर्सी को अन्य कक्ष में स्थानान्तरित किया ताकि बच्चों के साथ गतिविधि के लिए पर्याप्त स्थान मिल सके। मैं बच्चों के साथ बैठी, और उनसे बातचीत करना शुरू किया। 3 वर्ष की सौम्या थोड़ी बातूनी लगी, इसलिए सबसे पहले उसी से बात शुरू की।

मैंने पूछा, “आपका नाम क्या है?”

चित्र 2 : कार्ड वाली गतिविधि और बच्चों का जुड़ाव

चित्र 3 : भाव व अभिनय के साथ कविता का आनन्द लेते बच्चे

उसने कहा, "मेरा नाम सौम्या है।" और तुरन्त मुझसे पूछा, "तुम क्यों पूछ रही हो?" मैंने जवाब दिया, "मैं आप सभी के साथ खेलने आई हूँ इसलिए।"

दूसरे बच्चे भी अपने नाम बताने लगे। जो झिझक रहे थे उन्हें कार्यकर्त्री ने प्रोत्साहित किया। उन्होंने भी अपने नाम बताए।

बच्चों से सामान्य बातचीत हुई। जैसे—उन्हें कौन-से खेल पसन्द हैं; उनके घर में कौन-कौन हैं; वे कौन-से जानवर के बारे में जानते हैं; आदि। बातचीत करते-करते उन्हें ऑटो, साइकिल, बस जैसे कुछ वाहनों के चित्र दिखाए। सभी बच्चे चित्र देखकर उनके नाम बता पा रहे थे। इसी क्रम में, अपनी योजना अनुसार गतिविधि करवाती गई। देखा कि सभी उन गतिविधियों में शामिल हो रहे थे। मैं प्रतिदिन जाती और बच्चों के साथ कार्यकर्त्री की मार्गदर्शिका में सुझाई गई गतिविधि करवाती। 15 दिन की गतिविधि के बाद बच्चों ने मेरे गतिविधि और बातचीत करवाने के तरीक़े को समझ लिया। सभी बच्चे नियमित केन्द्र में भी आने लगे।

## बच्चों का सीखना

अकसर हम सोचते हैं कि छोटे बच्चे बातों को जल्दी भूल जाते हैं, या ध्यान नहीं देते। लेकिन जब मैंने उनके साथ काम किया, समझ आया कि बच्चों के सीखने की गति तेज़ होती है वो जब रुचि लेकर किसी बात को सुनते या गतिविधि करते हैं, उसके सन्दर्भ को समझते हैं और अपनी बात सन्दर्भ से जोड़कर कहते हैं। बच्चों के साथ हुए कुछ अनुभव यहाँ प्रस्तुत हैं जो उनके सीखने की प्रक्रिया के बारे में कई बिन्दुओं को रेखांकित करते हैं।

## पहला अनुभव

मैं बच्चों के साथ 'वाहन' थीम पर बात कर रही थी। उन्हें विभिन्न वाहनों के चित्र दिखाते हुए पूछा कि कौन-सा वाहन कहाँ चलता है? साइकिल देखकर बच्चे बोले कि यह सड़क पर चलती है। बस भी सड़क पर चलती है। हवाईजहाज़ आसमान में उड़ता है। नाव दिखाने पर वे थोड़ा सोचने लगे। मैंने उन्हें हिंट दिया कि तालाब में क्या-क्या चलता है। चूँकि केन्द्र से थोड़ी दूरी पर तालाब है, और वहाँ से सभी का आने-जाने का रास्ता है, इसलिए मुझे पूरी उम्मीद थी कि बच्चे सही जवाब देंगे। लेकिन उनके जवाब सुनकर मैं हैरान थी। केन्द्र में लगभग 15 बच्चे थे। वे सभी बोले कि तालाब में जेसीबी चलती है, ट्रैक्टर चलता है। सौम्या ने बड़े ही आत्मविश्वास से कहा कि कोई-कोई लोग अपनी गाड़ी भी तालाब में चलाते हैं। बच्चे अपने अनुभव के साथ अपनी बातें रख रहे थे। चूँकि तालाब में साफ़-सफ़ाई का काम लम्बे समय से चल रहा था तो उन्होंने कभी उसमें नाव चलते नहीं देखी थी। अतः उन्होंने जो देखा, वही बताया।

इस थीम पर काम करते हुए वाहन के अलग-अलग आकार के कट आउट जमाने वाली गतिविधि करवाई। सभी बच्चों को एक-एक आयताकार टुकड़ा, कुछ गोलाकार टुकड़े, और कुछ तिकोने टुकड़े दिए। अपेक्षा यह थी कि सभी अपने-अपने हिसाब से आकृतियाँ बनाएँगे। उन्होंने अपने अनुसार कट आउट जमाने का प्रयास किया, पर दो बच्चों ने अपने कट आउट को मिलाकर एक बड़ी आकृति बनाई। उस आकृति की आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री ने तारीफ़ की, और थोड़ी देर बाद सभी बच्चों ने अपने कट आउट एक साथ जमाकर रेलगाड़ी बना दी।

## दूसरा अनुभव

पानी के जहाज़ का चित्र दिखाने पर सभी बच्चे बोले कि यह जहाज़ है। मैं फिर हैरान हुई कि बच्चों ने यह नहीं देखा होगा फिर तुरन्त कैसे पहचाना। मैंने अपनी बात को आगे बढ़ाया और पूछा कि तुमने इसे चलते हुए देखा है। बच्चे भाव-भंगिमाओं के साथ पानी में जहाज़ का चलना बताने लगे। उनके वाक्यों में लहर, समुद्र जैसे शब्द आ रहे थे। सभी अपने-अपने तरीक़े से जहाज़ के बारे में बता रहे थे। जब जानना चाहा कि उन्होंने

जहाज़ कहाँ देखा, वे बोले टीवी पर। बच्चों ने पानी के जहाज़ को तो तुरन्त ही पहचाना, लेकिन तालाब में चलने वाली नाव को बताने में वे असमर्थ थे। हालाँकि दोनों ही स्थितियों में वे सीधेतौर पर अपने अनुभव का इस्तेमाल कर रहे थे। समझ आया कि तीन वर्ष के बच्चे भी चीज़ों को ध्यान से देखते हैं, बातों को सन्दर्भ से जोड़ते हैं, और यहीं से सीखने की शुरुआत होती है। इसीलिए शायद एक सवाल के बहुत सारे जवाब आने लगते हैं।

## तीसरा अनुभव

बच्चे अपने आस-पास के माहौल के बारे में सोचते और बोलते थे। कई बार कल्पना भी करते। मसलन, एक बच्चे ने कहानी सुनाई–

"जंगल में भूत रहता है। एक दिन मेरे घर आया। मुझसे मेरी गाड़ी माँग रहा था। वो उड़कर मेरी छत पर आया। मैंने उसे डण्डे से मारकर भगाया।"

मैंने उससे पूछा, "तुमने भूत कहाँ देखा है? उसने कहा, "मेरी दादी बताती हैं कि भूत बहुत बड़ा होता है।"

अब भूत पर चर्चा शुरू हुई। वह कैसा होता है; क्या खाता है; उसके घर में कौन-कौन रहता है; आदि। सभी बच्चों को इस बातचीत में मज़ा आ रहा था। वे पूछे गए सवालों का जवाब दे रहे थे।

## चौथा अनुभव

सिया ने केन्द्र में आना शुरू किया। उसकी मम्मी उसको ज़बरन कमरे में छोड़कर चली जातीं। वो थोड़ी देर रोती रहती, फिर चुपचाप एक कोने में बैठ जाती। यह सिलसिला तीन-चार दिन चला। इस बीच आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री और मैं उससे कुछ-न-कुछ बात करने की कोशिश करते, पर वह कोई जवाब नहीं देती। हमने कोशिशें जारी रखीं। पाँचवें दिन वह आई तो आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री किसी काम में व्यस्त होने की वजह से उससे बात नहीं कर पाईं। तब वह ख़ुद उनके पास जाकर बताने लगी, "आज मैं समोसा खाकर आई हूँ। रात में पापा ने मम्मी को मारा था, मैं रोने लगी।" कार्यकर्त्री ने उससे प्यार से बात करते हुए उसका ध्यान दूसरी बातों की तरफ़ किया। बच्चों का आप पर विश्वास होना बहुत ज़रूरी है। मुझे समझ आया कि कार्यकर्त्री का उससे प्यार से बात करना और उसके जवाब न देने पर भी उसको बिना डाँटे मुस्कुराते हुए उससे बातें करते रहना उसके मन में एक विश्वास पैदा कर गया। इस वजह से अब वो ख़ुद अपनी बातें कहती है। अब वह सभी गतिविधियों में भाग लेती है, यहाँ तक कि वो अपने घर भी जाना नहीं चाहती। यहाँ कार्यकर्त्री का धैर्य बहुत महत्त्वपूर्ण था। जिस धैर्य के साथ उन्होंने सिया को कक्षा से जोड़ा, वह बहुत ज़रूरी है।

## पाँचवाँ अनुभव

जब मैंने केन्द्र में जाना शुरू ही किया था, तब देखा कि सभी बच्चे अपना-अपना खेल खेलते रहते थे। धीरे-धीरे मैं बच्चों के साथ खेल में शामिल हुई, और उन्हें समूह में खेल खेलने के अवसर दिए। पहले बच्चे एक दूसरे को खेलने का मौक़ा नहीं देते थे। कोई भी खिलौना, जैसे–गेंद, रस्सी, मुखौटे, अपने पास ही रख लेते थे। उनसे वापस लेने पर वे रोने लगते थे। 'बाल्टी में गेंद डालो' जैसी गतिविधियाँ करवाने पर अगर गेंद बाल्टी में न जाए तो रोने लगते या गेंद लेकर भाग जाते थे।

मुश्किल लगता था कि कोई खेल एक साथ कैसे खेला जाए! पर जब प्रतिदिन बच्चों के साथ एक सामूहिक खेल खेला तो धीरे-धीरे उन्हें समूह में खेल खेलने के नियम समझ आने लगे। वे अपनी बारी का इन्तज़ार करने लगे। अगर कोई अपनी बारी पर नहीं आता या पहले आ जाता तो दूसरे बच्चे उसे बता देते। जिन बच्चों को खेलने में कठिनाई होती थी, दूसरे बच्चे उसे खेल में मदद करते। मसलन, यदि 3 वर्ष के बच्चों को पहिए लुढ़काने में कठिनाई हुई तो 5-6 वर्ष के बच्चों ने उनकी गतिविधि में मदद कर दी। गतिविधि पूरी न होने पर उसे बार-बार दोहराते हैं। अगर कभी कार्यकर्त्री बच्चों को सामूहिक खेल नहीं खिलवातीं तो वे स्वयं ही कार्यकर्त्री से कह देते हैं कि दीदी फ़लाँ खेल खिलवाएँ।

## अन्त में

हमारे लिए यह समझना बहुत ज़रूरी है कि यदि बच्चों से प्रेम से बातचीत की जाए तो वे कही गई हर बात सुनते और समझते हैं। सीखने की शुरुआत बातचीत से बेहतर होती है। बातचीत भी ऐसी जो उनके परिवार, परिवेश से जुड़ती हो, और जिसका जवाब देने में उनको आसानी हो।

मैंने 24 दिन बच्चों के साथ लगातार काम किया। इस दौरान यह समझने में मदद मिली कि वे सीखते कैसे हैं। और जब वे कुछ नया सीखते हैं, उनकी जिज्ञासा और ज़्यादा बढ़ती है। वे कल्पना करते हैं। उनको बोलने की स्वतंत्रता दी जाए तो वे अपनी कल्पना को व्यक्त भी करते हैं। बच्चों के साथ उनकी उम्र के अनुसार गतिविधियाँ करवानी ज़रूरी हैं। पर्याप्त मौक़े और प्रेमपूर्ण व्यवहार उनका सीखना सुनिश्चित करते हैं। हर बच्चा अपनी क्षमता और स्तर के अनुसार सीखता है। वह अपनी कल्पना की दुनिया गढ़ता है, और दुनिया को विस्तार में देखना शुरू करता है।

**तरन्नुम निशा** वर्ष 2015 से शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण के कार्य से जुड़ी हैं। पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षा (विज्ञान विषय) में बच्चों के साथ काम करने का अनुभव है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, सागर, मध्य प्रदेश में काम कर रही हैं।

सम्पर्क : tarannum.nisha@azimpremjifoundation.org

# खेल–खेल में सीखने की उत्सुकता जगाती है आँगनवाड़ी

मुन्नी डहरिया

बच्चों की मासूम हँसी, उत्सुकता भरी बातें, और उनके छोटे-छोटे हाथों से बनी आकृतियाँ ही मेरी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पूँजी हैं। जब मैंने लैलूंगा विकासखण्ड के गाँधी नगर मोहल्ले की आँगनवाड़ी में काम शुरू किया था, आँगनवाड़ी की दीवारें ख़ाली-ख़ाली-सी थीं। बच्चों का मन भी ज़्यादा नहीं लगता था। अकसर वे आते ही झगड़ पड़ते, और जल्दी ऊब जाते। उनका यहाँ आने को लेकर कोई उत्साह नहीं था।

मुझे महसूस हुआ कि अपने कार्यों में बदलाव करना होगा। ऐसा बदलाव जो बच्चों को बाँधे, और सीखने को आनन्दमय बनाए। शुरुआत रंगों से की। एक दिन उन्हें रंग-बिरंगे क्रेयॉन और चार्ट पेपर दिए, और कहा, "जो मन में आए, बनाओ।" बबली ने सूरज बनाया, तोसिया ने पेड़, मदन ने फूल और मनकरन ने तितली। मैंने सभी के चित्रों की सराहना करते हुए कहा, "अरे बबली, तुम्हारा सूरज तो बहुत चमक रहा है! मनकरन, तुम्हारी रंग-बिरंगी तितली अब मदन के बनाए सुन्दर फूल पर मँडराएगी!" सभी बच्चे ख़ुश होकर मुस्कुराने लगे। धीरे-धीरे ख़ाली दीवारें बच्चों की कल्पना से रंगीन हो गईं। उनके भावों को व्यक्त करते चित्र दीवारों पर झलकने लगे। यह देख केन्द्र में प्रवेश करते ही उनकी आँखों में चमक दिखने लगी।

यही वह समय था जब मेरी नज़र प्रगति पर पड़ी। नन्ही-सी बच्ची, पर भीतर से बहुत जिज्ञासु। शुरू में वह भी झिझकती थी, लेकिन जल्द ही उसकी रुचि सबसे अलग दिखाई दी। उसे चित्र बनाना बहुत पसन्द था। जो कुछ वह आँगनवाड़ी में सीखती, घर जाकर माता-पिता के साथ दोहराती। एक दिन तो उसने अख़बार को मोड़-मोड़कर अँग्रेज़ी अक्षरों का चार्ट बना लिया, और मुझे उपहार में दिया। उसकी रचनात्मकता देखकर मेरा मन ख़ुशी से भर गया। मैंने वह चार्ट दीवार पर टाँग दिया। अब वह सभी बच्चों की नज़रों के सामने है।

लेकिन आँगनवाड़ी में हर दिन आसान नहीं था। गतिविधियों के दौरान चुनौतियाँ आती रहतीं। जब बच्चों को आकृतियों में रंग भरने को दिया जाता, कई बार वे गड़बड़ा जाते। कोई लाइन से बाहर रंग भर देता, तो कोई अधूरा छोड़ देता। हालाँकि, छोटे बच्चों की दृष्टि से यह स्वाभाविक था। पज़ल के टुकड़े जोड़ते समय भी वे झुँझला जाते। कई तो कोशिश करने से पहले ही कह देते, "मैम, हमसे नहीं होगा!" ऐसी स्थितियाँ मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती थीं। मुझे डर लगता था कि कहीं बच्चे हार मानने की आदत न डाल लें।

मैंने तरीक़ा बदला। हर कठिन काम को हमने खेल बना दिया। मैं कहती, "चलो देखते हैं कौन किस तरह के रंग भरता है?" या "पज़ल पूरी करने वाले बच्चों के लिए सब तालियाँ बजाएँगे।" धीरे-धीरे उन्होंने यह समझना शुरू किया कि चुनौती कोई बोझ नहीं, बल्कि मज़ा है। वे गिरते-उठते, कोशिश करते और हँसते रहते। यही जिजीविषा उनकी सबसे बड़ी ताक़त बनी।

प्रगति भी इन चुनौतियों से गुज़री। शुरू-शुरू में वह रंग भरते समय अधीर हो जाती। अगर चित्र ठीक न बनता तो उदास हो जाती। लेकिन हर बार मैं उसे प्रोत्साहित करती और कहती, "कोशिश करोगी तो कर पाओगी।" धीरे-धीरे उसकी मेहनत रंग लाने लगी। उसकी ड्रॉइंग निखरने लगी, और आत्मविश्वास बढ़ने लगा।

बच्चों के बीच अब सहयोग की भावना भी दिखने लगी है। पहले जहाँ खिलौनों के लिए झगड़े होते थे, अब वे एक दूसरे को खिलौने देने लगे। किसी का रंग ख़त्म हो जाता तो साथी अपना रंग दे देता। यह बदलाव मेरे लिए बहुत ख़ास था। आँगनवाड़ी अब केवल पढ़ाई की जगह नहीं रही, यह बच्चों के सहयोग और दोस्ती की पाठशाला बन गई।

छुट्टी के दिन भी कुछ बच्चे घर मिलने आ जाते। थोड़ी देर के लिए हम सब घर को ही आँगनवाड़ी बना लेते। वे खिलौने निकालते, चित्र बनाते और कहानी सुनाने लगते। मैं उनसे पूछती कि तुम्हें मीनार बनाने वाला खिलौना क्यों अच्छा लगता है; चित्र में तुमने चिड़िया क्यों बनाई; इस कहानी में घोंसले से चिड़िया के बच्चे के नीचे गिरने पर तुम्हें कैसा लगा; आदि। वे सोचते और दिलचस्प जवाब देते। इन पलों में लगता कि असली शिक्षा यही है, जहाँ खेल-खेल में सीखने की ललक पैदा हो, और बच्चे सीखें।

समय के साथ हमारी आँगनवाड़ी के कई बच्चे विद्यालयों में चले गए। नए शिक्षक उनकी तारीफ़ करते। उन्हीं में से एक प्रगति भी थी। अब वह विद्यालय में भी आत्मविश्वास से पढ़ाई करने लगी थी। उसकी कॉपियाँ साफ़-सुथरी रहतीं। एक बच्ची की दृष्टि से उसके बनाए चित्र सुन्दर होते। सवालों के जवाब वह पूरे आत्मविश्वास से देती। उसकी प्रगति केवल अंकों में नहीं थी, बल्कि उसकी सोच और आत्मविश्वास में भी थी।

पीछे मुड़कर देखती हूँ तो समझ पाती हूँ कि बच्चों में बदलाव लाने के लिए बड़े संसाधनों की ज़रूरत नहीं होती। छोटी-छोटी गतिविधियाँ ही बड़ी सीख दे जाती हैं। मुझे लगता है बच्चों की सच्ची तारीफ़ करने, उन्हें प्रोत्साहित करने में कभी कमी नहीं होनी चाहिए। प्रगति की कहानी इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। मैंने उसकी हर कोशिश को सराहा, और शायद यही वजह थी कि उसके अन्दर कला और पढ़ाई के प्रति गहरा लगाव पैदा हुआ। उसके माता-पिता जब कहते हैं कि यह बदलाव आँगनवाड़ी से आया है, मेरा मन गर्व से भर उठता है।

आज हमारी आँगनवाड़ी पहले जैसी नहीं है। अब यहाँ की दीवारों पर बच्चों की चित्रकला की रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं, और उनकी खिलखिलाहट से कमरा गूँजता है। सीखना अब केवल किताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि हर खेल, हर गीत और हर गतिविधि में छिपा है। बच्चे चुनौतियों से डरते नहीं, बल्कि उन्हें खेल की तरह स्वीकार करते हैं।

यह कहानी सिर्फ़ प्रगति की नहीं है, बल्कि उन सभी बच्चों की है जिन्होंने आँगनवाड़ी की इस छोटी-सी दुनिया को रंग, उमंग और सीख से भर दिया। यहाँ हर चुनौती खेल है, हर सीख उत्सव है, और हर बच्चे का बचपन सँवर रहा है।

**मुन्नी डहरिया, कार्यकर्त्री, आँगनवाड़ी गाँधी नगर 2, लैलूंगा विकासखण्ड, रायगढ़, छत्तीसगढ़**

---

# आँगनवाड़ी केन्द्र में शाला-पूर्व शिक्षा के मेरे अनुभव

रेखा बी

सुबह बच्चों के आँगनवाड़ी आते ही मैं ख़ुशी से उनका स्वागत करती हूँ, उनकी साफ़-सफ़ाई पर ध्यान देती हूँ, और दिन की गतिविधियाँ कराने के लिए ख़ुद को तैयार करती हूँ। गतिविधियों की शुरुआत प्रार्थना से होती है। फिर उन्हें नाश्ते के लिए दूध और बाजरे के लड्डू देती हूँ।

नाश्ते के बाद बच्चों को मानसिक रूप से तैयार करने के लिए एक रचनात्मक खेल खिलाती हूँ। यह खेल पाठ्यक्रम की तैयारी के लिए एक ख़ुशनुमा गतिविधि है। फिर बच्चों को पाठ्यक्रम के अनुसार सीखने-पढ़ने की प्रक्रियाओं में शामिल करती हूँ। इसमें प्रति वर्ष बहुत सारी थीम होती हैं। मैं सप्ताह में एक थीम पढ़ाती हूँ। इसमें एक थीम में पत्तेदार साग व सब्ज़ियों पर एक पाठ है।

मैं इस पाठ से जुड़ी मूर्त वस्तुएँ और चित्र दिखाती हूँ। बच्चे घर पर जो नाश्ता करते हैं, उससे बातचीत की शुरुआत करती हूँ। मुझे लगता है इससे उन्हें विषय को अच्छी तरह समझने में मदद मिलती है। अगले चरण में उन साग-सब्ज़ियों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करती हूँ जो उन्होंने पहले से देखी या खाई हुई हैं। इनके बारे में उनसे बातचीत करती हूँ। वे घर में बनने वाली पालक, मेथी, आलू, गोभी, जैसी साग-सब्ज़ियों के नाम बताते हैं, और अपनी पसन्द की साग-सब्ज़ियों व उनके स्वाद के बारे में बात भी करते हैं। किसी को आलू-पालक अच्छी लगती है तो किसी को भिण्डी या आलू-गोभी। इस दौरान तरह-तरह की साग-सब्ज़ियों के फ़्लैश कार्ड का उपयोग करके बातचीत आगे बढ़ाती हूँ। चूँकि वे पहले से ही पत्तेदार साग-सब्ज़ियों के बारे में बातचीत कर चुके हैं, अत: इनके बारे में सीखने के लिए वे मानसिक रूप से तैयार भी हो चुके होते हैं। अगले चरण में, मैं 'सब्ज़ी ले लो सब्ज़ी' अभिनय-गीत को गाते व नृत्य करते हुए सभी बच्चों को इस प्रक्रिया में जोड़ लेती हूँ। अभिनय-गीत बच्चों के शारीरिक और बौद्धिक विकास में बड़ी भूमिका निभाते हैं। इनमें उन्मुक्तता, मज़ेदारी और सीखना, ये तीनों आयाम एक साथ मिले हुए हैं। इससे बच्चों को अलग-अलग सब्ज़ियों के रूप, रंग, आकार, गुणों और फ़ायदों से परिचित कराती हूँ। वे अभिनय-गीत और सीखने में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

अभिनय-गीत के बाद, एक ऐसी कहानी का उपयोग करती हूँ जिसमें साग-सब्ज़ियों की बातें पिरोई होती हैं। जैसे—प्याज़ की कहानी। कहानी चुनते समय यह सुनिश्चित करती हूँ कि वह सरल और मज़ेदार हो, और बच्चों के दिन-प्रतिदिन के अनुभव के क़रीब हो। इससे उनकी भाषा का विकास होता है, शब्द भण्डार बढ़ता है, और कल्पनाशीलता को पंख लगते हैं। मुझे यह भी लगता है कि कहानी सुनने-सुनाने और उस पर चर्चा से बच्चों में परोक्ष रूप से सामाजिक व मानवीय मूल्यों की समझ बनती है। मैंने पाया कि कक्षा में सभी बच्चे कहानी सुनते समय दिलचस्पी दिखाते हुए आनन्द ले रहे होते हैं।

कहानी के बाद बच्चों के कार्यात्मक विकास में सुधार के लिए विभिन्न दिलचस्प गतिविधियाँ करवाती हूँ। इनमें आड़े-टेढ़े कटे हुए चित्रों को जोड़ना, अपनी कल्पना से चित्र बनाना, चित्रों में रंग भरना और पत्थरों व लकड़ियों से आकृतियाँ बनानी शामिल होती हैं। बच्चे अख़बार के काग़ज़ से हवाई जहाज़, नाव, गेंद जैसे खिलौने बनाते हैं, और एक दूसरे को बनाना भी सिखाते हैं। ये गतिविधियाँ उनकी आँखों और हाथ की गति के बीच समन्वय बनाने में मदद करती हैं। साथ ही, इनसे उनकी माँसपेशियों की गति को ताक़त मिलती है।

रचनात्मक गतिविधियों के बाद साक्षरता की शुरुआती गतिविधियों की बारी आती है। पहले बच्चों को कुछ परिचित शब्द सुनाती हूँ। बाद में उन शब्दों की ध्वनियों को दोहराती हूँ जो उन्होंने सुनी थीं, और उन्हें अपने साथ उन शब्दों का उच्चारण करने का मौक़ा देती हूँ। इसके बाद उन्हीं शब्दों व अक्षरों को शामिल करते हुए एक गीत का उपयोग करके सीखने की निरन्तरता पर ज़ोर देती हूँ। इससे बच्चों को सुनने के अनुभव से एक अलग अनुभव मिलता है। अगले चरण में शब्द कार्ड में लिखे उन शब्दों को बोलने के लिए कहती हूँ जो उनके रोज़मर्रा के जीवन के क़रीब होते हों। इस तरह वे शब्दों को ध्यान से सुनना, अक्षरों व शब्दों की ध्वनियों को पहचानना, उच्चारण करना सीखते हैं। इस प्रकार शब्द, वाक्य और वाक्य समूह के प्रारूप में भाषा अभ्यास की गतिविधियाँ चलती रहती हैं, और वे एक परिचित सन्दर्भ से एक अज्ञात सन्दर्भ की ओर बढ़ते रहते हैं। इस तरह उन पर बिना बोझ बने खेल-खेल में सीखना चलता रहता है। मैंने अनुभव से पाया है कि भाषा इस तरह सिखाई जा सकती है।

इसी तरह, मैं गणित सीखने की गतिविधियाँ भी कराती हूँ। इसे सुबह के नाश्ते से जोड़ती हूँ। बच्चे से पूछती हूँ कि उसने सुबह के नाश्ते में कितनी इडली या चपातियाँ खाई हैं। वह कोई एक संख्या बताता है। फिर मैं उसे एक, दो, तीन, आदि संख्याओं की कल्पना / अन्दाज़ा कराती हूँ। ज़्यादा स्पष्टता के लिए बच्चों को पत्ते, फूल, कंकड़, बीज, पेंसिल जैसी मूर्त वस्तुएँ उँगली रखकर गिनवाती हूँ। वे मेरी मदद से वस्तुओं और संख्या का मिलान करते हुए गिनकर बताते हैं, और अपने मन से कमरे में मौजूद दरवाज़े, खिड़कियाँ, पंखे, चार्ट, पोस्टर जैसी चीज़ें गिनकर बताने का प्रयास भी करते हैं। इसी तरह, हमारे आँगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों की संख्या, समूहों में विभाजित होने पर हर समूह में शामिल बच्चों की संख्या, बाजरा लड्डू देते समय इनकी गिनती, जोड़, आदि कराती हूँ। बच्चों को आस-पास की चीज़ों को गिनने और कम-ज़्यादा बताने में बहुत मज़ा आता है। उन्हें अपने आस-पास की छोटी-बड़ी, मोटी-पतली, हल्की-भारी, दूर-पास की चीज़ों को ढूँढ़कर बताने को कहती हूँ। बच्चे इस गणित खेल में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

मेरे विचार में छोटे बच्चों के लिए अनुभव- और गतिविधि-आधारित शिक्षण अधिक प्रभावी है। इससे उनका सर्वांगीण विकास होता है, नई चीज़ें सीखने में रुचि बढ़ती है, और वे हर दिन नई चीज़ें सीखने की उत्सुकता दिखाते हैं।

**रेखा बी, कार्यकर्त्री, आँगनवाड़ी केन्द्र दर्गा कॉलोनी, दोम्मसंद्रा सर्कल, आनेकल तालुक, बेंगलूरु, कर्नाटक**

# आँगनवाड़ी केन्द्र में स्नेहपूर्ण माहौल का निर्माण

## संध्यावाली गुप्ता

मैं तमनार विकासखण्ड के आँगनवाड़ी केन्द्र, भागोरा-1 में कार्यकर्त्री के रूप में कार्य कर रही हूँ। मेरा मानना है कि यह सिर्फ़ नौकरी नहीं है, बल्कि समाज निर्माण का कार्य है। एक ओर, आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री की भूमिका के लिए यह समझना ज़रूरी है कि बच्चों के लिए अनुकूल स्नेहपूर्ण माहौल बनाने की आवश्यकता क्यों है; और दूसरा, बच्चों की ज़रूरतों को समझते हुए सीखने के लिए अनुकूल वातावरण कैसे तैयार किया जा सकता है? बच्चों के लिए इस अनुकूल वातावरण को तैयार करने के लिए कुछ प्रश्न ख़ुद से पूछना आवश्यक है। मसलन,

बच्चों को क्या अच्छा लगता है?

बच्चों के परिवेश में क्या-क्या उपलब्ध है?

बच्चे अपने साथ कई अनुभवों को लेकर आते हैं। इन अनुभवों को केन्द्र में कैसे जगह दी जा सकती है?

क्या आँगनवाड़ी का वातावरण, और वहाँ संचालित होने वाली गतिविधियाँ सहज हैं; और क्या वे बच्चों का सीखने की प्रक्रिया से जुड़ाव बनाए रखने में मदद करती हैं? आदि।

बच्चों को सीखने का सकारात्मक माहौल देने की शुरुआत उनके आँगनवाड़ी में क़दम रखने से ही शुरू हो जाती है। मैंने अपनी आँगनवाड़ी के मुख्य द्वार पर 'स्वागत चार्ट' लगाया है। इस चार्ट में, नमस्ते, गले लगना, हाथ मिलाना, एल्बो मिलाना, हाई-फ़ाई, आदि जैसे अभिवादन के चिह्न बनाए हुए हैं। बच्चे अपनी पसन्द के अभिवादन चित्रों को छूते हैं, और मैं उनके अनुरूप हरेक बच्चे का स्वागत करती हूँ। यह मज़ेदार स्वागत बच्चों और मेरे बीच एक जुड़ाव की शुरुआत करता है।

बच्चे खेल-खेल में और अपने आस-पास के माहौल के साथ जुड़कर बातचीत करके सीखते हैं। मैंने उनके लिए ऐसी सामग्री बनाई है जो वे देख सकते हैं, छू सकते हैं, और जिन पर वे बातचीत भी कर सकते हैं। जैसे—नाम चार्ट, नियम चार्ट, रैपर चार्ट, फल, सब्ज़ी, पशु-पक्षी, यातायात, मौसम चार्ट, कैलेंडर, आदि। बच्चे चार्ट देखते हैं, कुछ चीज़ों के नाम जो वे जानते हैं, उनको दोहराते हैं। जिन चीज़ों के नाम नहीं जानते मुझसे पूछते हैं, और फिर एक दूसरे से साझा भी करते हैं।

हर माह चयनित थीम के अनुसार बच्चों के साथ काम होता है। उस माह की थीम से जुड़ी बातचीत, गीत, कविता, कहानी, खेल, चित्रकारी, आदि कई काम आँगनवाड़ी में करती हूँ। मसलन, बच्चों के साथ मातृभाषा में सहज बातचीत करते हुए पूछती हूँ, "बताओ तो, अभी कौन-सा मौसम है?"

बच्चे : बारिश, बरसात का मौसम है।

मैं कहती हूँ, "हम सभी लोग मिलकर 'बरसात' से जुड़ा हुआ बालगीत गाएँगे। जिस तरह मैं गाऊँगी और हाव-भाव करूँगी, वैसा ही आप लोग भी करना।" बालगीत के बाद बच्चों से बारिश पर बातचीत होती है।

फिर मैं पूछती हूँ, "अच्छा बताओ, इस बारिश के मौसम में क्या-क्या सामान इस्तेमाल किया जाता है?"

बच्चे : रेनकोट, छाता, प्लास्टिक के जूते / चप्पल, नाव, पन्नी, आदि।

उनके द्वारा बताई गई इन सभी चीज़ों को एक चार्ट पर लिख देती हूँ, और इसे 'मौसम चार्ट' के रूप में तैयार कर केन्द्र में लगा देती हूँ।

बच्चे दिन-प्रतिदिन अलग-अलग वस्तुओं का इस्तेमाल होता देखते हैं। उनके पास इनके बारे में बताने और साझा करने के लिए बहुत-सी बातें और अनुभव होते हैं। मसलन, वे देखते हैं और जानते हैं कि ब्रश करने के लिए अलग-अलग तरह के टूथपेस्ट का इस्तेमाल किया जाता है; सामान ख़रीदने के लिए रुपयों की ज़रूरत होती है; खाना बनाने में सब्ज़ियों और मसालों का इस्तेमाल होता है; बाज़ार में खाने के लिए क्या-क्या मिलता है; आदि। यही नहीं, ऐसी और भी कई बातें वे जानते हैं। इन सब पर बातचीत के लिए मैंने सम्बन्धित वस्तुओं से जुड़े रैपर एकत्रित कर 'रैपर चार्ट' बनाकर आँगनवाड़ी में लगाए। बच्चे इन्हें देखते हैं, और इनसे जुड़ी बातचीत करते हैं जो बहुत आगे तक जाती है। जैसे, मैं रोज़ ब्रश करता हूँ, रोज़ नहाता भी हूँ, मैंने आज ये खाया, आदि। यही नहीं, तरह-तरह के चार्ट उन्हें लिखी हुई इबारत से रू-ब-रू होने का भी मौक़ा देते हैं। अभिव्यक्ति के ऐसे अवसर उपलब्ध कराने से वे सहज, ख़ुश और सुरक्षित महसूस कर पाते हैं।

मैं जिन बच्चों के साथ कार्य कर रही हूँ, उनके घर में पर्याप्त संसाधन और माहौल उपलब्ध नहीं हो पाता है। लेकिन आँगनवाड़ी में उन्हें सामग्री की कमी न हो, और उनकी सीखने में दिलचस्पी भी बने, यह मुझे बहुत ज़रूरी लगता है। बच्चों के सीखने के लिए, मैंने एक प्रेरक माहौल तैयार करने हेतु कम क़ीमत की आस-पास आसानी से उपलब्ध सामग्री को एकत्र कर ऐसी कई सामग्रियों का निर्माण किया है। इनकी मदद से सीखने के अनुकूल वातावरण तैयार करने में मदद मिल रही है, और उनके सीखने के स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। अपने बच्चों को विभिन्न वस्तुओं, घटनाओं पर बातचीत करते हुए देख केन्द्र में आए अभिभावकों के बीच विश्वास पनप रहा है, और उनकी भागीदारी से बच्चों की नियमित उपस्थिति को बढ़ाने में मदद मिल रही है।

यहाँ यह रेखांकित करना भी महत्त्वपूर्ण है कि सीखने का स्नेहपूर्ण माहौल बनाने में सेक्टर स्तर की होने वाली नियमित बैठकों और कार्यशालाओं से काफ़ी मदद मिली है। इनमें मिलने वाले सुझावों से समझ आया कि सीखने को खेल-आधारित और मज़ेदार बनाया जा सकता है। इन बैठकों में हम अपने काम की चुनौतियों और सफलताओं पर बात कर सकते हैं जो काफ़ी प्रोत्साहित करने वाली होती हैं।

**संध्यावाली गुप्ता, कार्यकर्त्री, आँगनवाड़ी भागोरा-1, सेक्टर हमीरपुर, परियोजना तमनार, रायगढ़, छत्तीसगढ़**

# मेरे आँगनवाड़ी केन्द्र की बदलाव यात्रा : सुनीता सिंह

निवेदिता तिवारी

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में एक जगह है कोलार रोड। इसी से सटा है दामखेड़ा सेक्टर-1। इस रिहाइश की तंग गलियाँ, कच्चे-पक्के सँकरे रास्ते और झुग्गी-झोपड़ियाँ, शहर की आधुनिक तस्वीर से बिल्कुल अलग एक दुनिया है दामखेड़ा। वर्ष 2006 में, यहाँ एक शासकीय प्राथमिक विद्यालय के परिसर में ही आँगनवाड़ी केन्द्र स्थापित करने की घोषणा की गई थी। यहाँ की आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री सुनीता सिंह ने अपनी मेहनत व लगन से इसे एक नया रूप-रंग दिया, और बच्चों के सीखने व आनन्द लेने की जगह बनाई। उम्मीद की रोशनी बिखेरते आँगनवाड़ी केन्द्र की यात्रा पर आधारित है यह कहानी।

## बिना छत का स्कूल

इस आँगनवाड़ी केन्द्र की घोषणा तो हुई, कार्यकर्त्री व सहायिका भी आ गईं, लेकिन इसके लिए कोई कमरा नहीं मिला। इसलिए कभी मन्दिर के चबूतरे पर तो कभी खुले आसमान के नीचे बच्चों को पढ़ाया जाता। धूप, बारिश, ठण्ड– हर मौसम में नई चुनौतियाँ थीं। लेकिन एक बड़ी चुनौती थी, आँगनवाड़ी के बारे में समुदाय का संकोच और शंका से भरा रवैया। कार्यकर्त्री सुनीता और सहायिका पार्वती घर-घर जाकर माताओं से बात करतीं, समझातीं कि 3 से 6 साल के बच्चों के लिए आँगनवाड़ी क्यों ज़रूरी है। धीरे-धीरे कई माताएँ अपने नौनिहालों को आँगनवाड़ी भेजने लगीं। बच्चों की संख्या बढ़ी तो 2015 में विद्यालय का एक कमरा आँगनवाड़ी के लिए दे दिया गया। यानी 9 साल की कोशिशों के बाद। कमरा तो पहले भी था, लेकिन बच्चों के लिए तैयार नहीं था। विद्यालय परिसर के एक कोने में स्थित यह कमरा एक बड़े नाले से सटा हुआ था।

चित्र 1 : गतिविधियों में ध्यान से जुटे बच्चे

इसके आस-पास कचरे का ढेर रहता था। स्थिति इतनी ख़राब थी कि बैठने के लिए मुँह पर मास्क लगाना पड़ता था। यही नहीं, रात को असामाजिक तत्त्व आँगनवाड़ी कक्ष के सामने शराब की बोतलें और कचरा फेंक जाते थे। वर्ष 2020 में तो कोविड के कारण शाला-पूर्व शिक्षा का कार्य और भी कठिन हो गया।

नवम्बर 2022 में शाला-पूर्व शिक्षा के लिए प्रशिक्षण हुआ। इस प्रशिक्षण से कार्यकर्त्री और उनकी सहायिका को एक नई ऊर्जा व प्रेरणा मिली। उन्होंने न केवल समुदाय से नियमित बात करनी शुरू की, बल्कि आँगनवाड़ी को भी एक नया रूप दिया। सफ़ेद बोरियों को सिलकर बच्चों के लिए बैठने के लिए चटाइयाँ बनाईं, और दीवारों को अलग-अलग तरह के रंग-बिरंगे चार्ट से सजाया। इनमें कविता-कहानी चार्ट, अक्षर-संख्या और फलों व सब्ज़ियों के चार्ट शामिल थे। केन्द्र का हर कोना बच्चों का स्वागत करने के लिए तैयार किया गया।

## खेल और रचनात्मकता को पंख लगे

हालाँकि अब भी बच्चे केवल भोजन करने आते और घर लौट जाते। लेकिन आँगनवाड़ी के नए स्वरूप को देखकर धीरे-धीरे लोग समझने लगे कि आँगनवाड़ी केवल पोषण का केन्द्र नहीं, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास का एक मंच है। कार्यकर्त्री ने आँगनवाड़ी में कुछ शाला-पूर्व शिक्षा गतिविधियाँ शुरू कीं। मसलन,

- गेंद, रस्सी और ब्लॉक्स से खेलकूद;
- बच्चों के हाथों की छाप बनवाना;
- नाम और उम्र लिखवाना;
- चित्र बनाना और रंग भरना;
- कहानी-कविता सुनना और सुनाना; आदि।

चित्र 2 : खेलते-सीखते बच्चे

चित्र 3 : सब्ज़ियों वाली थीम पर बातचीत

उन्होंने अपने केन्द्र में एक व्यवस्थित समय सारिणी भी बनाई। धीरे-धीरे बच्चे नियमित आने लगे। अब वे सिर्फ़ भोजन करके जाने के बजाय गतिविधियों में भी दिलचस्पी लेने लगे।

## आनन्ददायक शिक्षा की कल्पना

छोटे बच्चों का पहला शैक्षिक अनुभव आनन्ददायक, रचनात्मक और प्रेरणाप्रद होना चाहिए। इस विचार को वास्तविक रूप देने के लिए कार्यकर्त्री ने आँगनवाड़ी केन्द्र में 'सीखने के कोने' तैयार किए। सीखने के ये कोने और इनमें रखी कुछ सामग्रियाँ इस प्रकार थीं–

- **पढ़ने का कोना** : रंग-बिरंगी किताबें, चित्रकथाएँ और कहानी कार्ड।
- **खेलने का कोना** : पज़ल, गिनती के खिलौने और रंगीन ब्लॉक।
- **रचनात्मकता का कोना** : ड्राइंग शीट, क्रेयॉन, मिट्टी और अन्य आर्ट सामग्री।
- **नाटक और अभिनय का कोना** : छोटी-छोटी वेशभूषाएँ, कठपुतलियाँ और मंच की व्यवस्था।
- **संज्ञानात्मक कौशल का कोना** : पैटर्न मैचिंग, रंग पहचान और आकार सीखने की गतिविधियाँ।

इन गतिविधियों के ज़रिए बच्चे खेल-खेल में रंग पहचानना, गिनती करना, चित्र बनाना और कहानी सुनना-सुनाना सीखते हैं। इससे उनका भाषा विकास, तर्कशक्ति, सामाजिक सहभागिता और आत्मविश्वास मज़बूत हुआ है।

## समुदाय की भागीदारी

कार्यकर्त्री ने अभिभावकों के साथ नियमित संवाद शुरू किया। वे उन्हें आँगनवाड़ी में अपने कार्य और अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित करतीं। उदाहरण के लिए, उन्होंने एक सब्ज़ी बेचने वाले अभिभावक से अनुरोध कर एक दिन उनका ठेला आँगनवाड़ी के पास लगवाया। इससे बच्चों को सब्ज़ियों की पहचान, बाज़ार की कार्यप्रणाली और ख़रीद-बिक्री की प्रक्रिया सीखने का मौक़ा मिला। वे समय-समय पर अलग-अलग अभिभावकों से बातचीत कर इस तरह की गतिविधियाँ आयोजित करती रहती हैं। यही नहीं, उन्होंने कुछ माताओं से बात की कि वे आँगनवाड़ी आएँ, और वहाँ आकर बच्चों के साथ गीत, कविता और कहानी का कार्य करें। कई माताओं ने इसमें रुचि दिखाई, और बच्चों के साथ कविता-कहानी सुनने-सुनाने का काम भी किया।

वे अपने आस-पास के युवाओं से सम्पर्क कर समय-समय पर उनके साथ कई गतिविधियाँ आयोजित करती हैं ताकि समुदाय सक्रिय और जुड़ा रह सके। वे उनके साथ मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने, नारियल के खोल का गमले के रूप में उपयोग कर पौधे लगाने जैसे कार्य कर पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने वाले कार्यक्रम कराती हैं। इससे न केवल युवाओं में जागरूकता आती है, बल्कि आँगनवाड़ी के आस-पास की गतिविधियाँ भी सकारात्मक दिशा में बढ़ती हैं। इसी तरह, वृक्षारोपण दिवस, बाल दिवस, स्वतंत्रता दिवस का आयोजन करने में भी वे समुदाय के बड़े बच्चों की मदद लेती हैं।

समुदाय और बच्चों के बीच जुड़ाव को और मज़बूत करने के लिए कार्यकर्त्री ने 'बाल चौपाल' की शुरुआत की। यह सिर्फ़ एक आयोजन नहीं, बल्कि बच्चों के लिए आत्मविश्वास से अपनी बात कहने का मंच था। यहाँ बच्चे कविता सुनाते, छोटे नाटकों में भाग लेते, तथा गीत और कहानियों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता दिखाते। जब अभिभावकों ने अपने बच्चों को मंच पर खड़े होते, पूरे आत्मविश्वास से बोलते देखा, उन्हें आँगनवाड़ी की असली ताक़त का एहसास हुआ।

कार्यकर्त्री द्वारा एक व्हाट्सऐप समूह बनाया गया जिसमें सभी अभिभावकों को जोड़ा गया। इस समूह में वे नियमित तौर पर बच्चों की तस्वीरें, गतिविधियों के वीडियो और उनकी प्रगति साझा करतीं। जब अभिभावकों ने अपने बच्चों को हँसते-खेलते, कविता बोलते और नई चीज़ें सीखते देखा तो उनका भरोसा और मज़बूत हुआ। अब स्थिति यह थी कि अभिभावक ख़ुद

आकर पूछते, "आज मेरे बच्चे ने क्या नया सीखा?" इससे बच्चे समय पर आने लगे, शिक्षा की निरन्तरता बनी रही, और उनकी रुचि में भी कमी नहीं आई।

## साझी मेहनत का परिणाम

आँगनवाड़ी के कार्यों को कार्यकर्त्री व उनकी सहायिका मिलकर करती हैं। उन्होंने अपनी सहायिका की उन सभी गतिविधियों को सीखने में मदद की जो वे बच्चों के साथ करवाती थीं। दोनों ने अपनी ज़िम्मेदारियाँ भी बाँट रखी हैं।

## सहायिका आँगनवाड़ी की व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में अहम भूमिका निभाती हैं।

- डोमेन-आधारित कोने बनाना–झोला पुस्तकालय, कला गतिविधि कोना, रीडिंग कॉर्नर और खेल गतिविधि कोना;
- कंकड़-पत्थर, पत्ते, नीम की निम्बोली, बोतल के ढक्कन और रंगीन बोतलों जैसी स्थानीय वस्तुओं से आकर्षक शिक्षण सामग्री तैयार करना;
- समय-समय पर चार्ट व पोस्टर बदलना, और केन्द्र को बच्चों के लिए ताज़ा और रोचक बनाए रखना;
- मिट्टी के खिलौने बनाने के लिए मिट्टी लाना, छानना, आटे की तरह गूँथकर सुरक्षित रखना;
- गिनती, जोड़-घटाव, ढेर बनाना और वर्गीकरण की गतिविधियों के लिए कंकड़-पत्थर लाना, उन्हें रँगना और बच्चों के लिए तैयार करना; आदि।

## कार्यकर्त्री बच्चों के रचनात्मक विकास के लिए कला गतिविधियाँ कराती हैं।

- धागों को रँगकर उनसे चित्र बनवाना;
- हाथों और सब्ज़ियों के छाप से डिज़ाइन बनाना;
- कविता और चित्र को दुबारा उपयोग लायक़ बनाने के लिए टेक होम राशन बोरियों पर लिखना;
- पुराने कैलेंडर के पीछे के सफ़ेद हिस्से पर कविताएँ लिखकर और सफ़ेद बोरियों को पॉकेट बोर्ड या पोस्टर के रूप में प्रयोग करके उन्होंने कम जगह की चुनौती को दूर किया आदि।

ब्लैकबोर्ड की कमी को सुनीताजी ने काले बैनर से पूरा किया। ये बैनर दरअसल उसी जगह पर चुनाव प्रचार के लिए लगाए गए फ़्लेक्स पोस्टर थे, जिनके पीछे के हिस्से को उन्होंने काले रंग से रँग दिया था, इस तरह फोल्डिंग ब्लैकबोर्ड तैयार हो गया। इसे दीवार पर टाँगा जा सकता है, और ज़रूरत होने पर हटाया भी जा सकता है। पुरानी किताबों के चित्रों से बच्चों के लिए चित्र कार्ड बनाती हैं, और पुराने फ़्लेक्स बैनर पर कहानियाँ लिखती हैं। इनमें बच्चे, बताए गए शब्दों को रेखांकित करते हैं और मिटाकर दोबारा इस्तेमाल करते हैं। लोग जो काँच की बोतलें उनकी आँगनवाड़ी में फेंककर जाते हैं, उनमें वे मनीप्लांट जैसे पौधे लगा देती हैं। कार्यकर्त्री और सहायिका पहले ही तय कर लेती हैं कि अगले दिन कौन-सी गतिविधियाँ होंगी और कौन-सी शिक्षण सामग्री यानी टीएलएम की ज़रूरत होगी। इसी तरह उन्होंने शिक्षण सामग्री जुटाने और उसे सुव्यवस्थित रखने की एक प्रणाली बनाई है ताकि आँगनवाड़ी केन्द्र हमेशा सुसज्जित और व्यवस्थित रहे। यह जीवन्त माहौल न केवल बच्चों को आकर्षित करता है, बल्कि समुदाय की भागीदारी भी बढ़ाता है।

## संवेदनशील मूल्यांकन

कार्यकर्त्री मानती हैं कि बच्चे की प्रगति को केवल रिपोर्ट कार्ड के आँकड़ों से नहीं मापा जा सकता।

वे प्रतिदिन सूक्ष्म निरीक्षण करती हैं, और बच्चों की क्षमताओं को रिकॉर्ड करती हैं। उदाहरण के लिए,

- कौन-सा बच्चा कौन-से रंग पहचान रहा है;
- कौन बिना मदद के कहानी सुना सकता है;
- कौन चित्रों को जोड़कर कुछ नया रच रहा है; आदि।

इन सभी टिप्पणियों और अनुभवों को वे सहेजकर रखती हैं। उनके पास प्रत्येक बच्चे की सीखने की यात्रा से जुड़े विवरणों के दस्तावेज़ हैं।

## सहयोग और मार्गदर्शन

कार्यकर्त्री न केवल अपने आँगनवाड़ी केन्द्र तक सीमित रहती हैं, बल्कि अन्य केन्द्रों की कार्यकर्त्रियों के लिए भी प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत हैं। वे उन्हें टीम की तरह काम करने, अनुभव साझा करने, और केन्द्र को 'बचपन का पहला विद्यालय' नहीं, बल्कि 'बचपन का पहला घर' बनाने की सलाह देती हैं। अब कई कार्यकर्त्री सुनीताजी के पास सुझाव लेने आती हैं, और वे भी समय-समय पर उनके केन्द्र में जाकर उन्हें सहयोग करती हैं।

चित्र 4 : बच्चों के साथ मुखौटों वाली गतिविधि करातीं सुनीता सिंह

### ध्यान देने से बदला माहौल

कार्यकर्त्री का ख़ास गुण है, बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर ध्यान देना। गतिविधियों से दूर रहने वाला हर्ष, आज कार्यकर्त्री के मार्गदर्शन में आत्मविश्वास से भर गया है। अब वह कहानी सुनाता है, और खेलों में उत्साह से भाग लेता है। यह केवल एक बच्चे का नहीं, बल्कि पूरे वातावरण का बदलाव है।

### प्रेरणा की मिसाल

अपने समर्पण, नवाचार और संवेदनशीलता के कारण सुनीता सचमुच एक 'उम्मीद जगाने वाली शिक्षक' बन गई हैं। उनकी कहानी साबित करती है कि यदि दृष्टि और नीयत सही हो तो सीमित संसाधनों में भी बदलाव की एक मिसाल क़ायम की जा सकती है।

---

**निवेदिता तिवारी** विगत 15 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने कविता, कहानी, वैचारिक लेखन और रचनात्मक लेखन में भी योगदान दिया है। वे विगत 4 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में कार्य कर रही हैं। वर्तमान में वे भोपाल में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : nivedita.tiwari@azimpremjifoundation.org

# सत्यम, ज़रा सँभल के!

## समीक्षा : गरिमा गुप्ता

लेखिका : यामिनी विजयन

चित्रकार : विष्णु एम नायर

उम्र : 4 से 8 वर्ष

पृष्ठ संख्या : 21

भाषा : अँग्रेज़ी (48 अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध)

प्रकाशक : प्रथम बुक्स

*सत्यम, ज़रा सँभल के!* बड़ी दिलचस्प कहानी है। इस कहानी का नायक सत्यम असीम ऊर्जा से भरा हुआ है। अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तरह, सत्यम भी एक जगह टिककर नहीं रह सकता। वह अपने आस-पास की दुनिया का पता लगाने के लिए उछलता है, दौड़ता है, रेंगता है, फिसलता है, छलाँग लगाता है, और झूलता है। यह कहानी सरल वाक्यों में कही गई है जो पाठकों के सामने एक मज़ेदार और चंचल विवरण प्रस्तुत करती है।

कहानी की समृद्ध कल्पना और चित्रण ध्यान आकर्षित करते हैं। साथ ही कहानी में आगे क्या होगा, इस बारे में सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। ये चित्रण न केवल नन्हे पाठक की शब्दावली के विकास में सहायक हैं, बल्कि उसे रचनात्मकता और कल्पना की दुनिया में गोते लगाने की भरपूर प्रेरणा भी देते हैं। पाँच वर्ष के बच्चे के जीवन के महज़ एक प्रसंग को प्रस्तुत करने से परे जाते हुए, यह कहानी उस सामान्य अवधारणा को भी कुशलता से बताती चलती है जिसे बच्चे कक्षाओं में अपनी सजग भागीदारी के दौरान सीखते हैं। मसलन, पशु और उनकी गतिविधियाँ। इसके अलावा, लेखिका की लेखन शैली और शब्दों का चयन इस पुस्तक को प्राथमिक कक्षाओं के लिए एक मूल्यवान संसाधन बनाता है, विशेष रूप से क्रिया-शब्दों और उपमाओं को पढ़ाने के लिए।

यह कहानी दर्शाती है कि शारीरिक खेल और जिज्ञासा के जो गुण आमतौर पर बच्चों में शुरुआती वर्षों में देखे जाते हैं, उनके माध्यम से यह पाँच वर्ष का बच्चा, सत्यम कैसे सीखता जाता है। कहानी गति संवेदनों के माध्यम से सीखने के महत्त्व को स्वीकार करती है, और बड़ों को इस बात की याद दिलाती है कि बच्चों का घूमना-फिरना, अपने शरीर और गतिविधियों के साथ प्रयोग करना, आदि उनके विकास के लिए स्वाभाविक और बुनियादी है। यह कहानी बड़ों को याद दिलाती है कि इन वर्षों के दौरान बच्चों की गतिशीलता और खोज करने की प्रवृत्ति को दबाना नहीं चाहिए, बल्कि उन्हें सँजोया और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

यह कहानी बच्चों के लिए इस लिहाज़ से भी अर्थपूर्ण है क्योंकि सत्यम के ज़रिए यह उन्हें स्वयं को देखने के लिए प्रेरित करती है जिसमें उनकी अपनी ऊर्जा, प्रेरणाएँ, आवेग, कल्पनाएँ, आदि शामिल हैं। सत्यम के साथ बच्चों की आत्मीयता इसलिए होती है, क्योंकि कहानी उनकी अपनी स्वतंत्रता, रोमांच और संवेदी अनुभवों की तीव्र इच्छा को मान्यता देती है। कहानी में "वह मकड़ी की तरह झूलता है और लंगूर की तरह उछलता है" जैसे वाक्य और दृष्टान्त मिलते हैं जिनके चलते यह बच्चों के मन में प्राकृतिक दुनिया के प्रति विस्मय की भावना और अपने शरीर में निहित अनन्त सम्भावनाओं के प्रति जिज्ञासा की भावना जगाती है।

यह कहानी बच्चों के जीवन से जुड़े वयस्कों के बारे में भी बात करती है तथा बच्चों की क्रियाओं के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं को भी रेखांकित करती है। सत्यम के जीवन में अप्पा, अक्का, ताता, शिक्षक, अम्मा, आदि जैसे जो बड़े लोग हैं, वे सभी उसके उत्साह पर अलग तरह से प्रतिक्रिया करते हैं। जब घर के बड़े सत्यम को चुपचाप बैठने या कुछ भी न तोड़ने के लिए कहते हैं तो कहीं-न-कहीं यह कहानी उन्हें इस बात की चुनौती देती है कि वे अपनी प्रतिक्रियाओं, और बच्चों को लेकर उनके मन में जो अपेक्षाएँ हैं, उन पर पुनर्विचार करें। इसके अलावा, यह वयस्कों से इस बात का आग्रह भी करती है कि वे बच्चों को हमेशा ठीक करने में न लगे रहें, बल्कि यह बताएँ कि जो वे कर रहे हैं वह उन्हें स्वीकार्य है, और वे उनके साथ मिलकर चीज़ें करें। ऐसा करने से बड़ों को बच्चों के जीवन को समझने का अवसर मिलता है। वे जान पाते हैं कि बच्चों को चलने-फिरने से आनन्द मिलता है, और यदि वे इसके लिए उन पर रोक-टोक लगाते हैं, या उन्हें ग़लत समझते हैं तो बच्चे निराश हो जाते हैं। इस प्रकार यह कहानी इस विचार को तवज्जो देती है कि बड़े, बच्चों के दृष्टिकोण, इच्छाओं और लालसाओं को पहचानें, उनका सम्मान करें और उन पर प्रतिबन्ध लगाने के बजाय करुणा, समर्थन और धैर्य के साथ पेश आएँ। कहानी सिर्फ़ बड़ों का मार्गदर्शन ही नहीं करती, बल्कि उन्हें बताती है कि वे बच्चों को स्वस्थ जोख़िम उठाने के लिए प्रोत्साहित करें। ऐसा करने के लिए माँ (अम्मा) के प्यार भरे, देखभाल भरे जवाबों का हवाला दिया गया है। मसलन, "मज़बूत शाखाओं को पकड़ो, मेरे छोटे बन्दर"; "कीचड़ बहुत चिपचिपा है। सावधान रहो!"; आदि।

यह हमें बच्चों के दुनिया से जुड़ाव के अस्त-व्यस्त तरीक़ों में भी अर्थ तलाशने के लिए प्रोत्साहित करती है। कहानी बच्चों के लिए सुरक्षा और आज़ादी के बीच सन्तुलन बनाने वाले वयस्कों के प्रति समानुभूति पैदा करती है, और इस बात के महत्त्व पर ज़ोर देती है कि हँसने, कहानी सुनाने और साझा पल बिताने से बच्चों के साथ जुड़ाव बनता है।

शिक्षक, इस कहानी के ज़रिए, बच्चों को सत्यम की तरह ही अलग-अलग गतिविधियों में शामिल कर सकते हैं। उनकी शारीरिक क्षमताओं की खोज और विकास करते हुए, उन्हें खेल-खेल में उपयुक्त शब्दावली का उपयोग करके विभिन्न जानवरों की गतिविधियों के बारे में सिखा सकते हैं। इस प्रकार, इस कहानी का उपयोग बच्चों के शारीरिक, भावनात्मक, भाषाई और संज्ञानात्मक विकास को पोषित करते हुए उनके समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है।

*अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।*

**गरिमा गुप्ता** अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु के शिक्षा संकाय की सदस्य हैं। वे शिक्षकों के पेशेवर विकास, समावेशी शिक्षा और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

# रेलगाड़ी चले छुक-छुक

## समीक्षा : कमलेश चन्द्र जोशी

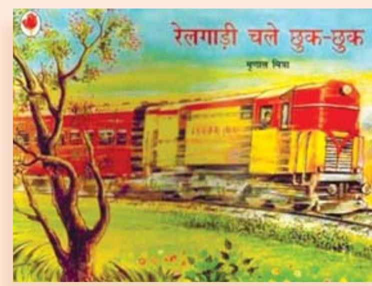

लेखिका : मृणाल मित्रा

उम्र : 4 से 6 वर्ष

पृष्ठ संख्या : 16

भाषा : हिन्दी, अँग्रेज़ी

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली

यात्राएँ हम सबको हमेशा याद रहती हैं। कुछ यादें धुँधली पड़ जाती हैं, कुछ ताज़ा रहती हैं। हम कहाँ गए थे; किस माध्यम से गए थे; किसके साथ गए थे; वहाँ क्या-क्या देखने को मिला था; किससे मिले; क्या ख़ास घटना घटी थी; ये सभी अनुभव हमारी स्मृतियों में रह जाते हैं। और जब हमको मौक़ा मिलता है, ये अनुभव किसी को बताना भी चाहते हैं। छोटे बच्चों के साथ काम करते हुए उन्हें इस तरह के मौक़े मुहैया कराने पड़ते हैं जहाँ वे अपने अनुभव साझा कर सकें। इससे उन्हें अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है और उनका भाषाई विकास भी होता है। बच्चों के लिए छोटी-छोटी चित्रकथाएँ इस तरह के मौक़े ख़ूब प्रदान करती हैं। आवश्यकता होती है बच्चों के लिए सहज व जीवन्त किताबों को तलाश करने की जो उनसे सहज ही जुड़ जाएँ, और उनके अनुभवों को समृद्ध कर सकें।

आँगनवाड़ी केन्द्र में आने वाले बच्चों के सन्दर्भ में एक महत्त्वपूर्ण अपेक्षा यह रहती है कि उनके मौखिक भाषा कौशल का विकास हो। इसके लिए उन्हें बातचीत करने, अपने अनुभवों को व्यक्त करने के मौक़े देने की आवश्यकता होती है। बच्चे अपने मौखिक भाषा विकास के लिए अधिकाधिक अभ्यास कर पाएँ, इसलिए केन्द्र में इसके अवसर बनाने पड़ते हैं। इस काम को करने के लिए चित्रकथाएँ काफ़ी उपयोगी होती हैं, और इनके माध्यम से बच्चों से बातचीत की जा सकती है। चित्रकथाओं की किताबें भी कई तरह की होती हैं। किसी में छोटी कहानी या कविता लिखी होती है, वहीं कुछ में बच्चों के आस-पास के परिवेश की जानकारी होती है। इसके अलावा, कुछ चित्र किताबें ऐसी होती हैं जिनमें केवल चित्र में कही कहानी ही होती है। ऐसी किताबों में सोचने के लिए ज़्यादा खुलापन होता है, और बच्चों के लिए अपने अनुभव जोड़ने के ज़्यादा मौक़े होते हैं। वे अपने अनुभवों से अपनी-अपनी कहानी बना सकते हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित व मृणाल मित्रा द्वारा चित्रांकित किताब *रेलगाड़ी चले छुक-छुक* सिर्फ़ चित्रों में रची गई किताब है। वैसे तो यह बहुत नई किताब नहीं है, लेकिन बच्चों के साथ बातचीत के लिहाज़ से बहुत उपयोगी है। जब हम इसके आगे व पीछे के कवर पेज को पूरा खोल देते हैं तो पूरी किताब खुल जाती है। चित्र में एक लम्बी-सी रेलगाड़ी दिखाई देती है, और किताब पढ़ने वाले को एक चलती हुई रेलगाड़ी का एहसास होता है। चित्र देखने पर पता चलता है कि किताब में एक बच्चे का अपने माता-पिता के साथ यात्रा का अनुभव है। दिए गए चित्रों से ही छोटे बच्चों की रेलगाड़ी से की गई यात्रा के अनुभवों की खिड़कियाँ खुल जाती हैं।

ऐसा अनुभव बच्चों के पास होता है जिसमें उन्हें रोज़मर्रा के जीवन के विभिन्न क्रियाकलापों के चलते अपने माता-पिता के साथ बाहर जाने का मौक़ा मिलता है। यह अलग बात है कि वे रेलगाड़ी से गए हैं या बस से। यहीं प्रयाग शुक्ल की छोटे बच्चों के लिए लिखी कविता 'रेल चली, भई रेल चली' भी याद आ जाती है। किताब पर बातचीत करते हुए उसे भी बच्चों को सुनाया जा सकता है।

जब किताब पढ़ना शुरू करते हैं तो उसमें स्टेशन पर एक बच्चा और उसके माता-पिता दिखाई देते हैं। बच्चों के साथ बातचीत की शुरुआत इस चित्र से की जा सकती है। आगे के चित्रों को बच्चों के मनोभावों के अनुरूप रचा गया है जिनमें बच्चा खिड़की के पास

बैठा हुआ बाहर के दृश्यों को देख रहा है। आम सफ़र में बच्चों की खिड़की के पास बैठने की ज़िद हम सबके अनुभवों का हिस्सा है जो उनकी स्वाभाविक जिज्ञासु प्रवृत्ति को दर्शाती है। उसके सामने एक दादा-दादी भी बैठे हुए हैं। आगे के चित्र में रेलगाड़ी के अन्य यात्रियों, उसके किसी सुरंग से गुज़रने का भी दृश्य है जिसमें थोड़ा अँधियारा भी दिखाई पड़ता है। इन सभी चित्रों पर उनसे अच्छी बातचीत भी की जा सकती है, और उन्हें अपने अनुभवों को जोड़ने को कहा जा सकता है। बातचीत के लिए कुछ प्रश्न ये हो सकते हैं–

यह रेलगाड़ी कहाँ जा रही होगी?

क्या तुम भी कभी रेलगाड़ी में बैठे हो?

कहाँ-कहाँ गए हो?

किसके साथ गए हो?

इस किताब में किसकी कहानी होगी?

खिड़की के पास बैठे बच्चे का क्या नाम होगा?

इस बच्चे की जगह तुम बैठे होते तो क्या करते?

अगले पेज पर चित्र में क्या दिखाई देगा? आदि।

इस बातचीत में बच्चों के अलग-अलग जवाब मिलेंगे जो उनकी अभिव्यक्ति को प्रकट कर रहे होंगे। यह इस किताब की विशेषता है कि इसमें एक बनी-बनाई कहानी निर्मित नहीं होती। बच्चे अपने अनुभवों से अपनी कहानी बता सकते हैं।

आँगनवाड़ी के बच्चों के साथ बातचीत करने के लिए हमेशा कुछ अच्छी किताबों की ज़रूरत होती है। यह एक खरी किताब है, और बच्चों को बातचीत करने के ख़ूब मौक़े दे सकती है। बातचीत के दौरान यह किताब घूमने जाने के ऐसे सभी अनुभवों से जुड़ जाती है। किताब के रंग-बिरंगे चित्र बच्चों से बहुत कुछ बतियाते हैं। चित्रों में प्लेटफ़ॉर्म व डिब्बों के दृश्य, तरह-तरह के लोगों और चीज़ों के हाव-भाव की जीवन्तता देखते ही बनती है। रेलगाड़ी की खिड़की से दिखाई देने वाले दृश्य बच्चों को अपने अनुभव जोड़ने का मौक़ा देते हैं।

यह एक शिक्षक के कौशल का कमाल है कि वह किस तरह इस किताब का प्रस्तुतीकरण बच्चों के साथ करता है, और उनका इससे जुड़ाव बनाता है।

---

**कमलेश चन्द्र जोशी** विगत 30 वर्षों से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के साथ भाषा शिक्षण, विद्यालय पुस्तकालय, शिक्षक प्रशिक्षण, आदि को लेकर गहराई से काम किया है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में कार्यरत हैं।

# आइए, करके देखें

## आओ, पैटर्न बनाएँ

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

**उद्देश्य** : यह गतिविधि आँगनवाड़ी केन्द्र पर आने वाले 3 से 6 साल के बच्चों की याद रखने, और तार्किक ढंग से सोचने-समझने की क्षमता को बढ़ाने में मदद करती है।

**आवश्यक सामग्री** : चार कंकड़, चार पत्तियाँ, चार तीलियाँ, चार मोती

**आयु वर्ग** : 3 से 6 साल के बच्चे

### पहला चरण

आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री / शिक्षिका सभी बच्चों को एक गोले में बैठाएँ, और ख़ुद भी उनके साथ गोल घेरे में बैठें।

बच्चों से कहें, "आज हम कुछ चीज़ों को एक क्रम में रखकर सजाएँगे। पहले एक बार मैं करके दिखाऊँगी, ध्यान से देखना। फिर एक-एक करके इसी क्रम को आप आगे बढ़ाएँगे।"

### दूसरा चरण

कार्यकर्त्री / शिक्षिका बच्चों को दिखाते हुए पहले एक सीधी लाइन में एक कंकड़, एक पत्ती, फिर एक तीली और उसके बाद एक मोती रखकर सजाएँ।

कार्यकर्त्री इसी क्रम को बार-बार दोहराते हुए सारी सामग्री को एक-एक कर रखकर सजाती जाएँ।

बच्चों को लगातार ध्यान से देखने के लिए याद दिलाती रहें।

### तीसरा चरण

कार्यकर्त्री इस पूरी सामग्री को फिर से गोले के बीच में इकट्ठा कर दें।

अब बच्चों को एक नया पैटर्न बनाकर दिखाएँ। जैसे–एक तीली, एक कंकड़, एक पत्ती और एक मोती।

इसके बाद बच्चों को बारी-बारी से मौक़ा दें कि वे दी गई सामग्री में से सही वस्तु को एक-एक कर चुनकर उसी क्रम में रखते हुए पैटर्न को आगे बढ़ाएँ।

इस तरह हर बच्चा एक-एक वस्तु क्रम से रखकर पैटर्न पूरा करता जाए।

**सुझाव** : अगर कोई बच्चा सही पैटर्न नहीं बना पाता है, तब कार्यकर्त्री / शिक्षिका बाक़ी बच्चों से बात कर उनके सहयोग से उस बच्चे की मदद करें ताकि उनमें एक दूसरे के साथ मिलकर सीखने की भावना विकसित हो।

## अधिक संख्या में बच्चों के लिए

चूँकि प्रत्येक पैटर्न के लिए वस्तुएँ केवल चार-चार की संख्या में ही ली गई हैं, इसलिए यदि बच्चों की संख्या अधिक हो तब कार्यकर्त्री पहले बनाए गए पैटर्न की सामग्री इकट्ठी करके उन्हें नए पैटर्न बनाने के लिए उपलब्ध कराएँ।

**सुझाव** : आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री बच्चों की आयु को ध्यान में रखते हुए चीज़ों की संख्या बढ़ा या घटाकर गतिविधि को आसान या कठिन बना सकती हैं। चीज़ों के प्रकार उपलब्धता के आधार पर बदले जा सकते हैं।

*(यह गतिविधि विपिन चौहान द्वारा साझा की गई है। विपिन अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की फ़ील्ड रिसर्च टीम के सदस्य हैं, तथा देहरादून में कार्यरत हैं।)*

## बाज़ार की सैर

**उद्देश्य** : इस गतिविधि से बच्चे वस्तुओं के मूल्य को देखकर समझ पाएँगे कि वह किस मूल्य के नोट का उपयोग करके कौन-सा सामान ख़रीद सकते हैं। इस खेल को बार-बार खेलने से बच्चों की ख़रीदारी करने की समझ भी बनेगी।

**आयु वर्ग** : 4 से 6 साल के बच्चे

**आवश्यक सामग्री** : विभिन्न वस्तुओं के चित्र, विभिन्न मूल्यों के नोट, चार्ट पेपर

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

## गतिविधि से पूर्व की तैयारी

आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री / शिक्षिका एक चार्ट पेपर पर सेब, खिलौना गाड़ी, चॉकलेट, पेंसिल, मोबाइल जैसी बच्चों की परिचित वस्तुओं के चित्र इस तरह लगा लें कि उन्हें आसानी से निकाला जा सके। प्रत्येक वस्तु के नीचे उनके मूल्य के नोट भी लगा दें। मसलन, सेब के नीचे ₹10 का नोट। कार्यकर्त्री ध्यान रखें कि उन्हीं मूल्यों के नोट का उपयोग करें जो वर्तमान में अधिक प्रचलन में हैं। मसलन, ₹10, ₹20, ₹50, ₹100, ₹500। इन्हीं मूल्यों के कुछ नोट गतिविधि कराने के लिए बच्चों के सामने रख दें।

## गतिविधि की शुरुआत

कार्यकर्त्री / शिक्षिका सभी बच्चों को अपने सामने इस तरह बैठाएँ कि प्रत्येक बच्चा उनके द्वारा दिए जा रहे निर्देश और कराई जा रही गतिविधि को आसानी से देख-समझ सके, तथा प्रक्रिया में शामिल हो सके।

वह बच्चों को बताएँ कि आज हम 'बाज़ार की सैर' करेंगे, और अपनी-अपनी पसन्द की वस्तु ख़रीदेंगे। वह उनसे यह भी पूछें कि बताओ, मैंने अभी क्या बात की है। यदि वे नहीं बता पाएँ तब अपनी बात को फिर से दोहराएँ।

कार्यकर्त्री / शिक्षिका वस्तुएँ और उनके मूल्य के नोट प्रदर्शित करने वाले पोस्टर बच्चों को इस तरह से दिखाएँ कि वे वस्तुएँ और उनका मूल्य आसानी से देख सकें।

वह उन्हें बताएँ कि यह एक वस्तु है, और इसके ठीक नीचे उस वस्तु का जितना मूल्य है उस मूल्य का नोट लगा है। यदि आपको वह वस्तु ख़रीदनी है, आप अपने सामने रखे तरह-तरह के मूल्य वाले नोटों में से उस वस्तु के मूल्य वाले नोट को उठाकर मुझे देंगे ताकि मैं वह वस्तु आपको दे सकूँ।

कार्यकर्त्री / शिक्षिका इस प्रक्रिया को एक उदाहरण के साथ भी बताएँ। जैसे—किसी को कार खिलौना ख़रीदना है और उसके ठीक नीचे उसका मूल्य ₹20 लिखा है। अब वह बच्चा अपने सामने रखे नोट में से ₹20 उठाकर खिलौना ख़रीदने के लिए मुझे देगा, और मैं यह खिलौना उसको दे दूँगी।

इस तरह सभी बच्चे अपनी-अपनी पसन्द की वस्तुएँ ख़रीद सकते हैं।

अब कार्यकर्त्री / शिक्षिका एक-एक बच्चे को बुलाएँगी और उससे पूछेंगी कि वह कौन-सी वस्तु ख़रीदना चाहता है। वह बच्चे को उस वस्तु के मूल्य के नोट की ओर इशारा करते हुए उसका मूल्य बताएँगी, और कहेंगी कि वह सामने रखे नोटों में से इस वस्तु के मूल्य के नोट को ढूँढ़कर दे। फिर वे बच्चे की पसन्द की वस्तु उसे दे देंगी।

यदि बच्चा इस प्रक्रिया को समझकर सामने रखे नोट में से सही मूल्य का नोट निकालकर कार्यकर्त्री / शिक्षिका को दे देता है तो उसे वह वस्तु मिल जाएगी।

इस प्रक्रिया को कार्यकर्त्री / शिक्षिका प्रत्येक बच्चे के साथ दोहराएँ। यदि कोई बच्चा इसमें कठिनाई महसूस कर रहा है तो उसके साथ गतिविधि को दुबारा करें। ऐसे बच्चे के साथ गतिविधि कुछ इस तरह से भी हो सकती है कि वह अपने सामने रखे नोटों में से एक नोट उठाएगा, और नोट के मूल्य अनुसार चार्ट में वस्तुओं के मूल्य को देखते हुए समान मूल्य की वस्तु की पहचान करेगा। यदि वह सही पहचान कर पाता है तो उसको वह वस्तु मिल जाएगी। कठिनता महसूस करने वाले बच्चों के लिए यह एक अलग तरीक़ा हो सकता है।

जब सभी बच्चे इस गतिविधि को सहजता से करने लगें तब गतिविधि के स्तर को बढ़ाते हुए वस्तुओं के मूल्यों में परिवर्तन कर यह गतिविधि दोहराई जा सकती है।

## सुझाव

- बच्चों के सामने केवल वही नोट रखे जाएँ जिन मूल्यों की वस्तुएँ सामने चार्ट पर अंकित हों।
- कम मूल्यों के नोट जैसे, ₹10, ₹20, ₹50, ₹100 से गतिविधि की शुरुआत करना अच्छा रहेगा।
- बच्चों को जो निर्देश या प्रक्रिया समझ में न आए, उसे दुबारा समझाया जाए।

*यह गतिविधि रचना शेखर बिंधानि द्वारा साझा की गई है। शेखर वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की रायगढ़, छत्तीसगढ़ टीम में गणित विषय में कार्य कर रहे हैं।)*

## मासिक परीक्षा को मज़ेदार बनाने के तरीक़ों पर समझ बनी

*पाठशाला भीतर और बाहर* के 25वें अंक में प्रकाशित शिक्षक डायरी 'परीक्षाएँ भी मज़ेदार हो सकती हैं' की लेखिका वैशाली गेदम के अनुभव मुझे मेरी कक्षा के अनुभव से जुड़े हुए लगते हैं। डायरी पढ़ने के बाद मैंने अनुभव किया कि बहुकक्षीय / बहुस्तरीय बच्चों को एक साथ कैसे सिखाया जा सकता है। झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रत्येक माह बच्चों के सीखने के स्तर को समझने के लिए राज्य के प्रत्येक विद्यालय में मासिक परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। इस डायरी से मुझे अपने विद्यालय में होने वाली मासिक परीक्षा को मज़ेदार बनाने के तरीक़ों पर समझ बनी।

**कृष्णा सिंह, सहायक शिक्षिका, राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय बिशुनपुर, चैनपुर गुमला, झारखण्ड**

## पत्रिका में बच्चों की पसन्द व उन पर बातचीत वाले लेख शामिल किए जाएँ

*पाठशाला* के अंक 25 में 'शिक्षकों की डायरी से' स्तम्भ में शिक्षकों के बेहतरीन अनुभवों का एक सैलाब-सा आ गया है। इसमें धर्मपाल गंगवार की 'पहेलियों से सीखते विद्यार्थी' काफ़ी उम्दा है। अँग्रेज़ी सीखने का बहुत ही इंटरेस्टिंग व सुव्यवस्थित तरीक़ा दिखाई देता है के जेम्स कुमार द्वारा लिखित डायरी 'वो पल जिसने मेरी कक्षा को बिल्कुल बदल दिया' में। चित्रों से लेकर गीतों के माध्यम से उन्होंने जिस तरह बच्चों को अँग्रेज़ी भाषा सिखाई, वह क़ाबिले तारीफ़ है। सभी लेख सरल तथा व्यावहारिक भाषा और सुव्यवस्थित व सरल शैली में लिखे गए हैं। इससे पढ़ते समय समझ बनाने में कठिनाई महसूस नहीं होती। आगामी अंकों में बच्चों को पसन्द आने वाली किताबों, और बच्चों से बातचीत करने वाली किताबों पर भी लेख शामिल किए जाएँ।

**दीपा तिवारी, सहायक शिक्षिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय शक्तिफार्म नम्बर 3, सितारगंज, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड**

## ज़मीनी स्तर पर चुनौतियों से उबरने में सहायक हैं शिक्षकों की डायरियाँ

अंक 25 की शिक्षक डायरियाँ शिक्षकों के लिए सैद्धान्तिक और व्यावहारिक खाइयों को पाटने में मदद करती हैं। अन्य स्तम्भों की सामग्री से हमें चुनौतियों का प्रतिबद्धता से सामना करने की दृष्टि मिलती है, और ज़मीनी स्तर पर उनसे उबरने में सहायता मिलती है।

'पहेलियों से सीखते विद्यार्थी' लेख में पुस्तकालय पर कार्य करने के दौरान बच्चों के साथ बातचीत करते हुए पहेलियों पर कार्य करना अत्यन्त रोचक है। रटी-रटाई पहेलियों की जगह नई पहेली बनाना बच्चों को रचनात्मकता की ओर अग्रसर करता है। इससे बच्चों के सोचने, तर्क करने, समझने व अर्थ बनाने का दायरा विस्तृत होता है, और उन्हें भरपूर आनन्द मिलता है।

**संगीता गुप्ता, सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय पंडरी, सितारगंज, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड**

## पारम्परिक मान्यताएँ छोड़ें, शिक्षण में नए तरीक़े अपनाएँ

25वें अंक में गौतम पाण्डेय का लेख 'शिक्षा और शिक्षक : ज़मीनी चुनौतियों को समझने की ज़रूरत' शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिए एक बेहतरीन दस्तावेज़ है। मुझे उनका यह सुझाव काफ़ी महत्त्वपूर्ण लगा, जहाँ वे ज़मीनी स्तर पर शिक्षा और उससे जुड़े हुए तमाम पक्षों को बारीक़ी से समझने की बात कर रहे हैं। उनका इशारा कुछ इस तरफ़ भी है कि पारम्परिक मान्यताओं से निकलकर अब हमें नया नज़रिया अपनाने, और ख़ुद में बदलाव करने की आवश्यकता है।

**सोनालिका गराई, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन गुमला, झारखण्ड**

## बातचीत बनी मेरे शिक्षण का ज़रिया

*पाठशाला* के अंक 24 में प्रकाशित अरविन्द कुमार सिंह के लेख 'कक्षा शिक्षण में बातचीत है महत्त्वपूर्ण' के विचारों को स्वयं के कक्षा अनुभवों से जुड़ते हुए पाया है। मेरे लिए बातचीत हमेशा किसी भी सामग्री को सरल बनाने में एक सहयोगी उपकरण रही है, चाहे वह गणित की अमूर्त अवधारणाएँ हों, हिन्दी में मज़ेदार कहानियाँ और दिलचस्प कविताएँ हों, या अँग्रेज़ी जैसी नई भाषा सीखना। बातचीत ने मुझे विद्यार्थियों की कल्पना एवं रचनात्मक कौशल का आकलन करने और कहानी कहने के माध्यम से उस पर काम करने में मदद की है। कई बार कहानियों ने मुझे हिंसा और शरारतों के बारे में बच्चों के साथ बातचीत करने का रास्ता भी सुझाया है।

**अलीशा इस्लाम, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, खरगोन, मध्य प्रदेश**

## ज़रूरी है *मेरा नाम गुलाब है* जैसी रचनाओं पर विद्यार्थियों से चर्चा करना

अंक 24 में *मेरा नाम गुलाब है* पुस्तक की ध्रुव देसाई द्वारा लिखित समीक्षा पढ़ते वक़्त समझ में आता है कि हमारे देश के सामाजिक ताने-बाने की गहरी जड़ें जो भेदभाव पर आधारित रही हैं, आज भी हर जगह अपने बदले रूप में दिखाई पड़ती हैं। समीक्षक ने यह भी स्पष्ट किया है कि लेखक कोई जादुई उत्तम समाधान की पेशकश नहीं करते हैं, बल्कि वे इस पुस्तक की पात्र गुलाब तथा उसके पिता की स्थिति के माध्यम से यह उजागर करते हैं कि हमारे समाज में आज भी ऐसे लोग बहुतायत में हैं जो भेदभाव के अन्तर्गत होने वाले उन कृत्यों को नकार देते हैं जो संवैधानिक अधिकारों के ख़िलाफ़ हैं, और मानवीय दृष्टिकोण से भी निन्दनीय हैं। आशा करता हूँ *मेरा नाम गुलाब* है जैसी रचना हमारे समाज के लोगों को इस दिशा में सोचने के लिए झकझोरेगी, और आने वाले दिनों में हम कोई उत्तम समाधान की तरफ़ बढ़ रहे होंगे।

**प्रवीण कुमार मधु, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन सेगाँव, खरगोन, मध्य प्रदेश**

## बच्चों को प्यार से सिखाएँ, डर और मार से कभी नहीं

*पाठशाला* के 24वें अंक में किशन लाल सालवी का लेख 'डर से बाधित होता है सीखना' दर्शाता है कि जब बच्चे डरे हुए होते हैं, उनके साथ कक्षागत काम के न तो परिणाम बहुत अच्छे होते हैं, न ही रिश्ते।

लेख पढ़कर बच्चों के साथ शुरुआती दिनों की यादें ताज़ा हो गईं। जब मैं विद्यालय पहुँची तब यहाँ के बच्चों में काफ़ी डर था। एकदम गुमसुम बैठे रहना, न कुछ पूछना न ही कुछ बताना। धीरे-धीरे बच्चों से बातचीत करनी शुरू की, उनके साथ नीचे बैठकर खेल और गतिविधियों की शुरुआत की। बाल साहित्य की किताबों से कहानियाँ पढ़ाना शुरू किया। इससे बच्चों में डर ख़त्म हुआ। सच कहूँ तो जो बातें बच्चों को प्यार से सिखाई जा सकती हैं वह डर और मार से कभी नहीं सिखाई जा सकतीं।

**अंतिमा वासकले, प्राथमिक शिक्षिका, एकीकृत गर्ल्स स्कूल गोगावाँ, खरगोन, मध्य प्रदेश**

## बेहतर है पढ़ने–पढ़ाने, सीखने–सिखाने का प्रशिक्षण मॉडल

पत्रिका के 25वें अंक में प्रकाशित अनुराग बेहार के आलेख 'शिक्षकों के विकास में सहयोग ही उनका सम्मान है' पूरी तरह हमारे ऊधम सिंह नगर के सृजन समूह की कार्य पद्धति की पैरवी करता है। समूह के सदस्य पढ़ते हैं, अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं को साझा करते हैं, साप्ताहिक चर्चा में प्रतिभाग करते हैं, एक दूसरे के शिक्षण से सीखते हैं, समालोचनात्मक टिप्पणी करते हैं, और परस्पर सहयोग से पेशेवर विकास के लिए स्वैच्छिक रूप से तत्पर हैं।

लेख में, लेखक शिक्षण प्रक्रियाओं को शिक्षकों के छोटे समूहों में साझा करने और उन पर निरन्तर चर्चा व एक दूसरे का सहयोग करके शिक्षण कौशल के क्षमता संवर्धन की पैरवी करते हैं। यह सम्भव है, क्योंकि सृजन समूह के शिक्षक अपने साथियों से सीखते हैं, एक दूसरे का अकादमिक सहयोग करते हैं, और शिक्षण कौशल क्षमता संवर्धन के लिए निरन्तर चिन्तन करते हैं।

लेखक का यह मानना, कि शिक्षा विभाग की ओर से आयोजित सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षकों के पेशेवर विकास और उनके रिफ़्लेक्टिव टीचर बनने के लिए नाकाफ़ी होते हैं, बिल्कुल ठीक है। शिक्षक होने के नाते मुझे पता है कि शिक्षक इसे न तो गम्भीरता से लेते हैं न ही बताए गए तरीक़े से शिक्षण करते हैं। इसलिए शिक्षक सेवा में आने के बाद पढ़ने-पढ़ाने, सीखने-सिखाने का मॉडल उचित प्रतीत होता है।

**धर्मपाल गंगवार, प्रधानाध्यापक, राप्रावि हल्दी पचपेड़ा, खटीमा, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड**

## शिक्षकों के लिए संजीवनी है यह लेख

अनुराग बेहार अपने लेख में कहते हैं कि शिक्षकों की क्षमताओं का संवर्धन लगातार होना चाहिए। जिस प्रकार एक अंगारे के ऊपर जब राख जमा हो जाती है, उस पर फूँक लगाकर उसकी अग्नि को वापस प्रज्वलित किया जाता है ताकि उससे फिर से ऊष्मा प्राप्त हो सके, उसी प्रकार शिक्षकों के प्रशिक्षण बहुत तैयारी व सावधानी से आयोजित करवाने चाहिए जिनसे उनकी क्षमताओं में निखार आ सके, क्षमता संवर्धन हो सके, और उनकी विद्वता व ज्ञान का फ़ायदा विद्यार्थियों को मिल सके। यह लेख सही मायने में शिक्षकों के लिए एक संजीवनी का काम कर सकता है, और शिक्षा जगत को एक नई राह दिखा सकता है।

**राजेन्द्र कुमार कुमावत, वरिष्ठ शिक्षक, राजकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आमेट, राजसमंद, राजस्थान**

## शिक्षकों के विकास में सहयोग ही उनका असली सम्मान है

अनुराग बेहार के लेख की यह पंक्ति भी बहुत अच्छी लगी कि "शिक्षक तब गर्व महसूस करता है जब वह किसी संघर्षरत बच्चे को अवधारणा समझते हुए देखता है"। सच कहूँ तो ऐसे पल हर शिक्षक के जीवन के सबसे सुकून भरे पल होते हैं। जब कोई बच्चा कहता है "अब मुझे समझ में आ गया", तो लगता है सारी मेहनत सफल हुई। जब शिक्षक महसूस करता है कि उसकी कक्षा में बच्चे रुचि से सीख रहे हैं, यही पल उसे उसके पेशे से जोड़े रखता है। यह बात मुझे बहुत मानवीय और सच्ची लगी।

संवेदनशील, जिज्ञासु और सोचने-समझने वाला समाज बनाने के लिए हमें अपने शिक्षकों को भी लगातार सीखने और विकसित होने के अवसर देने होंगे, तभी वे अपने काम में सन्तुष्टि और सम्मान महसूस कर पाएँगे।

**प्रकाश मिनेरिया, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, राजसमंद, राजस्थान**

## कहानियों से बच्चे स्पष्टता से अपनी बात कहने का हुनर पाते हैं

एस कविता की डायरी 'कहानियों के ज़रिए प्रभावी होता है शिक्षण' में सुझाई गई प्रक्रियाओं से बच्चों में न केवल व्यावहारिकता और कल्पनाशीलता का विकास हो रहा है, बल्कि वे दूसरों के मनोभावों को जानना तथा अपने विचारों को स्पष्ट करना भी सीख रहे हैं।

मुझे भी लगता है कि कहानियाँ बच्चों के सीखने का एक बेहतर माध्यम हैं क्योंकि वे भाषा विकास, रचनात्मकता और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देती हैं। कहानियों के माध्यम से बच्चे नई शब्दावली, सहानुभूति व सही-ग़लत के बीच अन्तर करना सीखते हैं, तथा उनमें कल्पनाशीलता का विकास होता है। डायरी में व्यक्त विचारों के बारे में एक सुझाव है कि कहानी सुनाने के साथ-साथ यदि बच्चों को उनके विचारों को लिखकर व्यक्त करने के लिए कहा जाए तो उनमें सृजनात्मक लेखन और भाषा विकास और बेहतर हो सकेगा।

**पूजा जैन, शिक्षिका, प्राथमिक शाला सिद्धन बाबा टोला, पटेरा, दमोह, मध्य प्रदेश**

## इबारती सवालों को संक्रियाओं में बदलने की समस्या को सुलझाता लेख

अंक 25 में संध्या सिंह की डायरी 'कक्षा में गणितीय बातचीत' गणित विषय को रुचिकर बनाने में मदद करती है। यह समस्या अधिकांश बच्चों की है कि वे इबारती सवालों को संक्रियाओं में नहीं बदल पाते। इसमें इसी समस्या को दूर किया गया है। शिक्षिका बताती हैं कि उन्होंने बच्चों के डर को भगाने के लिए उन्हें बेझिझक बोलने की आज़ादी दी, एक ही सवाल को अलग-अलग बच्चों से हल करवाया ताकि वे एक से अधिक तरीक़ों से अवगत हो पाएँ। सवाल के उत्तरों पर सभी की सहमति व असहमति पर तर्कसंगत बातचीत की गई। यह डायरी उन सभी शिक्षकों के लिए मददगार साबित होगी जो कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत को महत्त्व नहीं देते।

**सत्यप्रकाश प्रधान, शिक्षक, शासकीय माध्यमिक शाला कोलियारी, धमतरी, छत्तीसगढ़**

## बच्चों को विद्यालय और घर में मतभेदों का सम्मान करना सिखाएँ

'बन्धुता की शिक्षा' में लेखक अमन मदान ने बड़ी ख़ूबसूरती से यह बताने की कोशिश की है कि हमारे आस-पास के लोगों से हममें जो छोटे-छोटे पूर्वाग्रह बन जाते हैं, उनका हम पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। बचपन के शुरुआती वर्षों में भोजन, आदतों, धर्म, लिंग और जाति के आधार पर हम दूसरे लोगों के बारे में जो भी धारणा बनाते हैं, वह हमारे मन में गहराई से पैठ जाती है। परिणामस्वरूप वह हमारे व्यवहार में झलकती है, और हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाती है। इसलिए इन पूर्वाग्रहों से बचने के लिए, बच्चों को विद्यालय और घर में इन मतभेदों का सम्मान करना सिखाया चाहिए।

**अंतरा गुप्ता, एसोसिएट रिसोर्स पर्सन, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, कुरुद, धमतरी, छत्तीसगढ़**

## अपनी कक्षा को प्रिंट-रिच बनाने के नए तरीक़े खोजूँगी

लेखिका सीमा अरोड़ा ने पाया कि 'प्रिंट-रिच कक्षा' एक विशेष शिक्षण पद्धति है। इसके लिए कक्षा में कई चार्ट, नए शब्द और कहानियाँ लगाने से विद्यार्थियों को सीखने में बहुत मदद मिली। उन्होंने बहुत तेज़ी से पढ़ना-लिखना सीखा, और सीखने पर ख़ुशी महसूस की। यहाँ तक कि उन्होंने ख़ुद पढ़ने और लिखने में भी रुचि दिखाई। यह मेरी अपनी कक्षा अनुभव से भी मेल खाता है। डायरी से मुझे यह समझने में मदद मिली कि विद्यार्थियों का आत्मविश्वास कैसे बढ़ाया जाए, और एक सुन्दर प्रिंट-रिच कक्षा कैसे बनाई जाए। मैं अपनी कक्षा को भी प्रिंट-रिच बनाने के कुछ नए तरीक़े खोजने की कोशिश करूँगी।

**शताब्दी सेकिआ, एसोसिएट रिसोर्स पर्सन, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन कुरुद, धमतरी, छत्तीसगढ़**

## *पाठशाला* शिक्षा के क्षेत्र में एक उपयोगी संसाधन बन गई है

गुरबचन सिंह द्वारा लिखा गया '*पाठशाला भीतर और बाहर* पत्रिका के 25 अंकों का सफ़र' लेख पत्रिका की पिछले 7 सालों की यात्रा को दर्शाता है। इसमें बताया गया है कि किस प्रकार पत्रिका ने शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी हित में अपने लेख के विभिन्न आयामों में आमूलचूल परिवर्तन किया, और इस नए कलेवर तक पहुँची।

*पाठशाला* ने शिक्षण को रोचक और प्रभावी बनाने तथा शिक्षकों के प्रोफ़ेशनल विकास में सहायता करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिससे यह शिक्षा के क्षेत्र में एक उपयोगी संसाधन बन गई है।

**देवेंद्र सिंह, सहायक शिक्षक, उच्च प्राथमिक विद्यालय सबदलपुर, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश**

# लेखकों के लिए

1. लेख वर्ड फ़ाइल में ही भेजें जिसमें कोई डिज़ाइन, बॉर्डर, बॉक्स, आदि न हों। लेख पीडीएफ़ में न भेजें।
2. लेख से सम्बन्धित तस्वीरें या कोई अन्य विज़ुअल अच्छी क्वालिटी का हो, और उसे वर्ड फ़ाइल में लगाकर भेजने की बजाय अलग से अटैच करके भेजें। तस्वीर को image 1, image 2 के नाम से सेव करके भेजें, और लेख में लिख दें कि कहाँ पर आपको लगता है कौन-सी तस्वीर लगनी चाहिए। हालाँकि, इस बारे में अन्तिम निर्णय सम्पादकीय टीम का होगा।
3. तस्वीर का सोर्स ज़रूर बताएँ। कॉपीराइट का ध्यान रखें कि तस्वीर या तो कॉपीराइट फ़्री हो, या जहाँ से ली गई है वहाँ से अनुमति ली गई हो, या आभार व्यक्त किया गया हो। अगर तस्वीर आपने ख़ुद ली है तो वह भी बताएँ, और तस्वीर लेते समय, विद्यालय या कक्षा से इजाज़त ज़रूर लें।
4. विद्यार्थियों की तस्वीरें बिल्कुल न लें, ख़ासकर ऐसी तस्वीरें जिनमें उनका चेहरा स्पष्ट हो।
5. लेख में जब भी किसी किताब का अंश, लेख का अंश, किसी लेखक के उद्धरण (quote) इस्तेमाल में लाएँ, कृपया उनका उल्लेख ज़रूर करें, और क्रेडिट दें।
6. अपने लेख के साथ अपना संक्षिप्त परिचय, एक फ़ोटो जिसमें आपका चेहरा सामने से स्पष्ट और क्लोज़ हो, मोबाइल नम्बर, पूरा पता, और ईमेल आईडी भी दें।
7. जो भी लेख आप *पाठशाला* के लिए भेज रहे हैं, यह बहुत ज़रूरी है कि उसे न तो कहीं और भेजा गया हो न ही सोशल मीडिया पर साझा किया गया हो।
8. लेख मिलने पर आपको लेख के मिलने की सूचना तुरन्त दी जाएगी, और 30 दिन के अन्दर लेख की स्वीकृति या अस्वीकृति, या उसमें सुधार के सम्बन्ध में सूचना प्रेषित की जाएगी।
9. पत्रिका में लेखों की तीन श्रेणियाँ हैं। पहली श्रेणी में लेख 2000 शब्दों का, दूसरी में 1500 शब्दों, और तीसरी श्रेणी में यह 700 से 1000 शब्दों का होगा।
10. सम्पादकीय टीम को लेख में सम्पादन का अधिकार होगा। ज़रूरी सम्पादन के बाद आपको लेख भेजा जाएगा।
11. *पाठशाला* अब हिन्दी के अतिरिक्त अँग्रेज़ी और कन्नड़ में भी प्रकाशित होगी। माने, आप तीनों में से किसी भी भाषा में लेख भेज सकते हैं। लेख भेजने का आईडी है : pathshala@apu.edu.in
12. आपने जिस भी मौलिक भाषा में लेख भेजा है, अनुवाद होकर तीनों भाषाओं में प्रकाशित होगा। इसका अधिकार सम्पादकीय टीम को होगा।

किसी भी तरह की अन्य जानकारी के लिए आप सम्पर्क कर सकते हैं–
प्रतिभा (हिन्दी) : pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org
शेफ़ाली (अँग्रेज़ी) : shefali.mehta@apu.edu.in
राघवेंद्र हेर्ले (कन्नड़) : Raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की ओर से रजिस्ट्रार ऋषिकेश बी एस द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे गाँव, बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक-562125। लक्ष्मी मुद्रणालय, क्रमांक 117, 5वीं मुख्य सड़क, चामराजपेट, बेंगलूरु, कर्नाटक-560018 द्वारा मुद्रित।

**मुख्य सम्पादक : प्रतिभा कटियार**

Azim Premji University

# Anuvada Sampada

# अनुवाद सम्पदा

## अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की अनुवाद रिपॉजेटरी

विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षणिक संसाधनों का भण्डार।

**नि:शुल्क, ओपन-एक्सेस पोर्टल**

- पुस्तकें और पुस्तकों के अंश
- अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी प्रकाशनों के लेख
- विभिन्न स्रोतों से चयनित लेख

अनुवाद सम्पदा पर आएँ

https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/

यहाँ स्कैन करे

# अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की पत्रिकाएँ

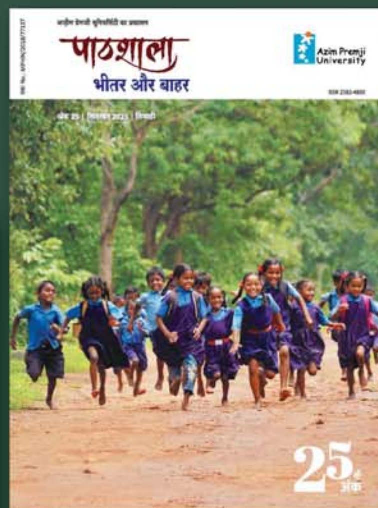

पाठशाला की निःशुल्क सदस्यता
के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

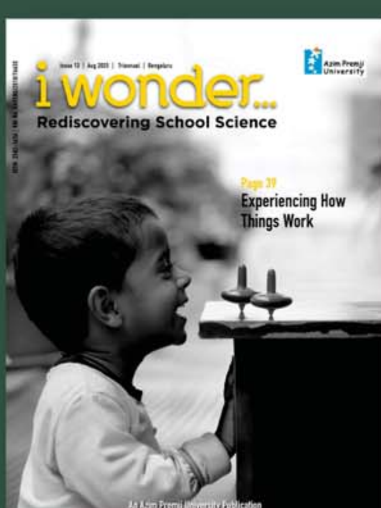

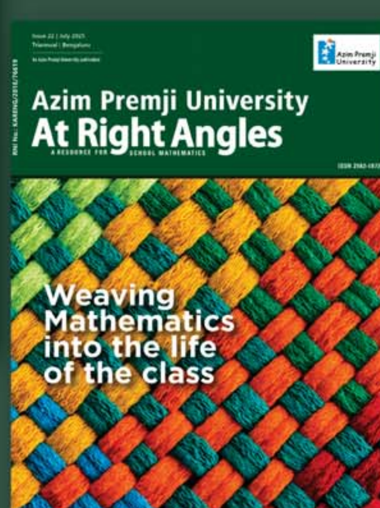


अन्य प्रकाशनों के बारे में अधिक जानने के लिए हमें लिखें - publications@apu.edu.in